सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

संस्थापक संपादकः कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

वर्ष : 33 अंक : 3 | जनवरी-मार्च 2020 | 40 रुपये

विवाह योग्य युवक-युवतियों का विवरण पृष्ठ 39 से

SKYLINE SCHOOL

A DAY BOARDING PLAY SCHOOL

A Home away from Home

- Play Group to Nursery Grade
- English Medium
- Door to Door Pick and Drop
- Well Trained Teachers
- Swimming Pool, Play Area, Rides

NS-24, Block-G, Delta 1st Greater Noida
Phone: 0120-2321746, Mobile: 8130557885

भारतमित्र

BHARATMITRA

Premier Hindi Daily

L.S. Publication Pvt. Ltd.

32, Metcalfe Street, Kolkata-700013
Tel.: 22361572, 2119429, Mob.: 9830012330
Telefax: 033-22151533
Email: bharatmitra1@yahoo.com

tewari brothers

Desi Ghee Sweets & Namkeens

862, Chandni Chowk, Delhi-110006
Tel.: 23918326, 23927690, 23956846
Fax : +91-11-23947743

73, M.M. Market, Connaught Circus, New Delhi-110001
Tel.: 23413313, 23411764, 23411765

Branches :
• KOLKATA • MUMBAI • DELHI • BANGALORE • HYDERABAD • KANPUR
E-mail : ravitewari6@gmail.com visit us at : www.tewaribrother.com

‘आ नो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वतः’ ऋग्वेद 1-89-1

संस्थापक संपादक
कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

●

प्रबंध संपादक
विष्णु कुमार पाण्डेय
3/19 सेक्टर-जे, जानकीपुरम लखनऊ-21
9450362385

●

संपादक
आशुतोष पाण्डेय
264 सेक्टर 3, फरीदाबाद 121004 हरियाणा
9312020932

●

प्रतिनिधि
रविकांत तिवारी (97-176-76003)
तिवारी ब्रदर्स, चांदनी चौक दिल्ली-6
प्रताप शुक्ल (लखनऊ) 9335912667
अजय (कानपुर) 8953182491
संदीप (कानपुर) 7054098204
मनीषा (नोएडा) 9310111069

●

विधि सलाहकार
सांकृत अजीत शुक्ल एडवोकेट
9415474584

संरक्षक.......................................	रूपये11000.00
विशिष्ट.......................................	रूपये 5100.00
आजीवन.....................................	रूपये 2100.00
पत्रिका प्रसार सहयोग (5 वर्ष हेतु)......	रूपये 500.00

पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है स्पीड पोस्ट/कोरियर से पत्रिका मंगाने हेतु तथा विदेशों के लिए वास्तविक डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से प्रकाशक व संपादक की सहमति आवश्यक नहीं। न्यायायिक मामलों हेतु कानपुर न्यायालय क्षेत्र ही मान्य होगा।

सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

वर्ष 33, अंक 3,जनवरी-मार्च 2020

इस अंक में विशेष

संपादकीय	3
अपनी बात	5
मेरी दृष्टि में	7
ब्रह्म जानाति इति ब्राह्मणः	8
समाज हमारी जीवन रेखा है	9
विश्व संस्कृति को बिहार की देन	10
संस्कृत और संस्कृति	12
कान्यकुब्ज क्षेत्रः बैसवारा	13
प्रकृति का संदेश - मकर संक्रांति	14
कन्नौज का गौरी शंकर मंदिर	15
अशोक शास्त्री की कवितायें	16
परिचय	17
रेखाचित्र - कवि जी	21
महादेव शिव	23
चैत चित्त, मन महुआ (ललित निबंध)	24
आज भी प्रासंगिक हैं विवेकानन्द	27
गुनगुनाती धूप से विटामिन डी	30
संस्मरण - महाप्राण निराला	33
वैवाहिक विवरण - युवा वर्ग	39
युवती वर्ग	45
अलाव का समाजशास्त्र	50
श्रद्धांजलि	51
एवं अन्य स्थाई स्तम्भ	

पत्रिका मंगाने हेतु तथा समस्त पत्र व्यवहार के लिए
प्रबन्ध संपादक

कान्यकुब्ज मंच कार्यालय

20बी, किदवई नगर, कानपुर-208011
मो. 9450362385 (समयः सायं 7-9 तक)
ईमेलः kkmanch@gmail.com
www.kanyakubjmanch.com

Graphic Designer: Suresh Kataria

हमारे संरक्षक

कानपुर : पं. प्रेम नारायण तिवारी, तिवारी ब्रदर्स, पं. लक्ष्मी नारायण शुक्ल, पं. प्रेम कुमार पाण्डेय, पं. शरद मिश्र, डॉ वाई एन शुक्ल, श्रीमती सरिता-अनूप द्विवेदी, पं. प्रेम नारायण मिश्र, पं. संजीव दीक्षित, पं. राम प्रकाश मिश्र, पं. जगत नारायण शुक्ल, श्रीमती मधु-सौरभ अवस्थी। **लखनऊ** : पं. अमरनाथ मिश्र, पं. सर्वेश वाजपेयी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, पं. त्रिवेणी प्रसाद दुबे। **प्रयागराज** : पं. विजय कुमार तिवारी। **कन्नौज** : पं. गोपालजी मिश्र। **वाराणसी** : पं. देव नारायण पाण्डेय। **गाजियाबाद** : पं. वी एन अग्निहोत्री। **नोएडा** : पं. रविन्द्र शेखर शुक्ल, कैप्टन संजीव वाजपेयी, पं. प्रशांत तिवारी। **दिल्ली** : पं. रामकृष्ण त्रिवेदी, पं. प्रकाश तिवारी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, श्रीमती शोभा मिश्रा। **मुम्बई** : पं. ब्रजेन्द्र कुमार मिश्र। **फरीदाबाद** : डॉ पारस नाथ दुबे, डॉ देव राज चौबे, पं. जगदीश चंद्र द्विवेदी। **कोलकाता** : पं. राजेन्द्र नारायण वाजपेयी, पं. काशीनाथ पाण्डेय, पं. लक्ष्मीकांत तिवारी, पं. ऋषि शंकर पाण्डेय, पं. अश्विनी कुमार अवस्थी, पं. रामकृष्ण त्रिवेदी (आईपीएस)। **पुरुलिया** : पं. महादेव मिश्र। **अहमदाबाद** : पं. ओमप्रकाश दीक्षित। **छत्तीसगढ़** : पं. के एस शुक्ल। **तमिलनाडु** : श्रीमती लक्ष्मी प्रभा। **विदेश** : पं. वीरेंद्र कुमार तिवारी (यूके)।

इस सूची में आपका नाम भी जुड़ने की प्रतीक्षा है।

हमारे विशिष्ट

कानपुर : पं. आर एस मिश्र, पं. उमेश कुमार पाण्डेय, पं. ओम प्रकाश मिश्र, पं. कृष्णस्वरूप मिश्र (राजा), पं. मंजुल मिश्र, वैद्य राजेश कुमार पाण्डेय, पं. राजेश कुमार दीक्षित (एडवोकेट), प्रो सुरेंद्र कुमार त्रिपाठी, पं. आदित्य कुमार शुक्ल, पं. ब्रजेश अवस्थी, पं. प्रभात मिश्र, पं. कमलेश कुमार शुक्ल (मुचकुंद)। **लखनऊ** : पं. श्रीकृष्ण तिवारी, सांकृत प्रताप शुक्ल, पं. कृष्ण कुमार शुक्ल, डॉ विनोद बिहारी दीक्षित, पं. दिनेश चंद्र मिश्र, पं. प्रदीप शुक्ल, पं. पंकज तिवारी, पं. अजेय शंकर तिवारी, डॉ के के त्रिपाठी, कर्नल पं. धर्मदेव तिवारी, डॉ मृदुला मिश्रा, पं. योगेश चंद्र मिश्र, पं. सुनील कुमार शुक्ल, डॉ मंजू शुक्ला, पं. जी पी द्विवेदी, पं. कृष्ण कुमार मिश्र, पं. देवेंद्र नाथ मिश्र, पं. कमल वाजपेयी, पं. देवानन्द वाजपेयी, पं. विनीत वाजपेयी, पं. गिरीश चंद्र शुक्ल, डॉ गणेश चन्द्र मिश्र, पं. जय शंकर द्विवेदी, पं. राजेश कुमार मिश्र, पं. दीपक कुमार मिश्र। **प्रयागराज** : श्रीमती सुधा अवस्थी (एडवोकेट)। **गाजियाबाद** : पं. श्याम वाजपेयी, पं. निरंजन चन्द्र मिश्र। **बरेली** : पं. एस पी पाण्डेय। **झांसी** : पं. विष्णु शुक्ल। **नोएडा** : पं. शरद त्रिवेदी। **दिल्ली** : वैद्य अशोक कुमार मिश्र, पं. रामेश्वर दयाल दीक्षित, पं. राकेश मिश्र, पं. विक्रम तिवारी, डॉ रघुनंदन प्रसाद तिवारी, वाइस एडमिरल पं. जगतनारायण शुक्ल, पं. विनोद त्रिपाठी, पं. सलिल दीक्षित, डॉ महादेव प्रसाद पाठक, पं. रामदास तिवारी, पं. रविशंकर तिवारी, पं. अनुराग मिश्र, पं. अमरेंद्र तिवारी, पं. विनोद कुमार अग्निहोत्री, श्रीमती मधु-पवन शुक्ला। **कोलकाता** : पं. हरीश मिश्र, पं. गणेश शंकर तिवारी, पं. कुलदीप दीक्षित, पं. सुशील कुमार शुक्ल, पं. शिव किशोर मिश्र, पं. मुकुतेश्वर तिवारी, डॉ हरि शंकर पाठक। **सतना** : पं. उमेश कुमार त्रिपाठी। **भोपाल** : पं. कैलाश नाथ मिश्र। **होशंगाबाद** : डॉ विभावसु दुबे। **फरीदाबाद** : पं. राजेश द्विवेदी, पं. कृष्णबिहारी दुबे, पं. अंजनी कुमार दुबे, डॉ सुरेश पचौरी। **विदेश** : पं. सिद्धार्थ मिश्र (कैलिफोर्निया)

असतो मा सद्गमय • तमसो मा ज्योतिर्गमय • मृत्वोर्मा अमृत गमय

अंधकार में ज्योति की उपासना दीपावली का मूल स्रोत है

-शुभ कामनाओं सहित -

त्रिवेदी एण्ड कम्पनी

पोस्ट बॉक्स नं. 1411, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

फोन-23965712, 23973045

क्या यही विकास है

'सकल घरेलू उत्पाद', 'प्रति व्यक्ति आय', 'प्रति व्यक्ति उपभोग' जैसे आंकड़ों तथा 'गरीबी रेखा' के ऊपर–नीचे की संख्या के आधार पर विकास के पैमाने को सीमित करना कहाँ तक उचित है? वैश्विक स्तर पर 'खुशहाली सूचकांक' में हमारे देश का ग्राफ साल–दर–साल नीचे खिसकता जा रहा है और हमारे सारे प्रयास दुनिया की अर्थव्यवस्था में सीढ़ी–दर–सीढ़ी ऊपर चढ़ने की तरफ केंद्रित हैं। यह आर्थिक विकास भले ही हो, सम्यक विकास नहीं कहा जा सकता। गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य की परिकल्पना में दैहिक, दैविक, भौतिक ताप की बात कही है। जीवन को सुखमय बनाने के लिए भौतिक वस्तुओं को जुटाना और उपभोग करना पुरुषार्थ है। सभी सन्यासी नहीं हो सकते। वरना दुनिया का विकास क्रम ही अवरुद्ध हो जाएगा। सांसारिक जीवन में अर्थ की महत्ता है। लेकिन उसे पुरुषार्थ चतुष्टय 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष' के समन्वय के साथ मर्यादित किया गया है। समन्वय के अभाव में अर्थ शक्ति अपना विकृत रूप दिखा रही है। वरना क्या कारण है कि सामाजिक सौहार्द्रता, सामुदायिकता, पर्यावरण, नैतिकता, मानवता अपने निर्लज्ज–नग्न रूप में सामने है। परिवार की परिभाषा बदल चुकी है। रिश्ते–नातों की ऊष्मा ठंडी पड़ती जा रही है। रक्तमज्जावसामान्स्यास्थि के सम्बन्धों में भी लाभ–हानि का गणित घर बना चुका है। यहाँ तक कि व्यक्ति के अंतर्मन में भी द्वंद है। वह भी आत्मा की बात नहीं करता।

खुशहाल जीवन का प्रश्न आत्मपरक है या वस्तुपरक? इसका सम्बन्ध मनुष्य की मूलभूत आवश्यकतओं से है या मानसिक–आध्यात्मिक आवश्यकताओं से भी? खुशहाल जीवन की अवधारणा का सम्बंध महज आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों से ही है या नैतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों से भी? शायद हम जीवन को समझना ही भूल गए हैं। हमारी सारी दैनिक क्रियायें, गतिविधियां, बौद्धिकता, परिश्रम सुखी होने के लिए कम, सुखी दिखने के लिए ज्यादा हैं। व्यक्ति अंदर से टूटता जा रहा है। परिवारों में महाभारत है। जबकि बाह्य आडम्बर में हम सुखी दिखना चाहते हैं।

21वीं सदी के आते ही बाजारवाद और आर्थिक उदारीकरण का ऐसा चक्र चला कि व्यक्ति का, परिवार का, समाज का मूल स्वरूप ही विकृत होता जा रहा है। आज जितना विस्तार व्यक्ति की आकांक्षाओं का हुआ है, उतना ही संकुचन उसकी मानसिकता का भी। संस्कृति–सम्वेदना इत्यादि से लोगों का सरोकार बहुत नहीं रह गया। हर चीज को हासिल कर लेने की महत्वाकांक्षा आत्मकेंद्रित और व्यष्टिपरक है। विदेशी समाजों की वैचारिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक व्यवहार की नकल करके हमने अपनी चिंतन क्षमता को कुंठित कर लिया है।

नई पीढ़ी कह सकती है कि प्रत्येक कालखण्ड विगत कालखण्ड को अपेक्षाकृत बेहतर साबित करने का प्रयत्न करता है। वह हम पर नकारात्मक सोच का आरोप भी लगा सकती है। लेकिन हम अपनी आने वाली पीढ़ी को कैसा समाज, कैसा परिवार, कैसा पर्यावरण, किस तरह की सभ्यता–संस्कृति सौप कर जाएंगे, क्या ये विचारणीय नहीं है? इन विषयों को राजनीति या शासकीय योजनाओं के भरोसे छोड़ देना कितना उचित हैं? इस नकारात्मकता पर कुछ सकारात्मकता आपकी दृष्टि में है या कोई सुधारवादी विचार हैं तो हमारा मार्गदर्शन करें। प्रतीक्षा है–

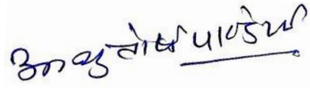

स्मरणीय तिथियां

2 जनवरी' 20 : गुरुवार : गुरु गोविंदसिंह प्रकाश दिवस
10 जनवरी' 20 : शुक्रवार : पं. बालकृष्ण पाण्डेय प्रथम पुण्यतिथि
12 जनवरी' 20 : रविवार : विवेकानन्द जयन्ती
13 जनवरी' 20 : सोमवार : संकष्ट चतुर्थी/लोहड़ी पर्व
14 जनवरी' 20 : मंगलवार : मकर संक्रांति
23 जनवरी' 20 : गुरुवार : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
24 जनवरी' 20 : शुक्रवार : मौनी अमावस्या
26 जनवरी' 20 : रविवार : गणतंत्र दिवस (71वाँ)
30 जनवरी' 20 : गुरुवार : बसन्त पंचमी/सरस्वती पूजा
9 फरवरी' 20 : रविवार : माघी पूर्णिमा/रविदास जयंती
17 फरवरी' 20 : सोमवार : गुरु रामदास जयन्ती
21 फरवरी' 20 : शुक्रवार : महाशिवरात्रि
25 फरवरी' 20 : मंगलवार : फुलेरा दूज/परमहंस रामकृष्ण जयंती
3 मार्च' 20 : मंगलवार : होलाष्टक प्रारम्भ
8 मार्च' 20 : रविवार : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
9 मार्च' 20 : सोमवार : होलिज दहन (18.43 से 21.00)
10 मार्च' 20 : मंगलवार : धुलेंडी/रंग होली
13 मार्च' 20 : शुक्रवार : रंग पंचमी
16 मार्च' 20 : सोमवार : शीतलाष्टमी/ बसेवरा अष्टमी
25 मार्च' 20 : बुधवार : नवसंवत्सर (प्रमादी)/ चैत्र नवरात्र प्रारम्भ

आध्यात्मिक शिक्षक

न्यूयॉर्क में जहां कभी स्वामी विवेकानंद रहते थे, वो बीबीसी संवाददाता ऐमिली ब्युकानन का ही घर था। बजरी पर कार के टायरों की चरमराहट, आने वाले तूफान की आशंका और हवाओं के साथ झूमते पेड़। 1970 के दशक में ऐमिली ब्युकानन के लिए इन बातों के कोई मायने नहीं थे। उनका नज़रिया हाल में उस वक्त बदला जब इन्हें पता चला कि वह स्वामी भारत के सबसे प्रभावशाली आध्यात्मिक शिक्षकों में से एक थे। स्वामी विवेकानंद ने पश्चिम को पूरब के दर्शन से परिचित कराया था। ऐमिली ब्युकानन के परिवार ने उस जमाने में उन्हें अपने घर में रहने के लिए आमंत्रित किया था। शिकागो में हुए धर्मों के विश्व संसद से उन्हें दुनिया भर में ख्याति मिली। इस धर्म संसद में विवेकानंद ने सहिष्णुता के पक्ष में और धार्मिक हठधर्मिता को खत्म करने का आह्वान किया। वह तारीख 11 सितंबर की थी। 'अमेरिका के भाईयों और बहनों' कहकर उन्होंने अपनी बात शुरू की थी। प्रवाहपूर्ण अंग्रेज़ी में असरदार आवाज़ के साथ भाषण दे रहे उस संन्यासी ने गेरूए रंग का चोगा पहन रखा था। पगड़ी पहने हुए स्वामी की एक झलक देखने के लिए वहां मौजूद लोग बहुत उत्साह से खड़े हो गए थे। इस भाषण से स्वामी विवेकानंद की लोकप्रियता बढ़ गई और उनके व्याख्यानों में भीड़ उमड़ने लगी। ईश्वर के बारे में यहूदीवाद और ईसाईयत के विचारों के आदी हो चुके लोगों के लिए योग और ध्यान का विचार नया और रोमांचक था। रामकृष्ण परमहंस की अनुयायी कैलिफोर्नियाई नन को वहां 'प्रव्राजिका गीताप्रणा' के नाम से जाना जाता है। वहां रिट्रीट सेंटर चला रहीं प्रवराजिका गीताप्रणा ने ऐमिली ब्युकानन को पूरी जगह दिखाई, जहां स्वामी जी प्रवास करते थे। स्वामी विवेकानंद बीबीसी संवाददाता ऐमिली ब्युकानन की परदादी को 'जोई-जोई' कहा कहते थे। वह उम्र भर उनकी दोस्त और अनुयायी रहीं।❑

उच्च कोटि के किराना, मेवा, खड़े व पिसे मसाले,
जड़ी-बूटी के थोक व फुटकर विक्रेता

लाला राम चन्द्र गुप्ता एण्ड सन्स

दुकान नं. 141-144, कैनाल पटरी, एक्सप्रेस रोड (6 नंबर कार पार्किंग के सामने) कानपुर
पर्चा लिखवाने वास्ते: 7510000300/9621265697
पर्चे की जानकारी वास्ते फोन नंबर 0512-2364444

अपनी बात

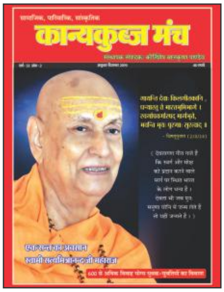

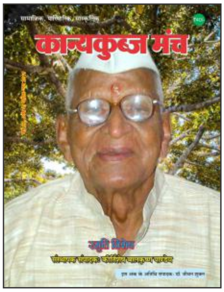

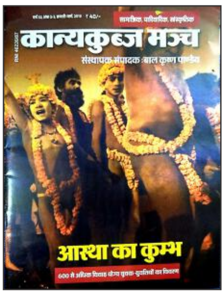

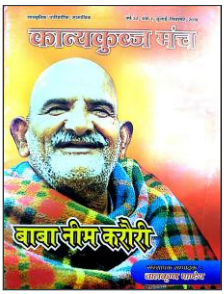

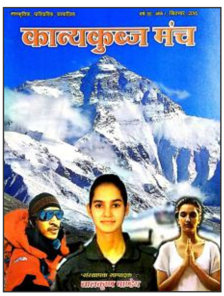

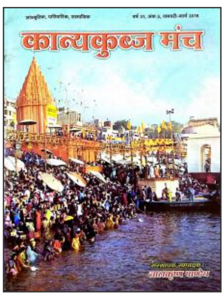

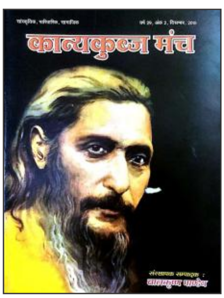

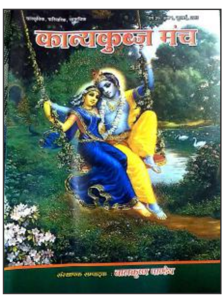

- सुधार एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्य संरक्षित रहें, इसके लिए मर्यादाओं की एक लक्ष्मण रेखा भी बनानी पड़ती है।
- परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत धर्म है। हम बदलें अवश्य, मगर गिरगिट की भांति नहीं जो हर दूसरे क्षण अपना रंग बदलता है।
- परिवर्तन का आधार रचनात्मक हो। निषेधात्मक परिवर्तन जीवन से जुड़ी हर शैली को बेबुनियाद बना देता है।
- बिना दिशा निर्धारण मीलों चलकर भी हम सफर तय नहीं कर पायेंगे।
- स्वस्थ, आदर्श समाज की स्थापना में हम अपनी शक्तियों, ऊर्जा का उपयोग करें।
- एक-दूसरे की छींटाकशी में, आरोप-प्रत्यारोप में समय को व्यर्थ न जाने दें।
- केकड़ावृत्ति की मानसिकता ने समाज का भला नहीं किया है।
- नई पीढ़ी की हर बात का विरोध या खामोशी-चुप्पी दोनों ही सही नहीं।
- सिद्धांत मानवीय गुणों का आचरण मांगता है। जिसकी बुनियाद है- आस्था, विश्वास, त्याग, समर्पण, धैर्य, निष्ठा, नीतिमत्ता, और निस्पृहता। यह सर्वोदय की साधना है।
- नेतृत्व की विशेषता है सबके अभ्युदय के साथ संकल्पित हों।
- स्वार्थी सोच ने, आग्रही पकड़ ने, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति ने समाज, परिवार के नैतिक मूल्यों को बौना बना दिया है।
- तेज धूप से बचने के लिए स्वार्थों की चादर तानना निर्लज्जता है।
- जीवन केवल जिया ही नहीं जाता है, उसे जाना भी जाता है। जीवन को जानने की सतत प्रक्रिया जीवन को अर्थ देती है। अर्थ की खोज में ही जीवन की परिभाषा निहित है।
- 'कान्यकुब्ज मंच' प्रकाशन के पीछे एक विशिष्ट दृष्टि रही है। पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को संरक्षित करने के हमारे प्रयास में आपका स्नेह, सहयोग व संरक्षण ही हमारा सम्बल है।
- सीमित साधनों में हालांकि पत्रिका का प्रकाशन सहज नहीं। प्रकाशन में सहयोग के लिए आपसे निवेदन है- संरक्षक / विशिष्ट / आजीवन सदस्यता लेकर पत्रिका से जुड़े और अपने मित्रों, सगे-सम्बन्धियों को भी प्रोत्साहित करें।
- '**प्रमादी**' नाम नवसम्वत्सर की मंगल कामनायें।

– **विष्णु पाण्डेय (प्रबन्ध संपादक)**

जिस समय राम और लक्ष्मण वन में थे, तब लक्ष्मण जी के ब्रह्मचर्य की परीक्षा के लिए श्री राम ने प्रश्न किया -

'पुष्पं दृष्ट्वा, फलं दृष्ट्वा योसित यौवनम्।
त्रीणि रत्नानि दृष्टवैव कस्य नो चलते मनः ।।'

हे लक्ष्मण! सुन्दर पुष्प, पके हुए फल और यौवन से मद्‌माती स्त्री को देखकर किसका मन विचलित नहीं होता? क्या यह नीति का वचन मिथ्या है? आदर्श ब्रह्मचारी लक्ष्मण ने तुरन्त उत्तर देते हुए कहा -

'पिता यस्य शुचिर्भूतो माता यस्य पतिव्रता।
ताम्यां यः सुनुरुत्पन्नः तस्य नो चलते मनः ।।'

जिसका पिता पवित्र आचरण वाला तथा जिसकी माता पतिव्रता हो, उनके रजवीर्य से उत्पन्न हुए पुत्र का मन चलायमान नहीं हो सकता।।

शुभकामनाओं सहित

माननीय सरोज मिश्रा

होटल शिवाय

16/97, शिवाय टावर, दि माल, कानपुर
फोनः 0512-2332050-51

हमारी मर्यादा नारी

-डॉ. जीवन शुक्ल

हम उस युग में जी रहे हैं जिसमें भारत पुनः विश्वगुरु होने की चर्चा करता दिखाई पड़ रहा है। जब कभी भारत विश्वगुरु रहा होगा, उस समय कितने देश, कितनी संस्कृतियां रहीं होंगी, इसे तो राम जाने। पर आज जब देशों, संस्कृतियों और भाषाओं के बीच आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक शीतयुद्ध चल रहा है और भारत स्वयं अपने सांस्कृतिक ह्रास और आर्थिक पराभव के साथ नैतिक मूल्यों के स्खलन युग में जी रहा, उस समय 'विश्वगुरू' का सपना देखना किसी अफीमची की पिनक का आलेख ही कहा जा सकता है।

मैंने बचपन में पढ़ा था, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'। यानी भारत जगतगुरु कहलाया था अपने नैतिक मूल्यों तथा सत्यनिष्ठ संस्कृति के आधार पर, आर्थिक या सामरिक शक्ति के कारण नहीं। नैतिक मूल्य मन-मस्तिष्क पर तथा सांस्कृतिक मूल्य हृदय पर राज्य करते हैं, शस्त्र और अर्थ नहीं। भारत विश्व में पहला देश रहा होगा जहां नारी को सहभागिनी और सम्माननीय से ऊपर उठाकर पूजनीय के पवित्र आसन पर बिठाया गया। नारी सृष्टि की मूल इकाई है। उसकी महत्ता को सबसे पहले भारत ने समझा, तो विश्व के लोगों ने उसकी नैतिक समझ के सामने अपने को बौना पाया। गुरु वही हो सकता है जो दूसरे को गुरु-तत्व दे सकने की स्थिति में हो। नारी की महानता को समझने, उसे अपने बीच उच्च आसन प्रदान करने से उक्त श्लोक के रचयिता ने यह निष्कर्ष निकाला कि भारत में ही देवताओं का निवास है क्योंकि यहीं नारी सृष्टि की पवित्रतम सृष्टि मानकर पुरुषों के बीच में भी पूजनीय है।

नारी के लावण्य, उसके आकर्षण और उसके सम्मोहन से कई गुना महान है उसका मातृत्व। रति, रम्भा का रूप दैत्यों को, ऋषियों को और सामान्य लोगों के अंदर वासना का उद्वेग करता है तो दुर्गा और काली का स्वरूप उनके लिए संहारक सिद्ध होता है। उसमें दोनों प्रकार की शक्तियां पुंजीभूत हैं। पर वो अपने अंदर किस रूप को सँवारती है, यह उसकी व्यक्तिगत रुचि से भी जुड़ी मानसिकता पर निर्भर करता है। राजा दशरथ अपनी सबसे छोटी रानी कैकेयी के रूप पर तो मुग्ध थे ही, पर देवासुर संग्राम में उनके रथ की धुरी निकल गयी, तो युद्धभूमि में उपस्थित कैकेयी ने कील की जगह अपनी उंगली लगाकर रथ को गिरने से ही नहीं रोका बल्कि पति की विजय में भी सहायक सिद्ध हुईं।

आज उसी भारत की नारी अपने चारों ओर दरिंदों से घिरी देखकर भयाक्रांत है। आये दिन रेप, गैंगरेप, कुछ महीनों की बच्ची के साथ दुष्कर्म की घटनाएं पढ़ते हैं तो लगता है कि हम उस भारत के नागरिक नहीं हैं जो नारी को शक्तिस्वरूपा मानकर उसके सम्मुख नत ही नहीं होता है बल्कि उसकी पूजा भी करता है। नारी के साथ यह अपमानजनक आचरण सामान्य अपराधी प्रवत्ति के लोग ही नहीं करते बल्कि उसमें सन्त, राजनेता और अधिकारी वर्ग के लोगों के शामिल होने से हमने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...' के आदर्श को ही ध्वस्त नहीं किया बल्कि विश्वगुरू होने के सपने का भी मजाक बनाया है।

बढ़ते यौन अपराधों के पीछे दोषी कौन है? लड़कियां, पुरुष, पुलिस, सरकार, न्यायव्यवस्था या सब? इस प्रकार के यौन अपराध पर्दे में रहने वाली मुस्लिम स्त्रियों की अपेक्षा खुले ढंग से रहने वाली अन्य समाज की लड़कियों के साथ ही क्यों होते हैं? बच्चियों के साथ या गैंगरेप जैसे कांड के कर्ता तो पूरी तरह से मुझे मानसिक रोगी लगते हैं। इस प्रकार के रोगी को उत्तेजना के अवसर फिल्मों, इंटरनेट व सोशलमीडिया के उत्तेजक दृश्यों से मिलते हैं।

हैदराबाद रेप केस में पुलिस ने हैवानियत करने वालों को उसी स्थान पर ले जाकर इनकाउंटर कर दिया। इस पर पूरे देश के लोगों ने सराहा। मैंने भी उन्हें अपना आशीष दिया। लेकिन ऐसा कर पुलिस वालों ने सरकार की गिरती साख को कंधा दिया और दरिंदों को मौत के घाट उतारने पर तुरंत न्याय पाने की भावना को सन्तोष। लेकिन इसका व्यापक असर गलत पड़ेगा यदि इसे मौखिक नैतिकता प्रदान कर दी जाय। पुलिस वालों के पास वैसे ही अकूत अधिकार हैं, इनकाउंटर तो बहुत खतरनाक अधिकार है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वो रेप केसों का फैसला छह महीने के अंदर निपटाये और रेप पीड़िता को, उसके परिवार को संरक्षण प्रदान करे। देश रेप केसों से शर्मसार हो रहा है। इसके लिए सार्थक कदम उठाने होंगे। राजनैतिक संरक्षण समाप्त होना चाहिए।

सारी जिम्मेदारी सरकार पर छोड़ना उचित नहीं। ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। पुलिस में भी हर प्रकार के लोग होते हैं। जिन लोगों ने इनकाउंटर किया है सरकार उन पर कार्यवाही जरूर करेगी। उस समय हम उनकी, उनके परिवार की क्या मदद कर पाएंगे? आओ, नारी की लाज की रक्षा का हम संकल्प लें। आज सब्जी बेचने से लेकर सीमा और देश की रक्षा तक में नारी पुरुष के साथ बराबरी में खड़ी है। वो हमारी मां, बहन, बेटी है, पत्नी भी। हमें उसके रूप की रक्षा स्वयं करनी है और सरकार पर भी इसका दबाव डालना है।❑

– 9415471813

ब्रह्मजानाति इति ब्राह्मणः

– प्रमोद नारायण मिश्र

ब्रह्म को ही ईश्वर माना गया है। जप, तप ब्राम्हण के ही कार्य थे। जिसके द्वारा ब्राह्मण तेजस्वी होता था और जन्त्र- मंत्र- तंत्र विधाओं में पारंगत ब्राह्मण पूजे जाते थे। आप ध्यान से सोचें कि ब्राह्मणों ने समस्त जातियों को आशीर्वाद दिया कि 'बच्चा मौज करो, सुखी रहो' इस आशीर्वाद से ही आज सब सुखी है और मौज कर रहे हैं। किंतु ब्राह्मणों ने जप-तप तो दरकिनार, गायत्री और संध्या को भी त्याग दिया जिससे ब्राह्मण गरीबी पतन की रेखा के नीचे आ धमका है।

कान्यकुब्जों के संबंध में तो लिखा है कि-

'कान्यकुब्जः द्विजः श्रेष्ठाःधर्म कर्म परायणः।
प्रलयेनापि सीदन्ति, कन्या यदि न जायते।।'

धर्म-कर्म में पारंगत कान्यकुब्ज अति स्वाभिमानी होते थे। इसी कारण प्रलय भी उन्हें झुका नहीं सकता। यदि कन्या की उत्पत्ति न हो। कान्यकुब्ज ब्राह्मण सिर्फ उन्हीं के सामने झुकते थे जिसको या जिस परिवार को अपनी कन्या ब्याहते थे। अब वह समय नहीं रहा जब समाज में कन्या का जन्म हंसते बोलते परिवार को शोकाकुल कर देता था, कन्यादान के लिए दरवाजे दरवाजे भटकना पड़ता था। आज कन्याओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिला है। नौकरी, शिक्षा, व्यवसाय हर क्षेत्र में वे बराबरी पर हैं। आज कन्या के लिए वर खोजने की ही नहीं, वधु तलाशने के लिए भी जहमत उठानी पड़ती है। आवश्यकता है अपनी गौरवपूर्ण संस्कृति, आचार-व्यवहार, खान-पान, वाणी-बोली, ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म ज्ञान, परम्पराओं-मर्यादाओं के पोषण, संरक्षण और संवर्धन की। आशा है कि ब्राह्मण बंधु अपने को पहचान कर अपनी संस्कृति की रक्षा करना अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक समझेंगे। ❑

सम्राट अकबर के समय (16 वीं सदी) में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के दो प्रतिष्ठित भाई हुए एक श्रीहर्ष और दूसरे जो बाद में बाला नाम से विख्यात हुए। इनका नाम बाला इस कारण हुआ कि यह भगवती बाला (चंडी देवी का एक स्वरूप) के उपासक थे और उन्हीं की कृपा से सिद्धि प्राप्त हुई थी। वह कहरवाय मार्गी थे। इन्हीं के बड़े भाई श्री हर्ष बंगाल गए और वहीं बस गए। उनके वंशज वहां भट्टाचार्य इत्यादि नाम से जाने जाते हैं। यह अपने को कान्यकुब्ज ब्राम्हण मानते हैं और इस बात पर गर्व करते हैं कि उनके पूर्वज श्रीहर्ष कान्यकुब्ज प्रदेश से आकर बंग देश में बसे थे किंतु यह नैषध रचयिता श्रीहर्ष से भिन्न थे। (साभार- श्रीहर्ष और उनका नैषध)

ब्राह्मण जाति की उपयोगिता

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विंसेंट स्मिथ के शब्दों में जो संस्था हजारों वर्षों से चली आ रही है और जिसनें तीव्र विरोध होने पर भी अपना साम्राज्य कन्याकुमारी अन्तरद्वीप तक फैला लिया है वह निरर्थक एवं निरुपयोगी नहीं कही जा सकती।

प्रत्येक जीव अपने मां बाप से केवल शरीर ही नहीं प्राप्त करता वरन् उनकी मानसिक प्रवृत्तियां भी प्राप्त करता है। ब्रह्म ज्ञान, मनोनिग्रह, शौच, तप आदि गुणों के विकास के लिए अनुवांशिक शक्तियों की नितांत आवश्यकता है। ब्राह्मण कुलोत्पन्न होने से ही बालक वंदनीय ठहराया जा सकता है क्योंकि इस छोटे शरीर में उसके पूर्वजों के चरित्रों का इतिहास लिखा हुआ है। ब्राह्मण के दर्शन और तप से समाज ऊंचा उठता है। वे समाज को राह दिखाने वाले हैं। ब्राह्मण अपने अवकाश के क्षणों का सही उपयोग करता था। उसका चिंतन मनन, समाज के हित में होता था।

काण्ट के दार्शनिक विचारों ने जो ख्याति प्राप्त की उसका श्रेय उसके अवकाश के उपयोग को ही है। तिलक को कारागृह का समय न मिलता तो 'गीता-रहस्य' न लिख पाते। अरिस्टोटिल ने भी ध्यान द्वारा प्राप्त सुख की महिमा गाई है।

आध्यात्मिक पूंजी का धनी ब्राह्मण विश्व के लिए एक वरदान है। ब्राह्मण त्याग, तपस्या, शुद्ध विज्ञान और लोक कल्याण का धर्म है। जो राजनीति को जनहित की ओर सच्ची संस्कृति के संवर्धन और पोषण की ओर अग्रसर करता था। ❑

– 6393865967

इन्द्रियैरेव निर्जितः

रावण के मरने के बाद विलाप करती हुई मन्दोदरी ने कहा था कि 'आपको राम के बाणों ने रणांगण में धराशायी नहीं किया, बल्कि आपकी इन्द्रियों ने ही आपको पराजित किया है': इन्द्रियैरेव निर्जितः (बा0रा0 युद्ध0 111.16)। इन्द्रियों का गुलाम, विषयों का कीड़ा और कामिनी-कांचन का किंकर कभी शासनाधिकारी नहीं हो सकता। ❑

समाज हमारी जीवन रेखा है

– डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, कानपुर

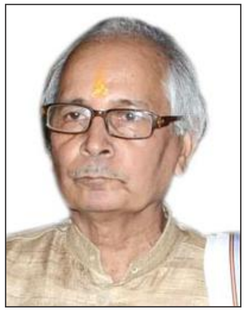

समाज हमारी जीवन रेखा है। उससे जुड़ने के दो मार्ग रहे हैं। पहला आत्मविस्तार और दूसरा आत्मप्रचार। आत्मविस्तार का अर्थ है सबको अपना मान.लेना और आत्मप्रचार है सब पर अपने को लाद देना। सृष्टि के आरंभ.से ये दो मार्ग थे जिन्हे सुर और असुर मार्ग कहते हैं। पहला मार्ग समाज की शक्ति है दूसरा समाज की पराजय। समाज की पराजय का अर्थ व्यक्ति की पराजय भी है। क्योंकि समाज एक अमूर्त इकाई है, उसका प्रकट रूप व्यक्ति ही है। जब हम आत्मविस्तार न कर आत्मप्रचार का मार्ग अपनाते है तो समाज को टुकड़ो मे बाँटते है थोपने के लिए छोटे रास्ते बनाते हैं। समाज के जो अविभाज्य अंग हैं, परिवार, कुटुंब,जाति, वर्ण,संप्रदाय,वर्ग, आदि इनको खंडित करके.देखते हैं। आत्मप्रचार थोड़ा सुख देता है पर हम सैकड़ो की मूक घृणा भी उस यश के साथ लाते हैं ।एकाकीपन से बचने का मार्ग आत्मविस्तार है आत्मप्रचार नहीं। क्योंकि समाज बिखरता है मरता नहीं। मरणशील व्यक्ति है ।❑

शब्द ही जीवन का अर्थ है

शब्द ज्ञान और शब्दबोध में अंतर है। पूरे जीवन में लाखों शब्द बोल कर भी एक शब्द का बोध नहीं होता। शास्त्रों में **'एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः'** का महत्व है। सम्यक् ज्ञात ही बोध है। एक शब्द एक परंपरा है। एक शब्द भूख का उद्भव काल से आज तक कितने अर्थों में अंतरण विकास और स्थानभेद और कर्मभेद से प्रयोग होता है। बुद्ध वेद से पुराण मे बौद्धो में और बुद्ध तक कितनी मनोवृत्तियों और ऐतिहासिक गुत्थियों में उलझा है इसको समझना सरल नहीं। जब निरक्षरता थी, शब्द तब वाणी के अधीन थे और वाक्चातुर्य था। जो लिखना नहीं जानते थे बहुत तौलकर शब्दों का प्रयोग करते। हमारी पुरानी पीढ़ी वाणी के प्रति सचेष्ट थी। साक्षर पीढी तभी सार्थक है जब साक्षर के साथ शिक्षित भी हो अन्यथा वह शब्दों के प्रति असावधान रहेगी। राजनीति और साहित्य में अशिष्ट शब्दों की बहुलता का कारण लेखन और साक्षरता का विस्तार और शिक्षा और शब्दबोध का अभाव है। जिसे हम बोलना या सुनना पसंद नहीं करते उसे निर्जीव कलम से लिख देते हैं। पहले कलम में भी जीभ होती थी। डाटपेन में नोक होती है जीभ नहीं।यह शब्द सजाती नहीं नुकीला बनाती है।

केवल उपसर्ग और प्रत्यय से शब्द संरचना नहीं होती। पूरे युग, उस समाजकी मनोदशा और परंपरा से एक शब्द का स्फोट होता है और हमारी जीवनशैली उससे प्रकट होती है । हम उस अर्थ को जीते हैं। शब्दार्थ ही जीवन का अर्थ होता है। जीवनशैली बदलते ही.जब हम केवल शब्द को जीते हैं तब शब्द हमारा जीवन नहीं हथियार बन जाते हैं। यज्ञोपवीत, संन्यास, ब्रह्मचर्य, गोत्र, प्रवर शाखा सूत्र को हम कितना जी रहे हैं। संध्याहीन ब्राह्मण व्रात्य कहा जाता है। इस वेदार्थ को कौन जी रहा है पर शब्द ब्राह्मण को जरूर जी रहे हैं और जी ही नहीं रहे यज्ञोपवीत प्रवर गोत्र को हथियार बनाये हैं। गोत्र में बने रहने के कुछ नियम हैं उस प्रवर्तक के बनाये.सिद्धान्तों का पालन। गोत्र परिवार की आदिम व्यवस्था है जिसका संबंध जाति या समाज से नहीं परिवार से है। परिवार समाप्त हो गये, जन्मभूमि भूल गयी ।गोत्र हमारी जड़ है। डार से बिछुड़े हम पहले टहनियों की चिंता करें। शब्दों को जियें हथियार न बनायें ।❑

भीड़ लोक नहीं है

लोक किसी भूखंड पर अवस्थित ऐसा जनसमुदाय है जिसको विधिवत शिक्षा मिलती है। कभी रामलीलाएं लोकशिक्षण का माध्यम थीं। हम देख कर सुनकर अभिनय कर आचरण से जुड़ते थे। ये जो मेले तीर्थयात्रायें और उत्सव होते हैं लोकशिक्षण की पाठशालाएं ही हैं। हर देश में ऐसी व्यवस्था रही है। भारतीय लोक जीवन को आनंदमय बनाने का और पाश्चात्य लोक दुख से विरेचन का संदेश देता है ।लोकशिक्षण को शास्त्रीय आधार आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में दिया । साहित्य भी लोकशिक्षण का ही माध्यम है। लोकशिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ना है। हमारे संस्कार भी लोकशिक्षक हैं। लोक के स्वास्थ्य को पहचानने के लिए हमें वहाँ के लोकशिक्षण माध्यमों को समझना चाहिए। वह योजक है या विभंजक। राजनीति किसी देश में कभी लोकशिक्षक नहीं रही। व्यक्ति नियंत्रित संस्थान भी लोकशिक्षक नहीं होते। बाजारवाद और राजनीति ने सनातन लोकशिक्षकों को तो समाप्त ही कर दिया। नये लोकशिक्षक सिनेमा, टीवी समाचार माध्यमों को भी लोक से दूर कर दिया है। वे विद्वेष और घृणा के पर्याय बन गये हैं । ❑

–9452694078

विश्व संस्कृति को बिहार की देन

– आचार्य निशांतकेतु, गुरुग्राम

हम अपने अतीत के उज्ज्वलतम क्षणों को स्मरण कर गौरव-बोध करते हैं। वह अतीत, जो व्यतीत हो चुका है। स्मरण करने की आवश्यकता शायद इसलिए भी है कि हमारा उपस्थित वर्तमान अभी ध्रुवान्तर-बिंदु पर ठिठुर रहा है। विषाद की अपार राशि पर अतीत की उज्ज्वल किरणें शायद कोई सन्द्रवण उत्पन्न कर दे।

विश्व के किसी भूभाग और क्षेत्र में जो सर्वोत्तम एवं सर्वहितकारी सिद्ध होता है, उस पर समस्त मानव-वंश एवं विश्व का समाधिकार होता है। चिंतन, अविष्कार, उपज, उत्पादन, व्यक्ति, कृति या ऐसे किसी भी रूप में यह धरोहर विश्व के लिए देन बन सकती है।

सनातन धर्म : सनातन धर्म के विकास पर यद्यपि समस्त भारत की साधना और चिंतन का योगदान है, पर सनातन धर्म का स्वरूप-निर्धारण बिहार के मिथिलांचल में ही हुआ। राजा जनक के दरबार में महर्षि याज्ञवल्क्य, महर्षि वैशम्पायन, सुलभा, गार्गी, अष्टावक्र इत्यादि अनेक ऋषि महर्षि आते रहे हैं। मिथिला विश्व का प्रथम, सर्वोत्तम और सर्वोच्च शास्त्रपीठ थी। यहां किसी भी दर्शन और सिद्धांत की अंतिम परीक्षा होती थी। महर्षि याज्ञवल्क्य के द्वारा 'शुक्लयजुर्वेद' की रचना, सूर्य से प्रत्यक्ष साक्षात्कार, 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' की रचना, कर्मकांड, पौरोहित्य, शास्त्रार्थ, दिग्विजयी यज्ञ, गुरुकुल की स्थापना और सम्पूर्ण देश के महर्षियों के ज्ञान का एकसूत्रण हुआ था। फिर जो कुछ मंथन से निष्कर्षित हुआ, वह सनातन-धर्म है। इसलिए बिहार सनातन धर्म के व्यवस्थित रूप का जनक है।

सात दर्शनों में चार का जन्म बिहार में हुआ है। सनातन-धर्म, बौद्ध-धर्म, जैन-धर्म और खालसा सिख-धर्म की जननी बिहार की भूमि है। गायत्रीमंत्र के द्रष्टा विश्वामित्र बिहार के थे। यह मंत्र सनातन धर्म का मूलाधार है।

बिहार में निर्मित और प्रयुक्त कुछ शब्द संसार भर में व्यापक हो गए, जैसे - बौद्ध, जैन, सिख और सनातन (हिन्दू) इत्यादि। 'पंचशील' शब्द बिहार से ही सर्वव्यापी बना। अहिंसा, स्वस्तिक और सन्यास शब्द भी विश्व भर में फैल गए। नक्सल और नक्सलिज्म भी बिहार का शब्दोत्पादन है। इसी क्र म में 'अमन' शब्द है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने 'अमनस्क' शब्द का व्यवहार किया। मन के मौजूद रहने पर समाधि नहीं लग सकती।

स्वस्तिक : स्वस्तिक आठ रेखाओं से बना प्रतीक और यंत्र है। बिहार के चंपारण जिले में लौरिया नंदनगढ़ और केसरिया नामक स्थान है। यहां के उत्खलन में जो पुरावशेष मिले हैं, उन पर 'स्वस्तिक' और 'त्रिशूल' के चिन्ह अंकित हैं। एक सिक्के पर 'अट्विज' लिखा है। यही अष्टरेखाएँ अर्थात स्वस्तिक हैं। यह स्वस्तिक-प्रतीक सबसे प्राचीन पुरावशेष है। यह प्रतीक-चिन्ह मंगल-विधायक और अष्टादिबन्धमूलक है। स्वस्ति का अर्थ है- कल्याण। अतः स्वस्तिक का अर्थ होगा कल्याणकारक। सभी मांगलिक-कार्यों में 'ॐ स्वस्ति न इन्द्रो...' मन्त्र पाठ का विधान है। इस मंगल-मन्त्र का मन्त्ररूप है स्वस्तिक। जर्मनी तक यह स्वस्तिक-चिन्ह गया। सम्पूर्ण ईसाईयत में जो क्रॉस है, वह स्वस्तिक का ही एक रूप है। इस प्रकार बिहार (चंपारण) में उत्खलित स्वस्तिक विश्व की कल्याण-चेतना को एक मंगल अवदान है।

गायत्री मंत्र : गायत्री भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म, वैदिकाचार और अध्यात्म विद्या का मूलाधार-चक्र है। गायत्री 'ऋग्वेद' की परम पवित्र मन्त्र ऋचा है। गायत्री सूर्य की प्रार्थना का मंत्र है, जो सावित्री रूप में है। सविता सूर्य और सावित्री शक्ति है। सावित्री को ब्रह्मा की पत्नी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वे (सावित्री) चारों वेदों की माता हैं। गायत्री से ही समस्त वेदों की उत्पत्ति शास्त्र-सम्मत है। यह गायत्री मंत्र महामन्त्र या मंत्रराज भी है। उत्पत्ति-परमार के अनुसार 'ॐ' बीज और मूल है। इस ओंकार का विस्तार 'गायत्री' रूप में हुआ। इस गायत्री से चारों वेद निकले। वेदों से उपनिषद, पुराण, स्मृति इत्यादि का विकास हुआ।

इसलिए ॐकार (प्रणव) और गायत्री (सावित्री) भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि मन्त्र हैं। प्रार्थना है कि हे सूर्य, तुम सर्व-सामर्थ्यवान एवं दीप्तियुत हो। तुम मेरी बुद्धि को दिव्यता प्रदान करते

हुए सत्कार्य की ओर प्रेरित करो। इस प्रार्थना में वस्तु अथवा पद, धन अथवा वंश आदि कुछ नहीं मांगा गया है। गायत्री के द्रष्टा ऋषि हैं विश्वामित्र, जो बिहार के व्याघ्रसर (बक्सर) के थे।

तर्पण-श्राद्ध-सिद्धांत : गया (बिहार) में किये जाने वाले पितृतर्पण-श्राद्ध-सिद्धांत का व्यवहार-पक्ष है। मनु के पौत्र राजा गय ने यहां 100 अश्वमेध 1000 पुरुषमेध यज्ञ किये थे। बोधगया में बुद्ध को बोधिलाभ हुआ था। यहां ब्रह्मा ने भी यज्ञ किया था। यहीं गया स्थान से अगत्स्य मुनि ने सूर्य के सामीप्य के लिए प्रस्थान किया था। मतंग ऋषि का आश्रम भी यहीं था और पांडव भी यहां आए थे।

गया में पिंडदान, तर्पण, श्राद्ध इत्यादि कर्मकांड अनुष्ठित करने पर पितरों को तृप्ति और मुक्ति मिलती है। अत्रि-स्मृति, बृहस्पति-स्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति, वाल्मीकि-रामायण जैसे अनेक शास्त्रों और पुराणों में इस तथ्य का बहुशः उल्लेख किया गया है।

वैशाली का गणतंत्र : बुद्ध के समय से भी पहले वैशाली में गणतंत्र था। इतिहासकारों ने प्रमाणित किया है कि प्राचीनकाल में चार स्थानों में गणतन्त्री शासन का पूर्ण या अर्धस्वरूप था। वे हैं- भारत (वैशाली), यूनान, इटली तथा ट्यूनिस (उत्तरी अफ्रीका)। इनमें भारत (वैशाली) का गणतंत्र सबसे प्राचीन, पूर्ण व सर्वांगीण था। कह सकते हैं कि वैशाली (बिहार) विश्व में लोकतंत्र की जननी है। मनु के पुत्र नभनेदिष्ट ने बिहार में आर्यवंश की स्थापना की थी। उसी आर्यवंश में विशाल नाम के राजा हुए, जो श्रेष्ठ शासक के रूप में वर्णित हैं। राजा विशाल के नाम पर ही 'वैशाली' राज्य की स्थापना हुई थी। तत्कालीन भारत के प्रसिद्ध सोलह जनपदों में चार वैशाली, मिथिला, अंग और मगध प्रसिद्ध सभ्यता-केंद्र थे। इनमें वैशाली और मिथिला का महत्व अधिक था। ❑

-9811096352

उप-संस्कृति और कान्यकुब्ज

जिस महान भारतीय संस्कृति का आज ढोल बज रहा है उसके सिर छत्र के नीचे एक ओर वेद, उपनिषद, स्मृति ग्रंथ और शताब्दियों के विदेशी सभ्यता के मिश्रण तथा कुछ हद तक समन्वय का रत्नजड़ित मुकुट है, दूसरी ओर अनेक उपसंस्कृतियों का (जिसे आप काग्लोमरेशन ऑफ सब-ऑल्टर्न कल्चर्स कह सकते हैं) जखीरा है। ये उप-संस्कृतियाँ मात्र आदिवासियों या दलितों की नहीं, ये गांव के सवर्णों से लेकर शहरी मध्यवर्ग तक पर हावी हैं। हर सामाजिक गुट की, या उपजाति की अपनी एक अलग, लगभग गोपनीय उप-संस्कृति है जिसे परिवार और नाते के लोग ही विभिन्न कर्मकांडों में और सामान्य व्यवहार में भी आजमाते रहते हैं, बाहरी लोगों के लिए उसका व्याकरण समझ से बाहर है।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की भी 'तीन कनौजिया-तेरह चूल्हे' से व्यंजित एक अलग उप-संस्कृति रही है जो आज काफी हद तक ध्वस्त हो चुकी है। द्वितीय महायुद्ध के पहले तक उसकी बड़ी मान्यता थी। अधिकांश कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में (कनॉजिया बामन), जिन्हें निराला ने 'कान्यकुब्ज-कुल-कुलांगर' की पदवी दी है, और जो गांवों में हाशिये के किसानों की तरह रहते थे, आत्मश्लाघा के लिए कुलाभिमान कई टोटके गढ़ रखे गए थे। उनमें एक टोटका बीघा-बिसवा का था। कान्यकुब्ज समाज के सारे परिवार इसी मिथक में ग्रस्त थे। कुछ एक बीघा- यानी बीस बिसवा के बामन थे (जैसे कि इत्तफाकन, मेरा परिवार था), कुछ 18 बिसवा के, कुछ दस, कुछ छह के.... इसी संख्या के अनुसार वे ऊंचे कनौजिया या नीचे कनौजिया माने जाते थे। मिथक की प्रेत-शक्ति देखिए, जो ऊँचे हों, उनके ऊंचे होने का अभिमान तो समझ जा सकता है, पर नीचे होने का मिथक भी इतना ताकतवर था कि उसका ठप्पा ढोने वाले परिवार खुद अपने को नीचे मानते थे और छह बिसवा का सम्पन्न कनौजिया अपनी कन्या को अठारह बिसवा के विपन्न कनौजिया परिवार में ब्याह कर कन्या की आपदा से तटस्थ गौरवान्वित महसूस करता था।

पर अभियुक्त कनौजिया बामनों का समाज ही नहीं, ऐसी 'सब-ऑल्टर्न कल्चरल पेंचीदगियां' सभी उपसमाजों में पाई जा सकती थीं, या हैं।❑

– 'श्री लाल शुक्ल – जीवन ही जीवन' से

संस्कृत और संस्कृति

– डॉ वरुण कुमार तिवारी

आज भारत वर्ष में अपना उत्कर्ष एवं राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के बजाय लोग बुरी तरह से जातिगत झगड़े में उलझते जा रहे हैं जो राष्ट्र की प्रगति के लिए घातक एवं अशुभ संकेत है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था- 'मेरे मित्रों! जातियों के आपस में लड़ने से कोई लाभ नहीं, उस से भला क्या भलाई होगी, उससे तो हम में और भी फूट बढ़ेगी तथा हमारी और भी अधिक अवनति होगी।'

स्वामी जी ने अपने प्रवचन में कहा था- 'ब्राह्मणेत्तर जातियों को मैं कहता हूं- उतावले मत बनो, ब्राह्मणों से लड़ने का प्रत्येक अवसर मत खोजते रहो, तुम को आध्यात्मिकता और संस्कृत शिक्षा छोड़ने के लिए किसने कहा? समाचार पत्रों में विवाद और झगड़ा करने में अपनी शक्तियों को व्यर्थ नष्ट करने के बदले, अपनी सब शक्तियों का उपयोग उस शिक्षा - संस्कृति को उपलब्ध करने में लगाओ, जो ब्राह्मण के पास है।'

'भारतवर्ष में मानवता का आदर्श ब्राह्मणत्व है।' जैसा कि शंकराचार्य ने गीता के अपने भाष्य के प्रारंभ में कहा था। उसमें वह ब्राह्मण भाव की रक्षा के लिए ही श्रीकृष्ण के उपदेशक बनकर आने का कारण बताते हैं। वही महान उद्देश्य था।

स्वामी जी राष्ट्र की उन्नत के लिए संस्कृत अध्ययन पर बहुत जोर देते थे तथा संस्कृत की रक्षा के लिए प्राणपन से तत्पर रहते थे। उन्होंने बार-बार इस बात को दोहराया कि समस्त देशवासियों को अपनी दशा सुधारने के लिए संस्कृत को मजबूती से पकड़े रहना चाहिए। स्वामी जी ने बहुत आग्रह पूर्वक भारतीय बंधुओं से प्रार्थना की थी और कहा था- 'अपनी स्थिति सुधारने का एकमात्र मार्ग जो तुम निम्न जाति वालों को मैं बताता हूं वह है संस्कृत का अध्ययन। उच्च जातियों के साथ यह लड़ना-भिड़ना उनके विरुद्ध लिखना व्यर्थ है। उसमें कोई भलाई नहीं।' उन्होंने निर्देश दिया- 'जातियों को समतल करने का एक ही मार्ग है- उस संस्कृति को, उच्च शिक्षा को अपनाना जो उच्चतर जातियों का बल है। इतना कर लेने के बाद तुम अपनी इष्ट वस्तु को प्राप्त कर लोगे।' स्वामी जी के विचार से अपनी संस्कृत की परंपरा को कायम रखकर ही हम भारत की मर्यादा अक्षुण्य रख सकते हैं।❑ – 8860478066

परंपरा हमारी सांस्कृतिक संचेतना का वह नैसर्गिक अंश है जिसमें संपूर्ण सृजन, संयोजन एवं संकलन क्षमता के साथ चुनने और अपनाने का अनिवार्य विवेक भी जुड़ा रहता है। परंपरा और संस्कृति हमारी आत्मचेतना का प्रदर्शन नहीं, बल्कि सामूहिक मनीषा का निष्पादन है जो एक स्तर पर व्यक्ति को व्यक्ति से और दूसरे स्तर पर विश्व को जोड़ती है। ❑

कान्यकुब्ज क्षेत्र : बैसवारा

प्रस्तुति – सांकृत अजीत शुक्ल

महान आर्यावर्त् (भारतवर्ष) के संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के हृदयस्थ पुनीत कान्यकुब्ज क्षेत्र का विस्तार है। यह बाइस प्रमुख स्थलों (ग्राम/बाड़ा) में श्रेष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की बहुलता से उक्त समस्त क्षेत्र 'बाइस-बाड़ा' अथवा 'बैसवारा' (अपभ्रंश) कहलाया। कान्यकुब्ज क्षेत्र मुख्यतया गंगा-किनारे का भू-भाग है। जो वर्तमान में शारदा-सरयू के दक्षिण-पश्चिम, उत्तर में गोमती नदी तक तथा दक्षिण-पूर्व में यमुना नदी तक विस्तृत है। केंद्र-बिंदु कन्नौज होने से प्रायः कन्नौज, कान्यकुब्ज प्रदेश के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के द्वादश जनपद- कन्नौज, फर्रुखाबाद, कानपुर शहर, कानपुर देहात, उन्नाव, फतेहपुर, रायबरेली (पश्चिम भाग), लखनऊ (पश्चिम-दक्षिण भाग), हरदोई, शाहजहाँपुर (दक्षिण-पूर्वी भाग), लखीमपुर (दक्षिण भाग), सीतापुर (दक्षिण-पश्चिम भाग) स्थूलतः कान्यकुब्ज क्षेत्र माने जाते हैं। व्यवसाय एवं जीविकोपार्जन हेतु भारत के सुदूर प्रान्तों में कान्यकुब्ज प्रवासी ब्राह्मण हैं। 19 वीं सदी के अंत से ही कान्यकुब्ज ब्राह्मण अध्ययन एवं युद्धपरक कारणों से विदेशों में भी रहे। वापिसी पर ये 'विलेतिया' कहे जाते थे।

ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा, उनका पांडित्य, उनका शुद्धाचरण तथा वेद धर्मावलम्बन सारे भारत में प्रसिद्ध था। हिन्दू जाति का मध्ययुग 647 ई. (महाराजा हर्ष की मृत्यु) से प्रारम्भ होकर 1193 ई. (कन्नौजपति जयचंद्र की मृत्यु) तक माना जाता है। यही युग कान्यकुब्ज जाति का स्वर्णयुग है। कान्यकुब्ज महात्म्य के अनुसार कान्यकुब्ज क्षेत्र (कन्नौज) एक सिद्ध क्षेत्र है। यहां भक्त ध्रुव ने तपस्या करके सिद्धि प्राप्त की थी।

''राजद्वारे ध्रुवक्षेत्रे, मुन्तरेजाह्नवी नरे।
कान्यकुब्जेश्वरा यत्र, महादेवोति सिद्धिदः।।''

देवी भागवत के अनुसार कन्नौज में माता सती का कान और कर्णफूल गिरे थे। तथा कण्व मुनि के शिष्यों ने गंगा तट पर 'कुब्जक' पुष्प के पौधों को रोप कर एक कुटी बनाई थी। जो 'कण्व-कुब्जिका' कही जाती थी। आगे चलकर यही 'कान्य-कुब्जिक क्षेत्र' की द्योतक बन गयी।

दसवीं ईस्वी में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के कुटुम्बों को बंगाल में सेन राजाओं ने आमंत्रित कर बसाया। बनर्जी, मुखर्जी, चटर्जी प्रभृति बंगाली ब्राह्मण उन्हीं में से हैं। गुजरात के प्रथम चालुक्य नृप मूलराज ने कान्यकुब्ज ब्राह्मण के 100 परिवारों को अपने देश में बसाया। जो कालांतर में औदिच्य कहलाये। तंजौर के चोल सम्राट ने भी कन्नौज देश के ब्राह्मणों को बसाया था। मालवा के होलकर राज्य की सेना के प्रमुख पदों पर कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का अधिपत्य था। वर्ष 1913 में बस्ती जनपद में सरयूपारीण ब्राह्मण सभा के अधिवेशन के पूर्व (जिसका सभापतित्व स्वामी माधवाचार्य ने किया था) सरयूपारीण ब्राह्मण स्वयं को कान्यकुब्ज की उपशाखा कहकर गौरवान्वित होते थे। दसविध ब्राह्मण में भी सरयूपारीण ब्राह्मण का उल्लेख न होने से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।

कान्यकुब्ज क्षेत्र लगभग 2000 वर्ग किमी में विस्तृत है। कान्यकुब्ज क्षेत्र 'बैसवारा' असि-मसि में प्रधान रहा है। भोलानाथी प्रवृत्ति के विशेष दर्शन इस क्षेत्र में अनुभूत किये जा सकते हैं।

''भंग की तरंग, मौज, हास-परिहास पान,
चुटकी, तमाखू, काव्य, चाट चटखारे की।
वेद को बखान कहूँ गीता, मानस, पुरान,
ज्ञान की धरा पवित्र गंगा किनारे की।
असि-महावीर, मसि-रसिक की धरा प्रसिद्ध,
षटकुल रीति नीति धर्म-ध्वज धारे की।
भारतीय संस्कृति का उर में बसाए बिम्ब,
भारत का आईना है भूमि बैसवारे की।'' ❑

-9415474584

प्रकृति संरक्षण का संदेश देती है - मकर संक्रांति

–पवन शुक्ल, नई दिल्ली

पंच देवों में प्रत्यक्ष देवता के रूप में प्रतिष्ठ सूर्य मकर राशि में प्रस्थान करने के साथ ही उत्तरायण हो जाते हैं। 13 जनवरी से ही विभिन्न प्रदेशों में मकर संक्रांति का पर्व विभिन्न नामों से मनाया जाता है। आंध्र प्रदेश में तो पूरे 4 दिन इसका आयोजन होता है, जबकि तमिलनाड में 'पोंगल' के रूप में 3 दिन तक इसका उत्सव होता है। पंजाब में 'लोहड़ी', उत्तर पूर्वी राज्यों में 'बिहू' के नाम से मकर संक्रांति का पर्व प्रसिद्ध है। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण तक की भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता का यह शानदार पर्व गंगा -स्नान, दान-पुण्य पर्व का प्रतीक है। उत्तर भारत में क्षेत्रीयता के आधार पर मकर संक्रांति के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। पूरब में दही-चूड़ा के साथ, मध्य उत्तर प्रदेश में तिल, खिचड़ी, वस्त्र-दान, हरियाणा के अंचलों में बड़े-बूढ़ों को उपहार देकर सम्मान करने का प्रचलन है।

उत्तरायण में जाने पर मकर राशि में प्रवेश के साथ ही सूर्य अद्भुत शक्ति और ऊर्जा के साथ समूचे जगत को जगमगा देता है, जिसके बूते पर सृजन की संरचना होती है। बिना सूर्य के प्रकाश के सृष्टि का अस्तित्व संभव नहीं है। हिंदू व अन्य संस्कृतियों में सूर्य का सर्वोच्च स्थान इसलिए है कि वह इस नश्वर जगत में प्राण फूंकता है और निर्जीव धरा को प्रकृतिजन्य संसाधनों से सजीव बनाता है। सूर्य का यह निस्वार्थ भाव ही उसे ज्योतिष की सभी विधाओं में सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है। इसी दिन भगवान कृष्ण ने गिरिराज गोवर्धन को अपनी उंगली पर उठाकर इंद्र की हठधर्मिता तोड़ी थी।

हमारा शरीर जिन पंचतत्व सूर्य, पृथ्वी, वायु, जल एवं आकाश का समुच्चय है, उसमें से सभी चार तत्वों का अस्तित्व सूर्य पर ही निर्भर करता है। रोमन व ग्रीक संस्कृतियों के भी मध्य में भी सूर्य है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य के प्रताप से सृजित व उसके निस्वार्थ भाव से पूरी सृष्टि को अपने गुणों से अभिभूत करने की भावना के अंतर्गत ही हम मनुष्यों से लेकर पशु पक्षियों को भोजन कराते हैं, गुड़-तिल, गर्म वस्त्र, तेल, खिचड़ी आदि का दान करते हैं। तिल की तासीर गर्म होने के कारण शिशिर ऋतु में इसका सेवन लाभदायक माना गया है। दूसरा, तिल को भगवान विष्णु के शरीर से उत्पन्न माना जाता है इसका उपयोग भी यज्ञ में, तर्पण में, खाद्य में, भोजन बनाने में व शरीर की मालिश आदि में किया जाता है।

हिंदू संस्कृति में जितने भी पर्व त्यौहार हैं उन सभी का वैज्ञानिक महत्व है। आज विश्व जिस ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से जूझ रहा है उसका मुख्य कारण यही है कि हमने सूर्य के समानुपाती अन्य चार तत्वों को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास किया है। जिससे इस ब्रह्मांड का संतुलन बिगड़ रहा है। हम पर्यावरण को संतुलित ही नहीं रखते बल्कि उसकी पूजा करते हैं। हमारे तीज त्यौहार ही पर्यावरण मूलक है। हम जंगलों से लेकर पहाड़ और पक्षियों से लेकर पशुओं तक को पूजते हैं।

ब्रह्मांड में स्थित जितने भी नक्षत्र हैं वह हमारे पूज्य हैं। कहीं हम उनके प्रभाव से प्रेरित होते हैं, तो कहीं डरते भी हैं। मकर संक्रांति ऐसा ही पर्व है जो आज के इस ग्लोबल वार्मिंग के शोर में यह सोचने को मजबूर कर रहा है कि हमारी जीवन पद्धति पूरी दुनिया में सर्वाधिक वैज्ञानिक है और इस मामले में भारत के पंचमेल होने के बावजूद हम सभी लोगों की मान्यता साझी है कि प्रकृति से केवल प्रसाद पाया जा सकता है, उस पर मनमाफिक हुकुम नहीं चलाया जा सकता।❑

सूरज के साथ

– नीरज कुमार तिवारी

सूरज के साथ जागना आनंददायक ही नहीं, जीवन को बेहतर करना भी है। चिड़ियों के जगने की बेला में जागना प्रकट की एक इकाई होने का भाव देता है। इससे हम प्रकृति के करीब आते हैं और दुनियादारी के प्रति तटस्थता बढ़ती जाती है। ऐसा नहीं कि हम दुनिया से अलग हो जाते हैं, लेकिन दुनिया को प्रकृति के एक हिस्से की तरह देखना शुरु करते हैं।

स्पेनिश और संस्कृत के विद्वान ऑस्कर प्यूजॉल का कहना है कि प्रकृति से प्यार करना तब तक कोरा रहता है, जब तक हम ऐसा केवल ड्राइंग रूम में करते हैं। यह प्यार भरा पूरा हो इसके लिए जरूरी है कि आप बिस्तर से निकलकर खुद प्रकृति को महसूस करें। विख्यात नृत्यांगना डोरा डंकन कहती हैं कि वह नाचती हैं तो उससे पहले उनका मन नाचता है और मन तभी नाचता है जब वहां उत्सव हो। डंकन आगे कहती हैं कि मन में उत्सव तभी होता है जब प्रकृति आपके भीतर रची बसी हो। इसके लिए जरूरी है कि दिनचर्या में प्रकृति के साथ समय बिताना। बेशक सबसे यह उम्मीद बेमानी है पर महानगरों की व्यस्ततम जिंदगी में से क्या हम कुछ मिनट फूल-पौधों, पशु-पक्षियों, ताल-तलैया, सूरज-चांद के लिए नहीं निकाल सकते। कुछ नहीं तो उगते या डूबते सूर्य को कुछ मिनट देखने भर से हमारे भीतर एक ऊर्जा भर जाएगी।❑

कन्नौज का गौरी-शंकर मंदिर

– रमेश तिवारी 'विराम'कन्नौज

कन्नौज का गौरीशंकर मंदिर आज पर्यटकों, श्रृद्धालुओं एवं भक्तों में 'शिव-मंदिर' के रूप में प्रसिद्ध है। किन्तु बहुत कम भक्त इस तथ्य से परिचित हैं कि यह पुराण-प्रसिद्ध 'शक्ति पीठ' है। देवी भागवत, शिवपुराण, रामचरित मानस आदि में यह कथा वर्णित है कि शिव प्रिया सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ मे अपने पति शिव जी की उपेक्षा देख कर, उसी यज्ञकुण्ड में अपने शरीर को आर्पित कर दिया था। देवी पुराण (महाभावगत) में लिखा है कि शिव जी, सती के शव को सिर पर रख कर भटकने लगे, वे विरह से व्याकुल थे, विष्णु ने अपने चक्र से सती के सव को क्रमशः खण्ड-खण्ड किया। जहाँ जहाँ सती के अंग गिरे वहाँ-वहाँ पर शक्तिपीठ बन गये। देवी पुराण में 52 शक्तिपीठों की सूची सम्मिलित की गई है। इनमें कान्यकुब्ज के शक्तिपीठ का वर्णन भी है।

'कल्याण' के शक्तिपीठांक में स्वयं पूज्य श्री कश्पजी महाराज ने लिखा है ''दक्षिण कर्ण के पतन स्थल में कान्यकुब्ज पीठ हुआ। वहाँ 'ॐ' कर्म की उत्पति हुई। यहाँ वैदिक मंत्रों की सिद्धि होती है।'' कान्यकुब्ज का वह पुराण-प्रसिद्ध शक्तिपीठ बाबा गौरीशंकर का मंदिर ही है। इस संबंध में पौराणिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य खोजे गए है,

वे इस प्रकार हैः-

1. जहाँ-जहाँ शक्तिपीठ हैं, वहाँ सभी जगह शिव और शक्ति के सम्मिलित या अलग-अलग मंदिर बने हैं। देवी पुराण के अध्याय 12 के 16 वें श्लोक में उल्लेख है -

   सर्वेषु तेषु पीठेषु कामरूपादिषु स्वयं।

   पाषाण लिंग रूपेण ह्यधिष्ठाय व्यसेवत।।

अर्थात कामरूपादि सभी शक्तिपीठों में भगवान सदाशिव पाषाण लिंग के रूप में स्वयं उपस्थित होकर उससे सम्बद्ध हो गये। कन्नौज के गौरीशंकर के मंदिर में शिव एवं गौरी की यह अभिन्नता दर्शनीय है। इस मंदिर में एक और अनूठी विशेषता है, जो अन्य शिव-मंदिरों में नहीं होती।

2. शिव-मंदिरों में शिव-लिंग के चारों ओर जो 'अरधा' बना होता है, वह गोलाकार (अथवा अण्डाकार) होता है जब कि कन्नौज के बाबा गौरीशंकर के मंदिर में शिव लिंग के चारों ओर 'षटकोणीय' है, जो तांत्रिक शक्तिपीठों में ही होता है।

   गौरीशंकर मंदिर में लिंग रूप शिव स्वयं शक्ति के संग धरती से उद्भूत हुए हैं। अब तो भक्तिगण इस विग्रह में शिव तथा गौरी के साथ-साथ गणेश की आकृति के भी दर्शन करते हैं, अतः कनौज में शिव-परिवार का प्राकट्य हुआ जो अति मांगलिक सौभाग्य है। इसीलिए प्राचीन काल से यहाँ का प्रसाद भी प्राप्त किया जाता है।

3. देवी भागवत में उल्लेख मिलता है -

   मदोत्करा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे।

   कान्यकुब्जे तथा गौरी, रम्भा मलय पर्वते।।

अर्थात कान्यकुब्ज में 'गौरी' नामक शक्तिपीठ है, जो आज हम सबकी आस्था का केन्द्र 'बाबा गौरी शंकर का मंदिर है'।

4. भारतवर्ष में जहाँ-जहाँ शक्तिपीठ है, वहाँ दुर्गा, 'वालादेवी, हरसिद्धि आदि देवियों के मंदिर हैं - कनौज के गौरीशंकर मंदिर में भी अति प्राचीन काल में अति विशाल देवी मंदिर रहा होगा। आज भी मंदिर के प्रांगण में महिष मर्दिनी दुर्गा की अति प्राचीन प्रतिभा (8वीं शती) सुरक्षित है - यह भी शक्तिपीठ होने का प्रमाण है।
5. एक और प्रमाण यह है कि गौरी शंकर के सम्मिलित विग्रह में गौरी की जो मुखाकृति है उसमें एक ही 'कर्ण' दर्शनीय है - अर्थात यह विग्रह भी संकेत करता है कि कान्यकुब्ज में इसी स्थान पर सती का एक कर्ण गिरा था।
6. ऐसी जनश्रुति भी सुनने को मिली है कि मध्यकाल में स्त्रियाँ अपनी 'मनौती' मानने इस मंदिर में आती थी और 'मान्यता' पूरी हो जाने पर स्वर्ण-निर्मित कर्ण-कुण्डल देवी विग्रह को सादर-शुद्धसहित अर्पित करती थी।

उपर्युक्त पौराणिक एवं पुरातात्विक तथा साक्ष्यों से यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि सती का 'कर्ण' इसी स्थान पर गिरा था, जहाँ आज महिमा मण्डित गौरीशंकर मंदिर स्थित है। अतः यह सिद्ध शिव मंदिर तो है ही - पुराण प्रसिद्ध शक्तिपीठ भी है। अस्तु -

शम्मोराराधन समं नास्ति कर्म कलौ युगे।

शाक्तो वा वैष्णवः, शैवः पूर्ण सम्पूज्य शंकरम्।। ❑

अशोक शास्त्री की कवितायें

बिटिया रानी

युगों-युगों से चलती आई, घर-घर यही कहानी,
एक पराया धन होती है घर की बिटिया रानी।
बेटी है सौगात खुशी की ना पाए वो तरसे,
ये हँसती तो लगता जैसे घर में मोती बरसे।
घर का बन्दनवार बने ये बनती कभी रंगोली,
ये पूजा की थाली है, ये चन्दन, अक्षत, रोली।
इसके आगे फीकी लगती सारी सुख-सुविधाएं,
उम्र बढ़े तो बढ़ जाती है घर-वर की चिन्ताएं।
बदल चुका है बहुत जमाना बापू ये समझाए,
देख-भाल कर चलना ना कुछ उँच-नीच हो जाए।
जब डोली उठ गई तुम्हारी लेकर गाजे-बाजे,
राह तुम्हारी रहे देखते ये देहरी-दरवाजे।
कुछ ऐसा पसरा सन्नाटा गुमशुम हीरा-मोती,
चाहे तुलसी चौरा हो या रामायण की पोथी।
सारी मांगे पूरी करता जो चाही अनचाही,
याद वही घर कर लेता है तुमको छठे-छमाही।
जिस घर में तू जन्मी उससे केवल इतना नाता,
शादी, काम-काज, उत्सव में पीहर तुम्हें बुलाता।
घर तो वही पुराना लेकिन बदले हैं रखवाले,
लोग नए कुछ बैठ गए हैं घर में डेरा डाले।
जीवन की कुछ आपा धापी ऊपर से मंहगाई,
सम्बन्धों का करें दिखावा बस भाई-भौजाई।
सह लेती निर्धनता सारी, मुख से कुछ न बोले,
इसके जीवन की गाड़ी जब खाती है हिचकोले।
घोर अभावों में जी लेती बैठी मन को मारे,
अपने स्वाभिमान से जकड़ी कैसे हाथ पसारे।
कभी पिता ने पूँछी तुमसे मन में भरी व्यथाएं,
तू ना बोली, बोल गईं थीं तेरी मुख-मुद्राएं।
ये दुनियाँ तो देखे केवल मेंहदी और महावर,
कौन जानता दर्द है कितना मन के भीतर -बाहर।
सुख देते हैं गोद में बैठे ये आँखों के तारे,
घूंट खून के पी लेती जब कोई ताना मारे।
बूढ़ी दादी ने अपना फिर आशिर्वाद सुनाया,
अपना धर्म निभाना बेटी, माँ ने ये समझाया।
घुट-घुट करके जी लेना तुम भूखे ही सो जाना,
कष्ट सैकड़ों सह लेना पर घर की लाज बचाना।
युगों-युगों से चलती आई घर-घर यही कहानी,
एक पराया घन होती है घर की बिटिया रानी।

माँ तीरथ है...

माँ तीरथ है, माँ चन्दन है, गंगा सी माँ पावन
धरती माँ सी अपनी माँ भी होती है मन भावन।
देख-देख कर मुस्काए वो शिशु का रुप सलोना,
इधर-उधर से कर ना जाए कोई जादू-टोना।
पहले झिड़के, फिर पुचकारे अपने गले लगाए,
हाथ पकड़ कर अपने पैरों वो चलना सिखलाए।
जाने कैसे पढ़ लेती थी मेरी गहन उदासी,
इसी वजह से रह जाती माँ उस दिन भूखी-प्यासी।
यहाँ-वहा से ले आती थी कैसी-कैसी चीजें,
मेरी बाँह-गले में बांधे कुछ गण्डा-ताबीजें।
मन्दिर-मन्दिर जाकर पूजे वो सारी प्रतिमाएं,
हाथ जोड़ कर मेरे खातिर मांगे रोज दुआएं।
जाने कितने चक्रव्यूह थे रहते उसको घेरे,
फिर भी भजन-कीर्तन करती उठकर सुबह-सवेरे।
कोई साधु-सन्त-फकीरा आ जाए सन्यासी,
उस दिन मेरा घर बन जाता पूरा काबा-काशी।
बूढ़ी माँ को पूरे घर की चिन्ता रोज सताए,
अपने जर्जर दो कन्धों पर सारा बोझ उठाए।
मंगल उत्सव मे देती थी वही ढोल पर थापें,
दीवारों पर, अब भी अंकित हैं हल्दी के थापे।
चाहे जितने पास दूर, हों उसके बेटी-बेटे,
अपने बूढ़े दो हाथों से घर-परिवार समेटे।
कभी गलतियां कर जाता बिन आगा-पीछा सोंचे,
दुनियां बहुत रुलाए केवल माँ ही आंसू पोछे।
भावों की गहराई देखी चिन्तन की ऊंचाई,
माँ के आंचल मे हे जैसे दुनियां एक समाई।
इस दुनियां में नहीं है लेकिन फिर भी राह दिखाती,
मेरे सपनों में आकर के वो मुझको दुलराती।
माँ कहती थी आ जाए जब जीवन का अन्तिम पल,
मुख में तुलसी दल रख देना, थोड़ा सा गंगा जल।
माँ की हम तसवीर निहारें बैठे मन को मारे,
इस दुनियाँ में कौन हुआ जो
माँ का कर्ज उतारे।
माँ तीरथ है, माँ चन्दन है, गंगा सी माँ पावन
धरती माँ सी अपनी माँ भी होती है मन भावन।

– 9935282238

परिचयः

कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ अवधेश कुमार दीक्षित

हमीरपुर जनपद के कानूनगो रहे स्मृतिशेष पं. देवीदीन दीक्षित के सुपौत्र कैंसर रोग विशेषज्ञ 66 वर्षीय डॉ अवधेश कुमार दीक्षित कानपुर शहर में एक अहंकाररहित और स्वाभिमानी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। कानपुर मेडिकल कॉलेज से वर्ष 1972 में एमबीबीएस एवं वर्ष 1980 में एमडी शिक्षा पश्चात जीएसवीएम कैंसर इंस्टीटूट में प्रोफेसर नियुक्त हुए। अमेरिका, ब्रिटेन, हालैंड आदि देशों से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त डॉ अवधेश ने कानपुर को ही अपनी कर्मभूमि बनाने का निश्चय किया। पान-मसाला, तम्बाकू, गुटका के व्यवसाय में अव्वल कानपुर में कैंसर रोगियों की संख्या बहुतायत में है। डॉ दीक्षित 2014 में सेवानिवृत्त होने के बाद भी कैंसर रोग के निदान के लिए संघर्षरत हैं। कैंसर उन्मूलन व रोकथाम की दिशा में अभियान चला रहे हैं।

डॉ अवधेश दीक्षित का जीवन चिकित्सा, साहित्य और आध्यात्म की त्रिवेणी से संपृक्त है। इनका कहना है कि साहित्य से सम्वेदना के भाव जागृत होते हैं और आध्यात्म से शक्ति मिलती है। 14 वर्ष की उम्र में ही इनकी पहली बाल-कविता 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुई तथा 1972 में मनोहरश्याम जोशी ने इनकी रचना को 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में स्थान दिया। उस समय 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'सारिका' जैसी पत्रिकाओं में छपना गर्व माना जाता था। 1997 में 'अनुरंजिका' द्वारा 'सारस्वत-सम्मान' तथा उप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा माननीय अटलबिहारी वाजपेयी हस्ताक्षरित विशिष्ट सम्मान से सम्मानित हुए। अवधेश जी उस क्षण को नहीं भूलते जब 1969-70 में कानपुर क्राइस्ट चर्च कॉलेज की पत्रिका में प्रकाशित उनकी कविता को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से प्रशंसा मिली थी। साहित्य-जगत में दीक्षित जी की प्रकाशित 'सीता के राम' खण्ड-काव्य कृत्ति नई कविता में एक विशिष्ट प्रयोग मानी जाती है।

लखनऊ के सह-आयुक्त (कर) रहे पं. लालताप्रसाद शुक्ल की कन्या आशा से विवाहित इस दम्पति को दो सुयोग्य पुत्रों का गौरव प्राप्त है। चि आशुतोष बीटेक, एमबीए करने के बाद मुम्बई में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। पत्नी श्रीमती सन्ध्या प्राइवेट फर्म में प्रबन्धक हैं। पौत्री शिवि का शिशु जीवन चल रहा है। द्वितीय पुत्र अम्बुज फ़िल्म उद्योग, मुम्बई में असिस्टेंट डायरेक्टर हैं। कानपुर के एसडीएम (पीसीएस संवर्ग) से सेवानिवृत्त डॉ दीक्षित के पिता पं. रमेश चंद्र दीक्षित ने बसन्तविहार में श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर की स्थापना की। प्रति एकादशी, पूर्णिमा को सत्संग-कीर्तन-प्रवचन होता है। मन्दिर की सीमा में ही निवसित डॉ अवधेश दीक्षित आध्यात्मिक जीवन यापन करते हुए कैंसर पीड़ितों के सेवा एवं साहित्य-साधना में रत हैं।

प्रखर प्रतिभा, आकर्षक व्यक्तित्व, राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति निष्ठावान डॉ. दीक्षित से मिलना और वार्तारस में डूबना सचमुच एक आनन्द का विषय रहा। उनमें चिंतन की मौलिकता और तर्कशक्ति मोहक और मानक है। डॉ. अवधेश जी से समाज और साहित्य को काफी अपेक्षायें हैं। - आशुतोष

मांगलिकः

कान्यकुब्ज मंच के संस्थापक संपादक कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय एवम् स्मृतिशेष वासन्ती पाण्डेय के सुपौत्र तथा स्मृतिशेष बालभाष्कर -उमा अवस्थी के दौहित्र **चि. उपेन्द्र** (आत्मजः अजय-अर्चना पाण्डेय) का शुभ-विवाह स्व. रामसुन्दर - सीताश्री शुक्ला की सुपौत्री तथा स्व. हरीगोपाल - सुशीला वाजपेयी की दौहित्री **सौ. कॉ. जयन्ती** (आत्मजाः श्रीमती चन्द्रा एवम् स्मृतिशेष राजरतन शुक्ल) के साथ **22 नवम्बर 2019** को सादगी एवम् उल्लास सहित सम्पन्न। **'दिन में फेरे, दिन में भोजन, दिन में चढ़े बारात'** के अनुसार सभी वैवाहिक कार्यक्रम लोकाचार के साथ शास्त्रीय विधि से सम्पन्न हुये। सायं काल आशीर्वाद समारोह में वर-कन्या पक्ष के सगे-संबंधियों, मित्रगण तथा समाज के प्रतिष्ठ महानुभावों ने वर-वधू को उज्वल-सुखमय जीवन का शुभाशीष दिया। **ॐ स्वस्ति**

Showroom : 9992441790
Timing : 11 a.m. to 7 p.m.
VERMA ELECTRONICS
A Complete Showroom For
LED, Plasma, Air Conditioner, Washing Machine,
Microwave Oven, Water Purifier
8, Palika Bazar, Rohtak - 124001
E-mail : vermaelectrohtak@rediffmail.com
SAMSUNG
Panasonic
ONIDA
VOLTAS
cromax
Kelvinator
BLUE STAR
BLUE STAR INFOTECH

आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय स्मृति सम्मान

शारदा-सम्मान

ऊर्जावान और संभावनाशील साहित्यकार डॉ जीवन शुक्ल (कन्नौज) विचारक, प्रबुद्धअध्येता और विद्वान मनीषी हैं। ओजस्विता और उदार हृदय के प्रतीक शुक्ल जी किसी को भी बड़ी सहजता से अपना बना लेने में प्रवीण हैं। सदव्यवहार एवं निष्कलुष सरल स्वभाव ने उन्हें सबका प्रियभाजन बना दिया। सादा जीवन उच्च विचार उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से चरितार्थ होता है। अपनी कालजयी कृतियों के परिणाम स्वरूप **'कीर्तिर्थस्य जीवति'** सूक्ति चरितार्थ करने वाले इस विद्वान ने अपने शील, गौरव, विलक्षण प्रतिभा एवं साहित्यिक साधना द्वारा जो अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत किया है वह प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है। उनके पास अदम्य जिजीविषा और औपचारिकताहीन संगठनात्मक क्षमता, भाईचारा और स्वप्नदर्शिता है। वे अवगुणों की जड़ें उखाड़ने के प्रति सचेष्ट भी हैं।

वेद ने गाया भी है- **'सुकृतुः कविः वैश्वानरः'** उत्तम कार्य करने वाला ज्ञानी सब मनुष्यों का हित करने वाला होता है। सशक्त रचनाकार के नाते समाज की मूल्यवान धरोहर हैं। सामाजिक समर्थन और कद्रदानी पर उनका हक बनता है। स्वभाव में जीवंतता और खुशमिजाजी उन्हें एक अच्छा इंसान बनाती है। तभी तो खजुहा के शुकुल घराने के सामान्य परिवार में जन्म लेने वाले शुक्ल जी कन्नौज में सबके चहेते हैं। जीवन में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक सामना कर अपने बलबूते साधारण से असाधारण बने। दृढ़ इच्छाशक्ति से संपन्न शुक्ल जी ने 'क्रांति-संदेश', 'लेखी और देखी', 'कन्नौज केसरी' (जिसके प्रकाशन का श्रेय चि. मनोज शुक्ल को है) द्वारा अभूतपूर्व प्रतिष्ठा अर्जित की। 'दर्पण- दर्पण' के माध्यम से बिना लाग लपेट के खरी-बेबाक बात कहने में वे माहिर हैं।

अपने तर्कों के प्रति निष्ठावान अपने विश्वासों के प्रति ईमानदार उदात्त जीवन जीने वाले शुक्ल जी संबंधों को निभाने व आदर देने वाले महानुभाव हैं। स्नेह व गर्मजोशी से मिलना उनका स्वभाव है। उनके संस्कारों में मनुष्य की नियति से गहरे जुड़ने की प्रवृत्ति है। वैदुष्य, वक्तव्य एवं सौजन्य के मूर्त रूप शुक्ल जी जितने सहृदय, संवेदनशील और विवेकवान हैं, उतने ही दूसरों की सुनने वाले महानुभाव भी हैं। मुझे उनसे सदैव यथोचित आदर, स्नेह-स्निग्ध कृपाभाव ही मिला है। मैं भगवान से उनके निरामय दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ। ❑

(आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय की डायरी से उद्धत)

संत विनोबा-सम्मान

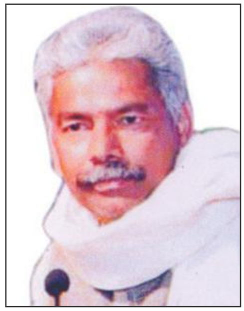

19 वी सदी के अंत में फतेहपुर जनपद के ग्राम कधी कुराय के पंडित भगवत पांडे को अंग्रेजों ने इमली के पेड़ पर फांसी दे दी थी। शेष परिवार विस्थापित हो बांदा जनपद में आ बसा। छठी पीढ़ी में जन्मे 54 वर्षीय उमा शंकर पाण्डेय जी के परनाना स्मृतिशेष से पं. विष्णु प्रसाद दुबे को जनवरी 1930 में अंग्रेजों ने 15 अन्य क्रांतिवीरों के साथ गोली मारकर शहीद कर दिया था। स्मृति स्वरूप खजुराहो के 'चरण पादुका' में स्थित 'शहीद-स्थल' का लोकार्पण राजनेता बाबू जगजीवन राम ने किया था। बाबा रमापति पाण्डेय सर्वोदय आंदोलन को जीवनदान कर संत विनोवाभावे के अनुयायी बन गए। पूर्वजों के आदर्शों पर चलते हुए उमाशंकर जी सामाजिक कार्य को दिशा देने में गतिशील है।

जीवन को एक यज्ञशाला मानने वाले उमाशंकर जी के मातृपक्ष व पितृपक्ष दोनों ही पीढ़ियों में स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीरों का इतिहास समाया हुआ है। मध्यम कृषियोग्य भूमि की आय से ही परिवार-यापन पर सन्तोष रखते हुए इन्होंने विद्यालय की नॉकरी से अवकाशग्रहण कर लिया और जुट गए पूर्व राष्ट्रपति स्मृतिशेष डॉ अब्दुलकलाम के सपनों को साकार करने में। मध्यभारत के शुष्क क्षेत्र बुंदेलखंड के निज गांव जखनी को पानी की किल्लत से बचाने के लिए उन्होंने घरों से बेकार बहने वाले पानी के परम्परागत संरक्षण का बीड़ा उठाया। और बगैर किसी सरकारी या वित्तीय सहायता के 'खेतों में मेड़ - मेड़ में पेड़' की मुहिम रंग लाई और कुछ ही वर्षों में बाँदा जिले का जखनी गांव देश के 'मॉडल जलग्राम' के रूप में जाना जाने लगा। इस काम में उनको भरपूर सहयोग मिला हर जाति, हर उम्र, हर सम्प्रदाय के ग्रामवासियों का। आज सूखाग्रस्त कहे जाने वाले गांव जखनी में हरे-भरे खेतों के बीच बासमती चावलों की रिकॉर्ड पैदावार हो रही है, गांव के तालाब पानी से सराबोर हैं, दुग्ध व मछली पालन ने गांव के मजदूरों का पलायन रोक दिया है। इस अप्रतिम सामुदायिक कार्य से मिले परिणाम पर देश ही नहीं, विदेशों के भी जल-संचयन वैज्ञानिकों के शोध का विषय बन गए। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई, तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत, भारतरत्न नानाजी देशमुख, राजनेता मोहन धारिया, तत्कालीन राज्यपाल राम नरेश यादव, राम नाईक, मदन लाल खुराना, तत्कालीन दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित आदि ने जल ग्राम जख्मी के मॉडल को सराहा था। केंद्रीय जलशक्ति मंत्रालय के

शेष अगले पृष्ट में

मां वासंती पाण्डेय स्मृति महिला सम्मान

जिस व्यक्ति में जितनी अधिक सादगी होती है वह उतना ही अधिक जीवन लक्ष्य की ओर अभिमुख होता है। कानपुर के कस्तूरबा गर्ल्स इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त श्रीमती कुसुम पाण्डेय की सांसों से संगीत की ध्वनि निकलती है। तबला, तानपुरा, हारमोनियम, सितार आदि वाद्य यंत्रों पर उनका पूर्ण अधिकार है। संगीत इष्ट की सत्ता तक पहुंचने का सशक्त माध्यम है। भौतिक युग में तनाव, कुंठा और अवसाद से उत्पन्न तमाम विकृतियों व विषमताओं का निदान संगीत में है। प्रत्येक मानस के जीवन को संगीतमय करने के सदुद्देश्य से श्रीमती कुसुम पाण्डेय पिछले तीन दशकों से 'नटराज कला केंद्र' का संचालन कर रही है। हर आयु वर्ग, हर आय वर्ग के जिज्ञासु संगीत कला में निष्णात होने के लिए शास्त्रीय संगीताचार्य कुसुम जी का शिष्यत्व प्राप्त कर रहे हैं। ज्ञान, गौरव, गरिमा और गुरुत्वाकर्षण के कारण संगीत के छात्र स्वयं उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। आप के निकट रहने वाला व्यक्ति नृत्य, संगीत, इत्यादि सांस्कृतिक एवं कलात्मक विद्याओं के बारे में बिना प्रयास किए ही बहुत कुछ जान लेता है। बॉलीवुड सिंगर अंकित तिवारी एवं धारावाहिकों में संगीत देने वाली आशिता अवस्थी ने भी कुसुम जी से संगीत की बारीकियां सीखी।

कानपुर देहात डेरापुर तहसील के स्मृतिशेष पंडित रघुनाथ प्रसाद द्विवेदी अयोध्या में गुरु रामदास जी के सानिध्य में 'ध्रुपद-धमार' व 'पखावज' में निष्णात थे। ग्वालियर राजवाड़े के राज्याश्रित पंडित रघुनाथ प्रसाद द्विवेदी को ब्रिटिश हुकूमत ने 'संगीत-विभूषण' से विभूषित किया था। बड़े भाई डॉ रमाकांत द्विवेदी फिरोजाबाद डिग्री कॉलेज में संगीत के प्रोफेसर रहे। उन्हें 38 संगीतज्ञों को पीएचडी एवं डीलिट कराने का गौरव प्राप्त है। जाहिर है जून 1950 में जन्मी कुसुम जी के कानों में शिशुकाल से ही वाद्य यंत्रों की सुमधुर ध्वनि गूंजने लगी थी। शारदा नगर कानपुर स्थित उनके बंगले में आज भी सुर संगीत की सरिता बहती है। बगीचे में लगे तरह-तरह रंगों के फूल-पौधे, तुलसी का बिरवा, पूजन कक्ष में राधा-कृष्ण की मूर्ति संगीत की ध्वनि से जीवंत हो उठती है। शाम के समय अपने ठिकानों पर जाते पक्षियों का झुंड उनके बगीचे के ऊपर कलरव करने लगता है।

वर्ष 1967 में उन्नाव जनपद के ग्राम बनी कोटवा के ग्राम प्रधान रहे स्मृतिशेष गंगासागर पाण्डेय के सुपुत्र डॉक्टर केदारनाथ पाण्डेय (एमबीबीएस) के साथ विवाहित कुसुम जी की उम्र उस समय सिर्फ 16 वर्ष की थी। तमाम पारिवारिक मर्यादाओं का पालन करते हुए उन्होंने अपनी आगे की शिक्षा व संगीत के प्रति तन्मयता को छोड़ा नहीं और पारंपरिक जीवन व्यतीत करते हुए अपनी साधना में तत्पर रहीं। कानपुर मेडिकल कॉलेज से सेवानिवृत्त डॉ पाण्डेय व कुसुम पाण्डेय दंपति को दो सुयोग्य पुत्रों के लालन-पालन का गौरव प्राप्त है। श्रीमती रचना से विवाहित बड़े पुत्र दीपक पाण्डेय जनरल इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी में निदेशक हैं तथा युवा पुत्र तनय के साथ ग्रेटर नोएडा में निवसित हैं। दूसरे पुत्र संदीप महिंद्रा ऑटो मोबाइल्स में चीफ मैनेजर के पद पर प्रतिष्ठित हैं श्रीमती सुरुचि से विवाहित संदीप जी की पुत्री 11 वर्षीय तन्वी व 7 वर्षीय तनुज का विद्यार्थी जीवन चल रहा है।

संगीत में संवेदना के भाव रहने के कारण श्रीमती कुसुम पाण्डेय किसी की दीदी हैं, भाभी है, बहन है, चाची हैं, ताई हैं, नानी है, दादी है, सारे आत्मीय सम्बोधनों के पीछे उनके स्वभाव आचरण में अनन्य आत्मीयता और आतिथ्य भाव का संस्कार जुड़ा है। हम पाण्डेय-दम्पति के सुखी स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करते हैं।

प्रस्तुतिः रश्मि मिश्रा, काकादेव, कानपुर।

पृष्ठ 19 का शेष-

सचिव यू पी सिंह, नीतिआयोग, प्रदेश सरकार, जिला प्रशासन आदि ने जखनी को मॉडल जलग्राम मानकर देश के अन्य 1030 गांवों में इसका प्रयोग करने की संस्तुति की है। प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इस उपलब्धि को प्रमुखता दी। उमाशंकर पाण्डेय जी को अपने सफल प्रयोग पर भरपूर सराहना प्राप्त हुई।

ऋषि और कृषि परंपरा की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक, सकारात्मकता के पक्षधर पंडित उमा शंकर जी गांधी-विनोवा को अपना आदर्श मानते हैं। पद्मविभूषण स्मृतिशेष निर्मला देशपांडे के कृपा पात्र सर्वोदय कार्यकर्ता पाण्डेय जी गांव में ही निर्मला देशपांडे सर्वोदय ट्रस्ट के प्रबंधक रहते हुए एक विद्यालय का संचालन कर रहे हैं। साथ ही अनेकों सामुदायिक और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। वर्ष 1999 में उप्र के तत्कालीन राज्यपाल सूरजभान द्वारा लोक सेवक सम्मान प्राप्त पांडेय जी को उप्र के तत्कालीन राज्यपाल रोमेश भंडारी ने बुंदेलखंड सिटीजन फाउंडेशन का अध्यक्ष नियुक्त किया था। अनेकों सरकारी एवं गैर सरकारी समितियों से जुड़े उमा शंकर पांडेय जी आज भी सामाजिक परिवर्तनों के लिए सामुदायिक कार्यों एवं परंपरागत साधनों को वरीयता देते हुए अपने संकल्पित कार्यों को फलीभूत करने में तत्पर हैं।

कवि जी

– श्री बालकृष्ण पाण्डेय (कीर्तिशेष)

गौर वर्ण लम्बी इकहरी देह, विहंसता चेहरा, तीसों दिन बबुआ बने कवि की महक जवार के किस कोने में नहीं गमक रही है? सरलता भावुकता मिलनसारिता आपको विरासत में मिली है। दरबार और रईसों के साथ ने स्वभाव को राजसी बना दिया है।

आपके गीतों में दर्द है, कचोट है अभावों की चुभन है बढ़ते परिवार के प्रति जिम्मेदारी न निभा सकने की कुण्ठा है। आपकी बोली में एक मिठास शालीनता शिष्टता और दरबारी टोन समाई रहती है।

आप सबके हैं, दादा, भइया, अम्मा, बाबा मुन्ना कहने वाले पंडित जी अपने भोले के साथ सब जगह हाजिर है। सबके दुःख सुख में शामिल हैं। विद्यार्थियों का प्यार और आदर उन्हें मिला है। वे सबकी बढ़ती के साथी है। सबका मंगल उनकी कामना है।

उनका परिचय क्षेत्र व्यापक है। सबके हृदय में बैठने की कला से भिज्ञ हैं उनका मोहक सुरुचिपूर्ण स्वभाव सबको भा जाता है।

पत्रकारिता उनकी 'हावी' है। पिछड़े क्षेत्र की समस्याओं को मुखरित करने में उन्हें कमाल है। गूँगे इलाके की वाणी के रूप में ख्याति प्राप्त इस कवि का सत्संग आपको विभोर कर देगा।

कौलीन्यता के गर्व से दीप्त कवि संकीर्णता से कोसों दूर है। संवेदनशील कवि के प्रेम और स्नेह की परिधि व्यापक है। शबरी के राम जिसका आदर्श है, वह खान-पान में एक मात्र प्रेम की चाशनी देखता है।

स्वास्थ्य के प्रति सतत् जागरूक कवि नियम बद्धता में बेजोड़ हैं। जाड़े के समय शौच के लिये 5 बजे जंगल निकल जावेंगे दूर बहुत दूर, वही समय है कवि के चिन्तन का।

बाप ने जिस दिन दम तोड़ा है उस दिन की तो नहीं कह सकता अन्यथा उनकी दाढ़ी रोज बनती है। धरती पर नंगे पैर उन्हें किसी ने देखा नहीं, जूता खड़ाऊँ बारी बारी से उनके पैरों की शोभा बढ़ाते हैं। भोजन के बाद सिर पर कंधी फेरना, 60 मिनट बाद पानी पीना आदि अनेक छोटे मोटे स्वास्थ्य विषयक नियम उनके जीवन में बुरी तरह घुल मिल गए हैं जिससे कवि को त्राण नहीं।

बाजार के बनियाँ जानते हैं कि कवि जी इलाइची के सिवा और कभी कुछ नहीं खरीदते। इलाइची का एक-एक दाना वे पूरी मंडली में नजाकत से पेश करेंगे। मित्रों के साथ बाहर जाने पर पहले आप चढ़ें, पहले आप में 'ट्रेन' और 'बस' छोड़ देना सामान्य बात है।

उनका निर्माल्य निकेतन मौसमी पुष्पों से लहराता रहता है। और कुछ नहीं तो विदाई में हँसते हुए आपको खिला हुआ फूल तो थमा हो देंगे।

नाराजगी हो या स्नेह, तुक भिड़ाते हुये धरा प्रवाह एक सरीखे अलंकारिक शब्दों के प्रयोग में आपको कमाल है, आपके संबोधन में एक ललक मिठास और आत्मीयता समाई रहती है।

मानस आपका प्रिय ग्रंथ है 'श्री राम शरणं प्रपद्ये' आपका मोटो है 'हरि इच्छा बलीयसी' पर आस्था है। भावुकता आपकी पूँजी है। कविता व्यवसाय नहीं हृदय की पुकार है। आप ठगे भी गये हैं। अपने प्राप्य से आपको दूर भी रखा गया है। भाग्य और भगवान के नाम पर आप सब भुगतते रहे।

व्यक्तिगत जीवन के अभावों दर्दों को सहलाने में कवि का सार्वजनिक रूप राम बाण का काम करता है। सबके बीच अपने को भूलने की क्षमता संजोए कवि को परखने के लिये स्निग्ध दृष्टि चाहिये। उनके 'हम दृढ़ ब्रती' 'हमारा तिरंगा न झुकेगा' दर्जनों गीत बच्चों को कण्ठस्थ हैं। उस मौन साधक को अपनी रचनाओं को एकत्र करने, उन्हें क्रमवार छांटने और किसी प्रकाशक को सौंपने का अवकाश कहाँ?

भाई हैं, भतीजे हैं, गाँव है, घर है, खेत हैं, ससुराल है, पत्नी है, पुत्र है, बिटिया है, दामाद है, बन्धु बांधव, नाते, रिश्तों से घिरे हैं, फिर भी ऐसा लगता है, कवि अकेला है, निर्मम है, नीरस है, विदेह है, संसार में रहते हुए भी उससे दूर है। उसे शांति नहीं, तृप्ति नहीं तभी एक अतृप्त लालसा संजोए वह दूर क्षितिज के पार अपने सपनों की दूनियाँ में खोया रहता है। जहाँ अनुभूतियाँ शून्य हो जाती हैं और आवश्यकताएँ सूख जाती हैं।

गाँव के बगीचे में, तालाब के किनारे चाँदनी रात के एकान्त में उसने घंटों गुजारे हैं, गुनगुनाया है। अपने से बात की है क-ख और गिनती से लेकर तुलसी भूषण की शैली रटाने वाले पंडित जी के सैकडों शिष्य देश भर में छिटके है। दुर्वासा और

सुतीक्षण की कोटि के अपने पंडितजी को वे किसी कीमत पर भूल नहीं सकते है। छात्रों से उनका लगाव टूटता नहीं है वे सबके तिलक और विवाह की पूड़ी खाने का भी समय निकाल लेते हैं सैकड़ों संरक्षकों से उनका साबका पड़ता है।

महल और झोपड़ी, नेता और महात्मा, राजा और प्रजा मूर्ख और पंडित सबकी प्रवृत्तियों से वाकिफ इस अलबेले कवि की धाक जमी है। तुनक मिजाज कवि को गरम और ठंडा होने में देर नहीं लगती।

उनकी व्यस्तता पर तरस आता है। कहाँ जाना है कहाँ पहुंच जाय। क्या करना है - क्या कर गुजरे, क्या लिखना है - क्या लिख मारें, यह ब्रह्मा भी नहीं जानते।

कसौटी की हर एक पगडंडी का जानकार इसने कितनी पद यात्रा की है, इसका लेखा आसान नहीं। शहर का चक्कर लगाये बिना इन्हें चैन नहीं। शहर जाकर बिना सिनेमा देखे लौटने वालों पर आपने सदैव तरस खाया है।

सुंदरता और सुघड़ता के प्रेमी कवि चिरसुवा हैं उनका राग बरबस उनकी रचनाओं पर फूट पड़ता है वे अपने को छिपा नहीं सकते वैसे वे शब्दों से टकराने में कुशल हैं आप कितना भी कुरेदें वे अपना कुछ न कुछ छिपाये रहेंगे।

मेहमान नवाजी में, बेजोड़ हैं छोटा हो या बड़ा बिना उसे कुछ खिलाये या कुछ दिये उन्हें चैन नहीं। चाहे दो बताशा ही हाथ पर रख दें अथवा इलाइची के चार दानें। आदमियत की कद्र करना कोई आपसे सीखे?

जेब खाली होते हुये भी उनमें नवाबों की सी ठसक है। राजा कसौटी के मुंशी फिर शिक्षा और चलते फिरते मेहमान के आगे पीछे हाथ जोड़े हुकम मानने वाले चेले चाहिए ही। विशाल परिवार में जिसका व्यक्तित्व चमकीला हो, शुरू से ही कमाऊ पूत रहा हो, उसके नखरे सबको सहने ही पड़ेंगे।

देखिए हाथ जोड़े आत्मीयता से पूरित कविजी की शालीन भव्य मूर्ति आपका स्वागत उन्मुक्त हृदय से करने को प्रस्तुत है। ❑

पण्डित कौन? मूढ़ कौन?

साक्षात् धर्मरूप विदुरजी किसी ऋषि के शाप से शूद्रयोनि में उत्पन्न हुए थे, पर वे परम धर्मनिष्ठऔर कृष्ण एवं ब्राह्मणों के अत्यन्त प्रिय थे। उन्होंने महाराज धृतराष्ट्र को धर्म एवं नीति के रहस्यों का उपदेश करते हुए अनेक प्रकार से पण्डित और मूर्ख के लक्षण समझाये हैं। वे कहते हैंः आत्मज्ञान, उत्तम कर्मारम्भ, सहिष्णुता तथा धर्म में स्थिरता ये दिव्यगुण जिसे पुरूषार्थ से विचलित नहीं होने देते, वही पण्डित हैं। जो सदैव उत्तम कर्मो का सेवन और निषिद्ध कर्मों का परित्याग करता है। वही पण्डित है। जिसके कृत्य या मंत्र (मंत्रणा) को काम पूरा होने तक दूसरे लोग नहीं जानते, वही पण्डित है। शीत, उष्ण, भय राग, समृद्धि या असमृद्धि जिसके कार्य में बाधा नहीं डाल पाते, वही पण्डित है। जिसकी लौकिक बुद्धि धर्म और अर्थ का अनुसरण करती है, जो काम की अपेक्षा अर्थ को अधिक महत्व देता है, जो विवेकपूर्वक शक्ति के अनुसार ही काम की इच्छा रखता और वैसा करता भी है और किसी वस्तु को तुच्छ समझकर निरादर नहीं करता, वही पण्डित है। जो शीघ्र ही समझता, किन्तु देरतक सुनता है और जाकर कर्तव्यबुद्धि से पुरूषार्थ में लगता है, कामना से नहीं, बिना किसी के सम्बन्ध से कोई बात नहीं करता, दुर्लभ वस्तु की कामना नहीं करता, खोयी हुई वस्तु के बारे में चिन्तित नहीं होता, आपत्ति से मोहित नहीं होता, निश्चयकर कार्यरम्भ करता है, परन्तु आरम्भ कर पुनः बीच में रूकता नहीं, जो समय व्यर्थ नहीं खोता और अपने चित को वश में रखता है, वही पण्डित है।

नियिचत्य यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः।

अवन्ध्यकालो वश्यात्मा सवै पण्डित उच्यते।।

मूर्खो के लक्षण बताते हुए बिदुरजी आगे कहते हैंः जो वेदादि शास्त्रश्रवण-जनित ज्ञान से हीन होकर भी गर्व करता है, दरिद्र होकर भी ऊँचे मनोरथ करता है, बिना काम किये धन पाना चाहता है, वह मूर्ख है। जो अपना कर्तव्य छोड़कर दूसरों के कर्मों का आचरण करता है, मित्रों से मिथ्या-व्यवहार करता है, न चाहनेवालों को चाहता है, बलवान् से द्वेष करता है, अमित्र को मित्र बनाता है, तथा मित्र से द्वेष करता और उसे कष्ट देता तथा निकृष्ट कर्म आरम्भ करता है, सब पर सन्देह करता है, वह मूढ़ है। जो अपने कृत्यों को व्यर्थ में ही प्रचारित करता है, सब पर सन्देह करता है, क्षिप्र-करणीय कार्य में देरी करता है, पितरों का श्राद्ध तथा देवताओं की अर्चना नहीं करता, मित्रलाभ नहीं कर पाता, बिना बुलाये भीतर प्रवेश करता और बिना पूछे ही बहुत बोलता तथा अविश्वस्त में विश्वास करता है, वह मूढ़ हैः

अनाहूतः प्रविशति अपृष्ठो बहु भाषते।

अविश्वस्ते बिश्वसिति मूढचेता नराधमः।।❑

महादेव शिव

वे निर्जन में रहकर भी जन-जन से जुड़े हैं। दुर्जन के लिए रोष-रत रुद्र हैं, विनाशक हैं (ऋग्वेद-2/23)। 'कोपित्त' हैं, सज्जन हित सुजन और स्वजन है वे। उपासक के लिए तो वह रस-रूप अनूप तोष वाले हैं, धन-साधन हैं, पर 'कपर्दिका' (कौड़ी) भी नहीं रखते। 'कपर्दी' या जटाधारी हैं। आराधन में बंधन नहीं। धतूरा या बेलपत्र से भी पूरा सौभाग्य दें। वपु कोमल कलित कौशेय हो या चर्म। वह 'पशुपति' हैं, 'कालसिंह' भी, 'महाकाल' भी हैं। विष पीकर, सुधा पिलाते हैं। योगी हैं, वैद्य हैं। (ऋग्वेद-2/3/34)।

ब्रह्मांड में समाए, सबको समोए हुए हैं। उनका प्रतीक लिंग ब्रह्मांड का ही प्रतिरूप है। भ्रमवश लोग उसे शिशन का आकार मानते हैं। 'स्कंदपुराण' में स्पष्ट उल्लिखित है (चिदंबरम में कावेरी तट पर आकाश रूप में आकाश लिंग के दर्शन होते हैं।) -

आकाशं लिंगमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयः सर्वदेवनाम लयनाल्लिंगमुच्यते।।

आकाश लिंग है। धरती उसका आधार है। प्र + लय की वेला में सब उसी में लय होते हैं। सर्जन काल में सब भूत या प्राणी उसी विश्वरूप भूत 'भावन' से उदभूत होते हैं। उनका आदि निवास हिमनग था। फिर वे कैलाश के पास मुंजवान गिरी पर गिरिजा के साथ रहने लगे। वहीं कुबेर ने उनकी आराधना की थी। वहां वे पार्वती के साथ वन एवं गुफाओं में अदृश्य रह विचरते, रमते हैं। (महाभारत अश्वमेध पर्व 8.1/42)। विष्णु पुराण (2/2) में हिमनग तथा मेरु को एक माना गया है।

उनका वाहन वृष या वृषभ है। वह उन्हें अतिप्रिय ही नहीं उनसे अभिन्न है। वृष शक्ति का आगार ही नहीं, काम का प्रतीक है। 'रति-रमण'ने काम को सहज साध लिया है। नाथ कर, उसके नाथ बन गए हैं। केलि कर भी नकेल डाल दी है। तब 'कामजित्' कहलाए। (रघुवंश- 2/33)

नटराज और नृत्य

संगीत के चार प्रमुख प्रवर्तकों में नटराज भी हैं। संगीत के तीनों अंगों- गीत, नृत्य और वाद्य में नर्तन मुख्य है। उसमें वाद्य के समावेश के साथ, गीत का भी यदा-कदा योग हो जाता है। नटेश नृत्य की दोनों शैलियों- तांडव एवं लास्य के उद्भावक रहे। उन्होंने तण्डु मुनि को इसका प्रशिक्षण दिया। उनके नाम पर 'तांडव' चला। 'तांडव' नृत्य ताल प्रधान है 'लास्य' में भाव की प्रधानता रहती है। खजुराहो तथा रीवा में विद्यमान शिव की क्रमशः अष्टभुजी तथा षोडशभुजी प्रतिमाएं नृत्य-रता हैं। नाट्यशास्त्र में नर्तन की 108 मुद्राएं उल्लिखित है। चिदंबरम में नटराज देवालय में वह गोपुरम पर उत्कीर्ण है। दक्षिण में देव ग्रहों के समक्ष नट- मंडप भी रहते हैं। बंगाल की प्रतिमाओं में नटराज के सन्निकट स्थित नंदी नृत्य-निमग्न है। (साभारः चक्रवाक - 15/16 अंक)

ये कानपुर है...

कंपू एक शहर है भैया।
जिसमें बहती गंगा मैया।
फूल बाग में फूल नहीं हैं।
कोई यहां पर 'कूल' नहीं है।
ट्रैफिक करता ताथा-थैया।
कंपू एक शहर है भैया।
झाड़े रहो कलेक्टर गंज।
पीके केसर वाली भंग।
मस्त यहां के लोग लुगईया
कंपू एक शहर है भैया।
बात-बात पर लड़ते लोग।
गुटखा खाकर मरते लोग।
कवि यहां के सारे बढ़िया।
कंपू एक शहर है भैया।
शहर खांसता, शहर हाँफता।
लेकिन हिम्मत नहीं हारता।
कैसी रचना रची रचैया।
कंपू एक शहर है भैया।
जेके मंदिर सुंदर-सुंदर।
शांति खोज लो इसके अंदर।
इसमें बैठे कृष्ण कन्हैया।
कंपू एक शहर है भैया।

– डॉ. अवधेश दीक्षित
9839086442

ललित निबंध (बसंत विशेष)

चैत चित्त, मन महुआ

– नीरजा माधव, वाराणसी

आज जब मार्च-अप्रैल दीवार पर टँगे कैलेंडर में तारीखें बन दिन-रात घायल पाखी की तरह फड़फड़ाते रहते हैं, शेषनाग के सहस्र फणों पर टिकी गोल मटोल धरती को कई हजार फणों वाले धरती के कुछ मानवरूप विषधर सपूत वैश्वीकरण के नाम पर धर्म की सनातनता और संस्कृति की अनवच्छिन्नता को विश्व ग्राम की छोटी इकाई में बांध देना चाहते हैं, मैं फागुन और मधुमास (चैत) की बातें करने बैठी हूँ। धरती की कोख की सरसता सोख लेने वाले यूक्लिप्टस के जमाने में मदनर टपकाने वाले महुए के लिए मेरा मन बिसुर रहा है। लोग हँस रहे हैं मेरे बौराने पर।

अक्सर युवावस्था बीत जाने पर लोग अतीतजीवी हो जाते हैं, पुराण बांचने लगते हैं। पुराण यानी जो प्राचीन है। मेरे साथ भी कुछ वैसा ही हो रहा है। समवरिया लोग सलाह देते हैं - नए युग के साथ कदम मिलाकर चलना सीखो, अन्यथा पिछड़ जाओगी। मैं सोचती हूँ काश, ऐसा ही होता। मैं मुड़कर देख आती बचपन की अमराई। चैत्र-वैशाख का वह खलिहान। गेहूं की डाँठ पर झरकर गिरे नन्हें नन्हे आम के टिकोरे। उन टिकोरों को लूटकर इकट्ठा करने की एक चाहना, बस चाहना। एक ऐसी चाहना जिसमें उसकी उपयोगिता या अर्थवत्ता का कोई मतलब नहीं। बस उसे अपना बना लेने की एक ऐसी इच्छा जो इच्छा से पूर्व भी कुछ नहीं, पश्चात भी कुछ नहीं। इस निर्विकर इच्छा की साधना में अपने समवरिया साथियों से लड़ाई-टंटा, गेहूं की सूखी बालियों पर भहरा पड़ने से खुले हाथ-पैरों में चुभते-करकते टूंडे (बालियें पर उगे रेशे) आज सुख देते हैं। स्मृति में खट्टुआ, सुगठआ, कंकड़हवा, इंगुरहवा आमों की सघन छांव और उनके नीचे खटिया डाले गांव के चाचा और भइया का दोपहर भर ताश के पत्ते फेंटना, अपनी चारपाई थोड़ी दूर ले जाकर मुंह फेरे लेटे बाबा की भुगभुनाहट और गमछे से आक्रामक मक्खियों की सेना को दूर भगाना सजीव हो उठता है।

छोटे होने के नाते हमें ताश के पत्तों को छूना मना था और सूरज देवता के तेवर के कारण बाहर घूमना भी मनाही के क्षेत्र की बातें। दोपहर में घर के भीतर हमारी चंडाल चौकड़ी की धम-धम और उठापटक से नींद में व्यवधान की संभावना मात्र से ही हमें एक काम सौंप दिया जाता - जाओ, गेहूं की डाँठों से नरई निकाल ले आओ। बेना (हवा करने के लिए हाथ वाला पंखा) बनाने के लिए नरई निकालते हाथ आज कंप्यूटर के 'माउस' या वातानुकूलित यंत्र के स्विच के साथ यह आत्मीयता नहीं पा सके हैं जो धागे से परस्पर गुंथे नरई से बने बेना ने दिये। खड़ी दोपहर में सीवान में नाचती धूप देखना, धूल और हवा के छोटे से बवंडर में किसी अदृश्य शक्ति के अस्तित्व के आभास मात्र से अपने सिर पर

हाथ रखकर 'तू मम्मा हम भैने' (तुम मामा हो और मैं तुम्हारा भांजा) का बुदबुदाकर जाप करते हुए उस अनाम अदृश्य आसुरी शक्ति को हरा देने का भाव आज कहीं हेरा गया है। संबंधों की मिठास और कोमलता कही बवंडर में खो गयी है। जिन संबंधों का नाम सुन लेने मात्र से आसुरी शक्तियाँ चरणों में लोट जाती थीं, प्यार की गुहार लगाने लगती थीं, उन्हीं संबंधों को खोजने के लिए मन अकुला रहा है। तमाम स्मृतियां चित्त को चैत्त के भोर की पुरवा की तरह धीरे धीरे सहला भी रही हैं और पोर पोर में टीस भी उठा रही हैं। मन महुए की तरह रस से भरा भरा लगातार भींग रहा है।

हमारे यहां चैत और बैशाख दोनों ऋतु बसंत हैं, ऋतुराज हैं। एक ऐसा राजा जिसके आने की दुंदुभि दो महीने पूर्व से ही बज जाती है। माघ-फागुन उसकी अगवानी के महीने हैं, अभिनंदन के मास हैं। चैत की निचाट दोपहर देखकर कभी-कभी सोचती हूं, कैसा है यह ऋतुराज? फूलों और नव पातों के बंदनवार तो झूलते रह जाते हैं और पलक पांवडे बिछाये हरी-भरी गेहूं की बालियाँ सूखकर भूरी हो जाती हैं। अपने जीवन रस से ऋतुराज के चरण प्रक्षालित कर निःशेष हो जाती है। ऐसी निःशेषता कि शीश कटाकर भी उफ नहीं। बोझ बनकर भी बोझिल नहीं, बल्कि कृषक के मन का उल्लास बन जाती है, होलिका में भुनकर प्रसाद बन जाती है, बेना की बतास बन जाती है और पयार चलते बैलों के जाबा के भीतर की फेनील उजास बन जाती है। सबकी आकांक्षा और तृप्ति बनने के बाद ही उस नये अनाज से भगवती शीतला का बसियौरा होता हैं। नवान्न का गुलगुला, पूड़ी, हलवा और अलोना पकौड़ी का भोग लगाया जाता है। चैत्र शुक्ल अष्टमी की भोर से देवी मां की बाट पूजी जाती है। उन्हें घर में न्योता जाता है। श्री और माया से भर उठता है घर, खलिहान। कोठरी और कोठार में अन्नपूर्णा विराजने लगती है। दीवार के ऐपन (पिसे चावल के घोल में डूबोकर हथेली की छाप) में रिद्धियां-सिद्धियां चौकस खड़ी हो जाती हैं। रात्रि जागरण के साथ पचरा के बोल फूटे पड़ते हैं गृहणियों के मुख सेः

निबिया की डरिया मइया डालेली झलुअवा हो

कि झूली झूली ना। महया मोरी गावेलीं

गीतिया हो कि झूली झूली ना।

बसंत है, इसलिए माँ के भीतर का भी उल्लास छलक उठता है और वह गुनगुना उठती हैं। सावन में राधा संग प्यारे कृष्ण

कदंब की डाल पर झूला झूलते हैं लेकिन भगवती के लिए वसंत में ही झूला डाल दिया जाता है, वह भी नीम की डार पर जिसमें अभी अभी नये नये मुलायम पात उकसे हैं, नन्हें नन्हें सफेद फूल एक विचित्र सी भीनी कसैली गंध के साथ खिलने को आतुर। उनकी काषाय गंध में एक ताजगी, निर्मलता रहती है, जो भीतर तक जाकर सब कुछ स्वच्छ कर देती है, ताजा कर देती है। ऐसी नीम की डार पर माँ जगदम्बा झूला झूलते हुए गीत गाती है, और उनके गीतों समेत गृहणियां उन्हें अपने हृदय में उतारती हैं, निहारती हैं, अपने सुख-दुख सुनाती है और वरदान मांगती हैं। वसंत इसीलिए सबको मोहक लगता है, मादक लगता है क्योंकि यह जगदम्बा के आनंद का उद्घाटन हैं।

पुष्पधन्वा को शिव ने भस्म कर डाला और स्वयं कामारि बन बैठे लेकिन उसी के साथ वे कामेश्वर भी बने। सभी में उल्लास और सौंदर्य की प्रीति जगाने वाले को एक शरीर में रहना शोभा देगा क्या? इसलिए उसकी देह के बंध को भस्म कर उसे अनंग बना दिया। उल्लास और आनंद पर सभी का समान अधिकार हो, केवल एक के हिस्से क्यों अधिक आये? कामदेव वसंत बन बैठा, मदन मादकता बन बैठा, अनंग आनंद बन दिलों में बस गया, मन में समा गया। स्व को भस्म कर सभी का बन जाना, सभी में बंट जाना ही तो प्रेय और श्रेय दोनों हैं। आदमी जितना ही स्वयं को लोगों में बांटता चलता है, उतना ही अधिक अपना बनता है। वसंत इसीलिए सबका अपना है। माँ परांबा भी इसलिए जगज्जननी हैं, क्योंकि वह सभी में अपने को बांटती हैं, अपना वासंती आनंद बांटती हैं, अपना उल्लास और अपनी ममता की प्यास बांटती हैं दो बूंद जल मांगती हैं अपने भक्तों सेः

सूतल हऊ कि जागेली मलिनिया हो
कि बून एक न,
हमके पनिया पियावा मालिन
बून एके न।।

मालिन उनकी प्रिय है, क्योंकि वह उनके लिए फूल तोड़ती है। जो भी भगवती के लिए बेला, अढ़उल के दो फूल चुनता है, वह उनका प्रिय हो जाता है। राग और भक्ति के दो फूल। उसी से उनकी प्यासं भी बुझती है, भक्तवत्सलता की प्यास। बेला का उल्लास गंध बन हवाओं में घुल-मिलकर सबकी प्राणवायु बन जाता है तो सूर्यरश्मियों का ताप सोख अढ़उल भी चटक लाल रंग का तेज-पुंज बन सबकी नसों में दौड़ उठता है। यह सब होता है चैत्र में। चित्त उत्कंठित हो जाता है। सुधियां व्याकुल होने लगती हैं। मृगछौना सा मन कुछ अधिक ही भटकने लगता है। भरकर भी खाली होने का भाव, कुछ छिन जाने की अनुभूति और सब कुछ पाकर भी कुछ हाथ में न होने का पछतावा, जैसे लगता है एक स्वप्न में वह मिला लेकिन आंखें खुलते ही कुछ भी नही होने का भाव चैत का स्वभाव है। उन्मन चित्त को एक आकुल मन के साथ बांधकर फूलों में, पत्तियों में छिप मुस्कराता है चैत्र। संयोग के क्षण पखेरू बन घोंसलों में दुबक जाते हैं ओर विरह के दुरंत क्षण ग्रीष्म की निचाट दोपहरी बन जाते हैं। **'फागुन दुई रे दिना, दिन चारिक चइत को'** के नये अर्थ खुलने लगते हैं। गंवई मन के साथ ही नागर मन भी चैती के बोलों में अपना ठौर तलाशने लगता है, टीस का मरहम जुटाने लगता हैः

रहि रहि पीर जगावे हो रामा, चइत बयरिया।।
भोर भिगुसहरा के, आधी आधी रतिया,
सुधि क सिकरिया बजावै हो रामा, चइत बयरिया।
अँगुरी के पोरे पोरे दिनवा गिनावे,
अँजुरिन किरिया धरावे हो रामा, चइत बयरिया।
मातल महुआ, मदन रस टपके,
रसगर भीजे उमिरिया हो रामा, चइत बयरिया।।

बचपन में गांव में सुबह सुबह महुए के पेड़ के नीचे पीले पीले फूलों का बिछौना देखा था। प्राइमरी पाठशाला के खुले प्रांगण में तीन-चार महुए के पेड़ थे। महुए के बांट-बखरे को लेकर बीननहारियों के बीच होती तक-झक भी सुनती थी, लेकिन तब महुआ केवल महुआ था। उसका रस मन में भिना नहीं था। रसगर उम्र उसके मदन-रस में भींगी नहीं थी। आज जब महुआ की वही गंध खोजने निकली तो मुश्किल से एक पेड़ सारनाथ के केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय की ओर जाने वाली सड़क के किनारे खड़ा मिला। कुछ देर मंत्रमुग्ध सी उसके नीचे खड़ी होकर उसे निहारती रही। प्रौढ़ावस्था की रसवंती देह को भींगते देखती रही। बचपन के चित्त के भिनी उस गंध को टटोलकर इससे मिलान करती रही। जिन्हें सारथी बना जीवन-रथ की डोर हमेशा-हमेशा के लिए हाथों में थमा दी है, वही अपने माधव साथ। संपूर्ण रूप से राधा बन पायी या नहीं, इसका आकलन करने बैठती हूं तो चित्त में समायी राधा हँस पड़ती है। विद्युत झालरों की चाकचिक्य में महारास की स्निग्ध चांदनी रात ढूंढ़ती हो? मोटरगाड़ियों और ध्वनि विस्तारकों की चीख-चिल्लहट में माधव की मुरली की टेर सुनना चाहती हो? बारूदी गंध में शिरीष की गंध पकड़ना चाहती हो? यांत्रिकता की अंधी दौड़ में मेरा भाव ढूंढती हो? चलो, चैत में चित्त उन्मन हुआ, सब कुछ होते हुए भी कुछ न होने की कसक जागी, रसवंती उम्र को मेरे कलावंत कृष्ण याद आये, यही मेरे लिए पर्याप्त है। कहते हु एक अंश राधा-भाव का मेरे मन के कोने में पलाश सा दहक उठता है, बेला सा गमक उठता है, पुरानी प्रीत की तरह कसक उठता है। कुरुक्षेत्र में कृष्ण के सामने ही रुक्मिणी से अपनी प्रीति की पुरातनता बनाती हुई राधा की सहज मुखाकृति सजीव रूप ले लेती हैः

लरिकाई की प्रीति कहो सखि कैसे छूटत।

प्रीति के इस निर्भीक स्वीकार पर हतप्रभ रुक्मिणी और

बांके बिहारी की स्निग्ध मुस्कान विद्युत सी कौंध उठती है महुए के नीचे। टिप् टिप् झर उठते हैं रस से भरे महुए राधा के पांवों में। उसकी सहज प्रीति पर सरसता और माधुर्य अपने पूरे अस्तित्व के साथ न्यौछावर हो उठता है। महुआ माधुर्य और रस का अद्‌भूत समन्वय है। दो वृक्ष ऐसे हैं जिनके फूल आधी रात के बाद से ढुरने लगते हैं और भोर होते होते झरकर निःशेष हो जाते हैं। वे दोनों हैं पारिजात और महुआ। पारिजात शरद का पुष्प है, सफेद, बिलकुल शरद की स्निग्ध चांदी की तरह। डहाडह नारंगी रंग के उसके कोमल दंड विराग का ऐसा मंत्र उसके कानों में फूंकते हैं कि वह विरक्त हो जाता है, सन्यस्त हो जाता है। डारियों और पत्तियों का हरा-भरा संसार उसे माया जान पड़ता है और अपनी खोज में चुपचाप ढुर जाता है। चैत मास में महुए के फूल भी रस और गंध से आपूरित वैसे ही ढुरते हैं, मानो किसी गंवार के हाथों उनकी डालें झहरा दी गयी हों। इसके पीले फूलों की प्रत्येक शिरा में रस और मिठास भरी रहती है। पूर्णता के इस हद तक कि अपने वृक्ष की ऊंचाई से भारवाही बन चू पड़ने के बाद भी रस की गागर ज्यों की त्यों। बस उस रस की नन्ही-नन्ही बूंदों में घुली-मिली एक विशेष तरह की मादक गंध अपने आसपास से गुजरने वालों को भी मादकता में डुबो देती है।

महुए के वृक्ष में फूल आने से पूर्व ही इसकी सारी पत्तियां झड़ जाती हैं। नगें खड़े महुए को उसके फूलों के झोप्पे ढंकने के लिए तैयार हो जाते हैं। रातों-रात उन फूलों में रस, मिठास और गंध की गागर ढरका दी जाती है। मधुमक्खियां भनभनाने लगती हैं, उनके प्रणय व्यापार से रस छलकने लगता है और आधी रात के बाद तो यह निगोढ़ी प्रीति इतना हिलोर मारती है कि अपने स्व को ही लूटा देने की धुन सवार हो जाती है। टिप् टिप् कर आधी रात से भोर तक महुए के फूलों का बिछौना सज जाता है धरती पर। पेड़ अपना सर्वस्य लुटाकर मानो रीत सा जाता है, लेकिन महुए के कुंचों में छिपी नयी कलियां फूल बनने के लिए फिर से उकस जाती हैं। रस के पूरित होने के लिए उनके कल्ले मचल उठते हैं। भरने और भरकर किसी के लिए न्यौछावर हो जाने का यह क्रम पूरे चैत भर और कभी कभी आधे वैशाख तक चलता है। चुपचाप अपना सर्वस्य लुटा देने और वह भी निःस्वार्थ भाव से, महुए से अधिक कौन जान सका है भला। इसीलिए महुए के फूलों को ढुरन में मुझे राधा की निःस्वार्थ प्रीति झलकती है।

चैत-वैशाख माधव मास है, मधुमास है। धरती के हर कण में वसंत। हर गंध, हर फूल, हर पत्ती में वासंती सुषमा। इसीलिए राधा की रसवंती प्रीति भी धरती पर न्यौछावर। चैत्र-वैशाख में माधव वसंत बन धरती पर छाते हैं तो राधा की प्रीति महुए के फूलों मे बसेरा ले उनके चरणों में अर्पित होती है। चैत्र इस प्रीति का साक्षी बनता है। इसी प्रीति को गह पाने की तड़प में चित्त उन्मन होता है और मन महुआ की तरह उनके चरणों में लोट जाने और लुट जाने की विह्वलता पाता है। प्रीति मोहन के चिदंश से हो अथवा उनकी पूर्णता से, रसगर उम्र को भीजना ही है, भीजकर छीजना है। विरह चाहे कितना ही दुरंत हो, मिलन की एक आस है चैत्र, रीते मन की प्यास है और अंतर्जगत की गुहार है चैत्रः

मनमोहन सौं हिलिबों मिलिबों

दिन चारिक चैत को ह्वै गयौ हौ।।❑ **–9792411451**

उप्र सरकार द्वारा पियूष द्विवेदी को साहित्य सृजनशील सम्मान

जगतगुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट में हिन्दी विभाग के प्रवक्ता पियूष कुमार द्विवेदी को उनकी अप्रतिम साहित्य साधना के लिए उतर प्रदेश सरकार ने साहित्य सृजनशील दिव्यांग सम्मान से समादृत किया।

5 दिसम्बर 2019 को लखनरू के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्रदेश सरकार के मंत्री अनील राजभर ने उनको यह सम्मान प्रदान किया। फतेहपुर (ग्राम - टीसी, पोस्ट- हसवा) में 3 जुलाई 1991 को जन्में पियूष शिशुकाल में ही मानसिक पक्षाघात से पीड़ित हो गये थे। अपनी शारीरिक अक्षमता को प्रभु का प्रसाद मान हार न मानने वाले पियूष ने 9 वर्ष की अवस्था में अपने पिता स्व. श्री रमेश चन्द्र द्विवेदी को खोने के बावजूद हिम्मत नहीं हारी और वर्ष 2008 में स्वर्ण पदक के साथ हिन्दी में परास्नातक किया। 5 बार यूजीसी की नेट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले पियूष को हिन्दी, पंजाबी, संस्कृत, मराठी, उर्दू व अंग्रेजी छह भाषाओं का ज्ञान है। हिन्दी में चार शोध पुस्तकों के रचनाकार पियूष द्विवेदी ने पंजाबी व अन्य भाषाओं को भी अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। विभिन्न स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कवितायें प्रमुखता से प्रकाशित होती रही हैं। उक्त अवसर पर पीयूष जी की दो पुस्तकों - छायावादोत्तर काव्य कलश व भक्ति काव्य पियूष का लोकार्पण भी हुआ। दिव्यांग युवा की कर्मठता नई पीढ़ी के लिए एक उदाहरण ही नहीं, अनुकरणीय है।❑

– चक्रधर शुक्ल, कानपुर

आज भी प्रासंगिक हैं विवेकानंद

– डॉ. राकेश कुमार अवस्थी, लखनऊ

सैकड़ों वर्षों की दासता की त्रासदी ने भारतीय मानव समाज के चेतन व अचेतन मन को विचारहीन रख शक्तिहीन कर दिया था। पौराणिक काल से लेकर दासता के पूर्व तक विश्वगुरु कहलाने वाला देश, ज्ञान की खोज में भटकने लगा था। ऐसे समय ज्ञान का पथ प्रदर्शित करने के लिये ही स्वामी विवेकानन्द का 12 जनवरी 1893 में जन्म हुआ। स्वामी विवेकानन्द ने स्वामी परमहंस रामकृष्ण के सान्धिय में भारत के पौराणिक ज्ञान को अर्जित किया। उन्होंने अपनी पश्चिमी देशों की यात्रा से वहाँ के सुविचारों को आत्मसांत करते हुये प्रत्येक मानव को सेवा के पथ पर चलने के लिये प्रेरित किया। उनके अनुसार प्रत्येक भारतीय के जीवन में ''मानव उत्कृष्टता'' प्राप्त करना ही एक मात्र ध्येय होना चाहिये। इसी सन्दर्भ में उनका यह भी कहना था कि मानव समाज के उत्थान के लिये 'ज्ञान' अत्यन्त आवश्यक है। पुरातन भारत की शिक्षा ज्ञान को आत्मसात करने की प्रेरणा देती थी। उनके अनुसार 'ज्ञान' एक ऐसा महासागर है जिसकी गहराइयों में डूबकर ही मानव उत्कृष्टता के मोती एकत्र कर सकता है। उनका कहना था कि ज्ञान की शक्ति अपूर्व है लेकिन ज्ञान के प्रति श्रद्धा के अभाव में ज्ञान अधूरा ही रह जाता है। श्रद्धा ऐसी मनोस्थिति है जो ज्ञान की गूढ़ता के आवरण को स्वतः ही भेदती जाती है। ज्ञान के प्रति श्रद्धा का सटीक उदाहरण महाभारत के एकलव्य नामक चरित्र से उजागर होता है। जिसने द्रोणाचार्य को अपना गुरु माना एवं उनकी अनुपस्थिति में उनकी मूर्ति के समक्ष श्रद्धापूर्वक अभ्यास करके धनुर्विद्या में अर्जुन से अधिक निपुणता प्राप्त कर ली थी।

पुरातन भारत में प्रचलित शिक्षा गुरुकुल पद्धति, प्रत्येक विद्यार्थी में श्रद्धा को कूट-कूर कर भरने का कार्य करती थी जो कि आधुनिक भारत में लुप्त हो चुकी है। इसी लिये स्वामी विवेकानन्द ने ज्ञान प्राप्ति की निरन्तर प्रगति के लिये ज्ञान के प्रति सच्ची श्रद्धा विकसित करने की प्रेरणा दी। केवल ज्ञान मानव को अभिमानी बना देता है। वही ज्ञान श्रद्धा से अर्जित किया जाता है तब ज्ञान विनयशील होता है। यही है भारत की पौराणिक बुद्धिमत्ता जो भातीयों के लिये ''मानव-उत्कृष्टता'' प्राप्त करने का सत्मार्ग भी है।

स्वामी विवेकानन्द सदा ही पश्चिमी सभ्यता के सुविचारों को ग्रहण करने पर विश्वास करते थे। लेकिन पश्चिमी सभ्यता की अत्यन्त भौतिकता वादी संस्कृति मानव को उसके पतन की तरफ ठेलती है इसीलिये उन्होंने भारत की मानवतावादी बुद्धिमता को सीखने के लिये विदेशियों को भी प्रेरित किया।

उनके अनुसार ''मानव उत्कृष्टता'' (Human Excellence) की प्राप्ति का उद्देश्य तीन आयामों में विभक्त है। जिसके दो आयाम 'ज्ञान' एवं 'श्रद्धा' है जबकि तीसरा आयाम अध्यात्मिकता है। जो ध्यान के माध्यम से प्राप्त होती है। तीनों आयामों की पूर्णता ही मानव जीवन को उत्कृष्टता प्रदत्त करती है।

पश्चिमी सभ्यता से ओत-प्रोत विदेशियों को उन्होंने अध्यात्म के विचारों से अवगत कराया जिसके बिना मानव जीवन अपूर्ण है। भारतीयों से भी उन्होंने कहा 'ज्ञान' व 'श्रद्धा' चरित्र को श्रेष्ठता प्रदान कर सकते हैं लेकिन अपने स्वयं के भारतीय समाज के अन्ततः देश के उत्थान के लिये 'ज्ञान', 'श्रद्धा' व अध्यात्म का आत्मसात होना ही मानव उत्कृष्टता का द्योतक है। इस उद्देश्य को प्राप्त करना ही प्रत्येक मानव का धर्म होना चाहिये।❑

R.D. Tiwari
Mob. : 9871413500

SHANKAR LAL RISHI KUMAR
85, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6
Phone : 011-23287415

Shawl Merchants
RAJ EMPORIUM
81/7, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6
All kinds of Showl, Kashumiri Dushala & Dhussas
are available here at reasonable price

क्या आप जानते हैं ?

– राजेश दीक्षित, एडवोकेट

- 2005 ई. भाषाधारित जनसंख्या सर्वेक्षण के आधार पर हिन्दी भाषा भाषियों का स्थान संसार में प्रथम है।
- विश्व के तीस दुर्लभ धरोहर ग्रंथों में 'वेदों' का स्थान प्रथम है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है, जहाँ विश्व के प्रथम ग्रंथ 'वेद' की रचना हुई।
- बौद्ध गुरु प्रज्ञातर के शिष्य बोधिधर्म सातवीं शताब्दी में चीन गए और संपूर्ण चीन को 'ध्यान- योग' में दीक्षित किया। चीनी और जापानी भाषा में ध्यान को 'झयान' कहते हैं। इसी झयान को झेन कहा जाता है जो आगे चलकर 'झेन संप्रदाय' बन गया।
- 1448 ईस्वी में वास्कोडिगामा भारत के समुद्र तट पर पधारें। तब से अनेक पाश्चात्य यात्री भारत आते रहे। सोलहवीं सदी के अंतिम वर्षों में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई जो आगे चलकर भारत में अंग्रेजी शासन का मूल बिंदु बनी।
- ग्रीक के मेगास्थनीज, उज्बेकिस्तान के अलबरूनी और चीन के फाह्यान, इतसिंग तथा व्हेनसांग ऐसे ऐतिहासिक यात्री थे जिन्होंने भारत भ्रमण कर यहां की समेकित संस्कृति की सुगंध को किताबें लिख लिख कर फैलाया।
- भारत में सबसे पहले पुर्तुगीज आए। पुर्तुगीज भारत के लिए पहली यूरोपीय भाषा थी।
- अंग्रेजों ने 1857 ईसवी में कोलकाता मुंबई और चेन्नई में विश्वविद्यालय की स्थापना की और इसके नामांकन के लिए पहली बार मैट्रिक की परीक्षा आयोजित की गई।
- वारेन हेस्टिंग्स की प्रेरणा पर विलकिंग्सन ने काशी में रहकर संस्कृत का विधिवत अध्ययन किया और कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

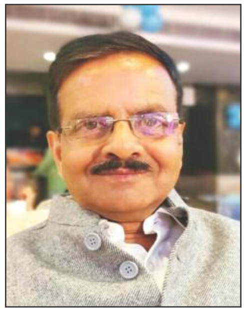

- संसार में उपलब्ध 6141 भाषाओं में संस्कृत को सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। जर्मन विद्वानों ने संस्कृत को कंप्यूटर की सर्वाधिक उपयुक्त भाषा स्वीकार किया है।
- भारत के बाद संस्कृत का सबसे अधिक पठन-पाठन जर्मनी में हुआ। जर्मनी के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है।
- मैक्समूलर ने संस्कृत के अनेक ग्रंथों का अध्ययन कर पश्चिमी देशों में भारतीय ज्ञान गौरव का प्रचार किया। अंत में उन्होंने What India can teach us की रचना की। मैक्समूलर ने अपना नाम बदलकर मोक्ष मूलर रख लिया।
- डब्ल्यू सोमरसेट मोगह्म ने अपने एक उपन्यास 'The Razor's edge' की रचना भारतीय दर्शन के परिपेक्ष में की है। The Razor's edge 'क्षुरस्य धारा' का अंग्रेजी भाषान्तर है। जिसे कठोपनिषद के एक श्लोक से लिया गया है- 'उतिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया। दुर्ग पथस्तत कवयो वदन्ति।'
- रूस के अलेक्सेई पेत्रोविच वरान्निकोव ने 'रामचरितमानस' का रूसी में अनुवाद कर संपूर्ण रूस को एक अद्भुत उपहार दिया था। इस कार्य को उन्होंने 1938 से 1942 के बीच तब किया जब दूसरा विश्व युद्ध छिड़ा था।❑

कमाई खूब होती है, पर बरक्कत नहीं हो रही है। स्पष्ट है कि धर्म से ही बरक्कत होती है। धर्मविरूद्ध, ईमानदारी एवं गाढ़े पसीने की कमाई बिना बरक्कत नहीं होती और न हो सकती है।

शुभकामनाओं सहित-

डॉ सुरेश चन्द्र पचौरी

अध्यक्ष : ब्रह्म-चेतना, फरीदाबाद

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : विश्व ब्राह्मण संघ

उपाध्यक्ष : कान्यकुब्ज समाज, फरीदाबाद

सम्पर्क : 9810445762

नेताजी ने वाजपेयी जी की दाढ़ी बनाई

10 दिसम्बर, 1921 को श्री देशबन्धु चितरंजन दास, मौलाना अबुल कलाम और श्री सुभाषचंद्र बोस के साथ सम्पादकाचार्य अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी भी कोलकाता की प्रेसीडेंसी जेल में बन्द हो गए। दास साहब लाखों की आय पर लात मारकर और बोस बाबू स्वर्ग समझी जाने वाली सिविल सर्विस को ठुकराकर स्वाधीनता संघर्ष के मार्ग पर चलकर जेल के कष्ट झेल रहे थे। अम्बिकाप्रसाद जी ने अपने संस्मरण में लिखा है कि वे रूप यौवन सम्पन्न, निरभिमानी सुभाषचन्द्र बोस से बहुत प्रभावित थे। जेल में सुभाष बाबू द्वारा अपनी हजामत बनाये जाने के बारे में बाजपेयी जी ने बताया-

'उन दिनों सेफ्टी रेज़र का चलन हो गया था, इएलिये मैंने भी मंगाया, पर इसका प्रयोग मैं नहीं कर सकता था। मैं सब समान लेकर ऊपर के तल्ले पर गया और अनाड़ी की तरह बैठा। थोड़ी देर तक तो सुभाष बाबू यह तमाशा देखते रहे पर बाद में उन्होंने कहा- आपसे ना बनेगी। मैं बनाए देता हूं। ऐसे नहीं बनाते। और उन्होंने मेरी हजामत क्या बना दी मुझे बनाना सिखा दिया।' सुभाष बाबू को बहुत सी बातों का ख्याल रहता और ऐसे काम में जिसमें किसी का हित हो सकता था कभी आगा पीछा ना करते।

विचार और चिंतन के स्तर पर बाजपेयी जी की आधुनिक दृष्टि और तीक्ष्ण बुद्धि के प्रमाण जेल के प्रसंगों में भी मिलते हैं। जेल में बाजपेयी जी को पूजा- पाठ करते और अपना खाना खुद पकाते खाते देखकर उनके जेल के साथी धर्म और ईश्वर संबंधी उनके विचारों को जानने को उत्सुक हो उठे। हकीम अब्दुल रऊफ ने मौलाना आजाद की उपस्थित में उनसे पूछा- 'खुदा को किसने बनाया?'

बाजपेयी जी ने बड़ा मौलिक उत्तर दिया- जब आपसे पूछा जाता है और आप सवालों के जवाब दे देते हैं, तब आप को खुदा की जरूरत महसूस नहीं होती। मगर जब किसी का जवाब नहीं दे सकते तब कहते हैं, 'खुदा जाने'। मतलब यह हुआ जब आपकी अकल काम नहीं करती तभी आप खुदा की याद करते हैं। यानी जब बेवकूफ हो जाते हैं। यह सुनकर रऊफ साहब चुप हो गए। पास खड़े मौलाना आजाद ने कहा, 'बात तो सही है'। ❑

अटल-स्मृति

काल के कपाल पर जितने भी गीत लिखे
उनको ये सारा देश पल पल गुनगुनाएगा।
किन्तु हे अटल लाल माँ भारती के भाल,
देशभक्ति की मशाल कौन अब जलाएगा ।।
वीणा वादिनी का वास किसकी वाणी में कहो,
कौन राष्ट्र चिंतन के गीत नए गाएगा।
किसकी सरलता, तरलता चित्त मोहेगी
किसकी कविता से मन झंकृत हो पाएगा ।।
किसकी वाकपटुता से संसद अब सिहरेगी
एक वोट हार कौन दिल को जीत जाएगा।
जीवन्त राजनीति जिसकी सदाशयता से ,
उसके बिना मूल्यों को कौन अब निभाएगा।।
भारतीय अस्मिता के पुरोधा हे महामानव ,
हिन्दी को गरिमामय कौन अब बनाएगा।
देश में विदेश में संभाषणो से मंत्रमुग्ध,
करने को धरती पर दुबारा कौन आएगा ।। ❑

-बृजेन्द्र कुमार मिश्र, मुम्बई
9565444555

सर्दियों की गुनगुनी धूप में है विटामिन डी के भरपूर तत्व

– किरण वाजपेयी, लखनऊ

धनु के पंद्रह, मकर पच्चीस, चिल्ला जाड़ा दिन चालीस। ऋषि-मुनि-पूर्वजों ने शिशिर ऋतु की सर्दी को जीवन की ऊष्मा से जोड़ा है। इन दिनों धूप का सेवन मन-शरीर को सुकून देने वाला ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी काफी फायदेमन्द होता है। मेडिकल साइंस ने माना है कि सूर्य की धूप में सबसे अधिक विटामिन डी होता है। आज की व्यस्त जिंदगी में लोगों का धूप से वास्ता काफी कम रह गया है। यही कारण है विटामिन डी की कमी के कारण लोगों, खासकर महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को देखा जा रहा हैं।

दो दशक पहले तक जब रिश्तो में गर्मी बरकरार थी और जिंदगी की जद्दोजहद इतनी भारी नहीं थी तब सर्दियों में आंगन में उतरती सूरज की किरणें या खुली छतों पर छाई धूप सामूहिकता का पर्याय होती थी। पूरा परिवार ही नहीं, आसपास मोहल्ले के स्त्री-पुरुष भी एक साथ धूप सेंकने का आनन्द लेते थे। शरीर-सिर में तेल की मालिश, कहानी-किस्सों का दौर चलता था, स्वेटर बुने जाते थे, अचार-पापड़-बड़ियां इसी धूप की देन होते थे। घर की खाने-पीने की सामग्रियों को फंगस से बचाने, सीलन भरे कपड़ों को धूप दिखाने की निरंतरता अब देखने को नहीं मिलती।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण सर्दियों की अवधि कम हो गयी है। सहभागिता, सामूहिकता, सम्वेदनाओं के सारे भाव बाजारवाद में तिरोहित होते जा रहे हैं। आंगन, खुली छत और चौबारों की अभिकल्पना फ्लैट्स की बालकनियों में सिमटी है। मानवीय संवेदनाओं से दूर होते जा रहे प्रस्तर प्राण में सर्दी की नरम-गुनगुनाती धूप का सुकून छिन चुका है। शीतकाल की ठिठुरन से बचने को बेडरूम का गर्म कम्बल, बिजली के उपकरणों में सामूहिकता कहाँ? सूर्य की ऊष्मा से मिलने वाली ऊर्जा के अभाव में नई-नई शारीरिक बीमारियों के शिकार होते जा रहे हैं।

त्वचा जब धूप के संपर्क में आती है तो शरीर में विटामिन डी निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होती है। विटामिन डी की मदद से कैल्शियम को शरीर में बनाए रखने में मदद मिलती है जो हड्डियों की मजबूती के लिए अत्यावश्यक होता है। इसके अभाव में हड्डी कमजोर होती हैं व टूट भी सकती हैं। थकान, मांसपेशियों की कमज़ोरी, हड्डियों में होने वाली तकलीफ़ और डिप्रेशन से बचाने में भी विटामिन डी मददगार बताया जाता है। सूरज की अल्ट्रावायोलेट बी किरणें जब हमारे शरीर पर पड़ती हैं, तो हमारा शरीर अंदर मौजूद कोलेस्ट्रॉल से विटामिन डी बना लेता है.

शरीर में विटामिन डी कम होने पर मांसपेशियां कमज़ोर होती हैं. और लोग थकान के ज़्यादा शिकार होते हैं. वो हरदम थकान महसूस करते हैं।

विटामिन डी का निम्न स्तर तेजी से उम्र बढ़ने के साथ जुड़ा हुआ है। इसका उचित सेवन आपको उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने में मदद कर सकता है। शरीर का 20 प्रतिशत हिस्सा यानी बिना ढका हाथ और पैरों से प्रतिदिन 15 मिनट धूप का सेवन करने से विटामिन-डी अच्छी मात्रा में लिया जा सकता है। सुबह 10 से दोपहर 3 बजे के बीच के दौरान धूप का सेवन मानव शरीर की त्वचा को विटामिन-डी प्रदान करता है। बच्चों को शुरुआत में ही पर्याप्त आहार के साथ-साथ अच्छी धूप का सेवन कराना आवश्यक होता है। बच्चों को खास कर उन बच्चों को जिन्होंने मां का दूध पीना छोड़ दिया है।

विटामिन डी का पर्याप्त सेवन आपको लाल खुजली वाली त्वचा से छुटकारा पाने में मदद कर सकता है। एक्जिमा का इलाज करता है। विटामिन डी बालों के रोम को उत्तेजित करने के लिए जाना जाता है। इससे बालों को बढ़ने में मदद मिलती है, इसके एंटीऑक्सीडेंट गुण मुंहासों को रोकने में मदद करते हैं। ❑

यह अपने आप में लज्जा आने की पराकाष्ठा है कि सिर्फ अतीत से जुड़ी होने के कारण सार्थक, सजीव चीजों की ओर आंख उठाकर भी न देखा जाय। समाज, परिवार, व्यक्ति के ताने-बाने में कृत्रिमता स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी है। जीव व के स्थाई और सनातन मूल्यों को छोड़ते चले जाने का ही परिणाम है – व्यक्ति का अस्थिर और असंतुलित होते जाना।

- सौजन्य से -

पं. ओम शंकर मिश्र

आश्रय मेन्शन, 3021-22,
आवास विकास कॉलोनी-3
पनकी,कानपुर

कुलीन

कहते हैं: जिनका सदाचार शिथिल नहीं होता, जो अपने दोषों से माता-पिता को कष्ट नहीं देते, जो प्रसन्न-चित्त होकर धर्म का आचरण करते हैं, जिनमें तप, इन्द्रियसंयम, वेदों का स्वाध्याय, पवित्र विवाह, सदा अन्नदान और सदाचार ये सात गुण सदैव रहते हैं, वे ही महाकुल कहलाते हैं:

तपो दमो ब्रह्मवित्तं वितानः पुण्या विवाहाः सततान्नदानम्।
येष्वेवैते सप्त गुणा वसन्ति सम्यग्वृत्तास्तानि महाकुलानि।।

जिनके सदाचार एवं योनि (माता-पिता) व्यथित न हों, जो असत्य का परित्याग कर अपने कुल की विशेष कीर्ति चाहें, ऐसे लोगों का कुल 'महाकुल' कहलाता है। अनिज्या (यज्ञादि न करने), निन्दित विवाह, वेदों का परित्याग एवं धर्म का अतिक्रमण करने से महाकुल भी अकुल अर्थात् अधम-कुल हो जाते हैं:

अनिज्यया कुविवाहैर्वेदस्योत्सादनेन च।
कुलान्यकुलतां यान्ति धर्मस्यातिक्रमेण च।।

जलती हुई लकड़ियाँ अलग-अलग होकर धुआँ फेंकती हैं, लेकिन एक साथ होने पर प्रज्वलित हो उठती हैं। इसी प्रकार जाति-बन्धु भी फूट होने पर दुःख उठाते हैं, जब कि एक होने पर तेजस्वी होते हैं:

धूमायन्ते व्यपेतानि ज्वलन्ति सहितानि च।
धृतराष्ट्रोल्मुकानीव ज्ञातयो भरतर्षभ।।

संसार में बाहुबल तो कनिष्ठ बल है, उत्तम मन्त्री का लाभ दूसरा बल है, धनलाभ तीसरा बल है और पितृ-पितामहादिप्राप्त सहज 'आभिजात्य' (उत्तम कुल में जन्म) चौथा बल है। ये सब बल जिसके द्वारा संगृहीत होते हैं, वह सबसे बड़ा बल प्रज्ञा-बल है:

येन त्वेतानि सर्वाणि संगृहीतानि भारत।
यद्बलानां बलं श्रेष्ठं तत्प्रक्षाबलमुच्यते।।

स्त्रियाँ महाभाग्य हैं, घर की लक्ष्मी हैं। वे पवित्र, आदरयोग्य और घर की शोभा हैं। उनकी विशेष रूप से रक्षा होनी चाहिए:

पुजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः।।

अपने को दुर्बल मानकर स्वयं ही अपनी अवहेलना न कर। अपनी आत्मा का थोड़ा-से धनादि से पोषण मत कर। मन को शुभ-संकल्प से कल्याणमय बनाकर, निर्भय होकर सर्वथा भय दूर कर दे। कायर पुरूष, उठ खड़ा हो। शत्रु से पराजित होकर घर में शयन न कर। इस प्रकार उद्योगशून्य और मान-प्रतिष्ठारहित होकर शत्रुओं को आनन्दित करता हुआ तू बन्धु-बान्धवों को शोक-

विद्यारंभ संस्कार

प्रत्येक माता-पिता या अभिभावक का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह अपने बच्चे की शिक्षा की उचित व्यवस्था करें। विद्यारंभ संस्कार द्वारा बालक- बालिका में उन मूल संस्कारों की स्थापना का प्रयास किया जाता है जिनके आधार पर उनकी शिक्षा मात्र अक्षर ज्ञान न रहकर जएवं निर्माण करने वाली हितकारी विद्या के रूप में विकसित हो सके। समारोह द्वारा बालक के मन में ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्साह पैदा किया जाता है। उत्साह भरी मनोभूमि में देवाराधन तथा यज्ञ के सहयोग से वांछित ज्ञानपरक संस्कारों का बीजारोपण संभव हो जाता है।

विद्यारंभ संस्कार में सर्वप्रथम गणेश एवं सरस्वती का पूजन किया जाता है। गणेश विद्या के देवता है तो सरस्वती शिक्षा की अधिष्ठात्री देवी। गणेश को बुद्धि प्रदाता कहा गया है। शिशु में उच्च स्तरीय दूरदर्शिता आ जाए, उचित-अनुचित का ज्ञान तथा कर्तव्य-अकर्तव्य की पहचान हो जाए इस कारण इस संस्कार में गणेश पूजन का विधान है। सरस्वती माता का सतत अनुग्रह विद्या के रूप में मिलता रहे इसलिए सरस्वती की आराधना की जाती है। वास्तव में सतत अध्ययन ही सरस्वती की आराधना है।

लेखन, दावात एवं पट्टी पूजन– गणेश और सरस्वती पूजन के उपरांत शिक्षा के उपकरणों दावात, लेखनी और पट्टी का पूजन किया जाता है। शिक्षा प्राप्त के लिए यह तीनों ही प्रधान उपकरण है। इन्हें वेद मंत्रों से अभिमंत्रित किया जाता है ताकि उनका प्रारंभिक प्रभाव कल्याणकारी हो सके और विद्या प्राप्त में सहायता मिल सके।

गुरु पूजन– शिक्षा एवं अज्ञान अंधकार को गुरु ही दूर करते हैं। गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है इसीलिए देवता विद्यारंभ संस्कार में गुरु पूजन का विधान है। लेखनी दावात एवं पट्टी पूजन के पश्चात बालक द्वारा अक्षत, तिलक, पुष्पमाला, वरण और चरण स्पर्श द्वारा गुरु पूजन कराया जाता है। अक्षर लेखन एवं पूजन आचार्य द्वारा पट्टी पर 'ॐभूर्भुवः स्वः' शब्द लिखकर बालक से पंचोपचार पूजन कराया जाता है। तत्पश्चात आचार्य उक्त शब्द बालक से 5 बार उच्चारण कराते हैं। उसके बाद बालक या बालिका अक्षरों पर कलम फेर कर अक्षर बना देते हैं अथवा आचार्य और छात्र दोनों कलम पकड़कर पंचाक्षरी गायत्री मंत्र लिखते हैं। फिर बालक दसों दिशाओं में नमस्कार करता है।❑

सिरदर्द व दिमागी कमज़ोरी में लाभकारी

भूत मार्का चार तेल

भूत निवास, गांधी नगर, कानपुर

मूल्यहीन समाज में सार्थकता की तलाश

– डॉ सुरेश चंद्र पचौरी, फरीदाबाद

- सामाजिक मूल्य परिवर्तनशील होते हैं। पुराने मूल्यों की जड़ता जब सामाजिक विकास में अवरोधक सिद्ध होने लगती है, तो उनमें क्रमशः टूटन का सिलसिला आरंभ हो जाता है। नये मूल्य धीरे-धीरे आकार ग्रहण करते हैं और अंततः स्वीकृत होकर समाज के विकास में अपनी भूमिका निर्मित करते हैं। वे नए मूल्य इसीलिए समाज की स्वीकृत पाते हैं क्योंकि उनके बगैर सामाजिक विकास पंगु हो जाता है।
- जब कोई जीवन दृष्टि या विचार पद्धति समाज में स्थापित और बहुत स्वीकृत हो जाती है तो उसे 'मूल्य' कह दिया जाता है। इन मूल्यों के वर्गीकरण का प्रयत्न भी चलता है। वस्तुनिष्ठ और आत्मनिष्ठ, भौतिक और आध्यात्मिक, ऊर्ध्व और अधः, शाश्वत और सामयिक, नए और पुराने। किंतु इस वर्गीकरण का आधार अधिक वैज्ञानिक नहीं है।
- परिवर्तन की शक्तियां किसी भी शाश्वत को अस्वीकृत कर सकती हैं और वह भी सामयिक हो सकता है।
- नए मूल्यों का उद्भव परिवर्तन की प्रक्रिया को ही प्रमाणित करता है।
- स्त्री पुरुष के बीच संबंधों की पवित्रता प्रेम की भावनात्मक उदात्तता अश्लीलता और कामुकता के आगे धाराशाई हो गई है।
- नारी विद्रोह वस्तुतः एक सांस्कृतिक छल है।
- नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र क्या हुई कि उसे पुरुष की जरूरत ही नहीं रही। पुरुष और प्रकृति का समागम भी पुराना पड़ गया है।
- कामुकता का घिनौना प्रदर्शन कितना भोंडा रूप ग्रहण कर रहा है।

- मनुष्य जितना अधिक रागात्मक होगा, उतना अधिक वह आधुनिक होगा।
- परंपरा को हम तुच्छ समझकर तिरष्कृत तो कर देते हैं, लेकिन वस्तुतः अचेतन में वह दबी रहती है। चिंतन के धरातल पर हम आधुनिक नहीं होते, लेकिन व्यवहार आधुनिकता का ही करते हैं। इसलिए उसे आधुनिकता ना कहकर फैशन कहना चाहिए। आधुनिकता भी जीवन के प्रति एक खुला, दीवारों को तोड़ने वाला दृष्टिकोण रखती है।
- यदि आधुनिकता को फैशन के तौर पर स्वीकार किया जाता है और फैशन की दौड़ में अपनी परंपरा को हम हेय मानने लगते हैं, तो वह आधुनिकता न होकर हमारा पिछड़ापन ही होगा।
- आचरण के प्राचीन आदर्शों का नकार तो हो रहा है, लेकिन नवीन आदर्शों की स्थापना नहीं हो रही है। नए मूल्यों की स्थापना संस्कृति की गतिशीलता एवं विकास की संभावनाओं को पुष्ट करती है।
- विदेशी परिवेश भारतीय महिला की सांस्कृतिक गरिमा को छीन रहा है।
- अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति में यदि नस्लवाद की भयंकर बीमारी है तो भारतीय समाज में हरिजनों की हालत किस ओर संकेत करती है?

–9510445762

With best compliments from

TEDCO Exports Private Limited

A global trade development company engaged in exports and imports of commodities, equipments and technology

M-72, Connaught Circus, New Delh 110001, Phone 23-416001/ 41517367 (EPABX)
Telefax: 011-23416002, E-mail: tedcogroup_del@airtelbroadband.in

महादेवी जी के निराला भाई

'कवियित्री महादेवी वर्मा महाप्राण को अपना भाई मानती थीं। वे निराला से दस वर्ष छोटी थीं। 1961 में निराला की मृत्यु के बाद उन्होंने अपने संस्मरण 'जो रेखायें न कह सकेंगी' में उनकी यादों को सहेजा है। उन्हीं के कुछ संपादित अंशों को साभार सहित पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास है।(सम्पादक)

मुंहबोले भाई निराला

एक युग बीत जाने पर भी मेरी स्मृति से एक घटाभरी अश्रुमुखी सावनी पूर्णिमा की रेखाएँ नहीं मिट सकी है। उन रेखाओं के उजले रंग न जाने किस व्यथा से गीले हैं कि अब तक सूख भी नहीं पाए - उड़ना तो दूर की बात है। उस दिन मैं बिना कुछ सोचे हुए ही भाई निराला जी से पूछ बैठी थी, 'आप के किसी ने राखी नहीं बाँधी?' अवश्य ही उस समय मेरे सामने उनकी बंधन-शून्य कलाई और पीले, कच्चे सूत की ढेरों राखियाँ लेकर घूमने वाले यजमान-खोजियों का चित्र था। पर अपने प्रश्न के उत्तर में मिले प्रश्न ने मुझे क्षण भर के लिए चौंका दिया।

'कौन बहन हम जैसे भुक्खड़ को भाई बनावेगी?' में, उत्तर देने वाले के एकाकी जीवन की व्यथा थी या चुनौती यह कहना कठिन है। पर जान पड़ता है किसी अव्यक्त चुनौती के आभास ने ही मुझे उस हाथ के अभिषेक की प्रेरणा दी जिसने दिव्य वर्ण-गंध-मधु वाले गीत-सुमनों से भारती की अर्चना भी की है और बर्तन माँजने, पानी भरने जैसी कठिन श्रम-साधना से उत्पन्न स्वेद-बिंदुओं से मिट्टी का श्रृंगार भी किया है।

मेरा प्रयास किसी जीवंत बवंडर को कच्चे सूत में बाँधने जैसा था या किसी उच्छल महानद को मोम के तटों में सीमित करने के समान, यह सोचने विचारने का तब अवकाश नहीं था। पर आने वाले वर्ष निराला जी के संघर्ष के ही नहीं, मेरी परीक्षा के भी रहे हैं। मैं किस सीमा तक सफल हो सकी हूँ, यह मुझे ज्ञात नहीं, पर लौकिक दृष्टि से निराला हृदय की निधियों में सब से समृद्ध भाई हैं, यह स्वीकार करने में मुझे द्विविधा नहीं। उन्होंने अपने सहज विश्वास से मेरे कच्चे सूत के बंधन को जो दृढ़ता और दीप्ति दी है वह अन्यत्र दुर्लभ रहेगी।❑

अस्त-व्यस्त जीवन का अर्थशास्त्र

उनके अस्त-व्यस्त जीवन को व्यवस्थित करने के असफल प्रयासों का स्मरण कर मुझे आज भी हँसी आ जाती है। एक बार अपनी निर्बंध उदारता की तीव्र आलोचना सुनने के बाद उन्होंने व्यवस्थित रहने का वचन दिया। संयोग से तभी उन्हें कहीं से तीन सौ रुपए मिल गए। वही पूँजी मेरे पास जमा कर के उन्होंने मुझे अपने खर्च का 'बजट' बना देने का आदेश दिया।

जिन्हें मेरा व्यक्तिगत रखना पड़ता है, वे जानते हैं कि यह कार्य मेरे लिए कितना दुष्कर है। न वे मेरी चादर लंबी कर पाते हैं न मुझे पैर सिकोड़ने पर बाध्य कर सकते हैं और इस प्रकार एक विचित्र रस्साकशी में तीस दिन बीतते रहते हैं। पर यदि अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियों की प्रतियोगिता हो तो सौं में दस अंक पाने वाला भी अपने-आपको शून्य पाने वाले से श्रेष्ठ मानेगा।

अस्तु, नमक से लेकर नापित तक और चप्पल से लेकर मकान के किराए तक का जो अनुमान-पत्र मैंने बनाया वह जब निराला जी को पसंद आ गया, तब पहली बार मुझे अपने अर्थशास्त्र के ज्ञान पर गर्व हुआ। पर दूसरे ही दिन से मेरे गर्व की व्यर्थता सिद्ध होने लगी। वे सबेरे ही आ पहुँचे। पचास रुपए चाहिए - किसी विद्यार्थी का परीक्षा-शुल्क जमा करना है, अन्यथा वह परीक्षा में नहीं बैठ सकेगा। संध्या होते-होते किसी साहित्यिक मित्र को साठ देने की आवश्यकता पड़ गई। दूसरे दिन लखनऊ के किसी तांगे वाले की माँ को चालीस मनीआर्डर करना पड़ा। दोपहर

को किसी दिवंगत मित्र की भतीजी के विवाह के लिए सौ देना अनिवार्य हो गया। सारांश यह कि तीसरे दिन उनका जमा किया हुआ रुपया समाप्त हो गया और तब उनके व्यवस्थापक के नाते यह दानखाता मेरे हिस्से आ पड़ा।

एक सप्ताह में मैंने समझ लिया कि यदि ऐसे अवढर दानी को न रोका जावे तो यह मुझे भी अपनी स्थिति में पहुँचा कर दम लेंगे। तब से फिर कभी उनका 'बजट' बनाने का दुस्साहस मैंने नहीं किया। पर उनकी अस्त-व्यस्तता में बाधा पहुँचाने का अपना स्वभाव मैं अब तक नहीं बदल सकी हूँ।

बड़े प्रयत्न से बनवाई रजाई, कोट जैसी नित्य व्यवहार की वस्तुएँ भी जब दूसरे ही दिन किसी अन्य का कष्ट दूर करने के लिए अंतर्धान हो गईं, तब अर्थ के संबंध में क्या कहा जावे जो साधन मात्र है।❑

निराला का आतिथ्य

श्रद्धेय मैथिलीशरण जी निराला जी का आतिथ्य ग्रहण करने गए। बगल में गुप्त जी के बिछौने का बंडल दबाए, दियासलाई के क्षण प्रकाश क्षण अंधकार में तंग सीढ़ियों का मार्ग दिखाते हुए निराला जी हमें उस कक्ष में ले गए जो उनकी कठोर साहित्य-साधना का मूक साक्षी रहा है।

आले पर कपड़े की आधी जली बत्ती से भरा, पर तेल से खाली मिट्टी का दिया मानो अपने नाम की सार्थकता के लिए ही जल उठने का प्रयास कर रहा था। यदि उसके प्रयास को स्वर मिल सकता तो वह निश्चय ही हमें, मिट्टी के तेल की दूकान पर लगी भीड़ में सब से पीछे खड़े पर सब से बालिश्त भर ऊँचे गृहस्वामी की दीर्घ, पर निष्फल प्रतीज्ञा की कहानी सुना सकता। रसोईघर में दो-तीन अधजली लकड़ियाँ, औंधी पड़ी बटलोई और खूँटी से लटकती हुई आटे की छोटी-सी गठरी आदि मानो उपवास-चिकित्सा के लाभों की व्याख्या कर रहे थे।

वह आलोकरहित, सुख-सुविधा-शून्य घर, गृहस्वामी के विशाल आकार और उससे भी विशालतर आत्मीयता से भरा हुआ था। अपने संबंध में बेसुध निराला जी अपने अतिथि की सुविधा के लिए सतर्क प्रहरी हैं। वैष्णव अतिथि की सुविधा का विचार कर वे नया घड़ा ख़रीद कर गंगाजल ले आए और धोती-चादर जो कुछ घर में मिल सबका सब तख़्त पर बिछा कर उन्हें प्रतिष्ठित किया।

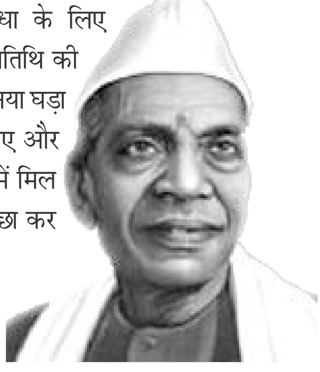

तारों की छाया में उन दोनों मर्यादावादी और विद्रोही महाकवियों ने क्या कहा-सुना यह मुझे ज्ञात नहीं, पर सबेरे गुप्त जी को ट्रेन में बैठा कर वे मुझे उनके सुख-शयन का समाचार देना न भूले।

ऐसे अवसरों की कमी नहीं जब वे अकस्मात पहुँच कर कहने लगे, ''मेरे इक्के पर कुछ लकड़ियाँ, थोड़ा घी आदि रखवा दो - अतिथि आए हैं, घर में सामान नहीं है।''
'उनके अतिथि यहाँ भोजन करने आ जावें' सुन कर उनकी दृष्टि में बालकों जैसा विस्मय छलक आता है। जो अपना घर समझ कर आए हैं, उनसे यह कैसे कहा जावे कि उन्हें भोजन के लिए दूसरे घर जाना होगा। भोजन बनाने से ले कर जूठे बर्तन माँजने तक का काम वे अपने अतिथि देवता के लिए सहर्ष करते हैं।❑

सुमित्रानंदन पंत का समाचार और निराला की व्यथा

सुमित्रानंदन जी दिल्ली में टाइफाइड ज्वर से पीड़ित थे। इसी बीच घटित को साधारण और अघटित को समाचार मानने वाले किसी समाचार-पत्र ने उनके स्वर्गवास की झूठी ख़बर छाप डाली।

निराला जी कुछ ऐसी आकस्मिकता के साथ आ पहुँचे थे कि मैं उनसे यह समाचार छिपाने का भी अवकाश न पा सकी। समाचार के सत्य में मुझे विश्वास नहीं था, पर निराला जी तो ऐसे अवसर पर तर्क की शक्ति ही खो बैठते हैं। वे लड़खड़ा कर सोफे पर बैठ गए और किसी अव्यक्त वेदना की तरंग के स्पर्श से मानो पाषाण में परिवर्तित होने लगे। उनकी झुकी पलकों से घुटनों पर चूने वाली आँसू की बूँदें बीच-बीच में ऐसे चमक जाती थीं मानो प्रतिमा से झड़े हुए जूही के फूल हों।

स्वयं अस्थिर होने पर भी मुझे निराला जी को सांत्वना देने के लिए स्थिर होना पड़ा। यह सुन कर कि मैंने ठीक समाचार जानने के लिए तार दिया है, वे व्यथित प्रतीक्षा की मुद्र में तब तक बैठे रहे जब तक रात में मेरा फाटक बंद होने का समय न आ गया। सबेरे चार बजे ही फाटक खटखटा कर जब उन्होंने तार के उत्तर के संबंध में पूछा तब मुझे ज्ञात हुआ कि वे रात भर पार्क में खुले आकाश के नीचे ओस से भीगी दूब पर बैठे सबेरे की प्रतीक्षा करते रहे हैं। उनकी निस्तब्ध पीड़ा जब कुछ मुखर हो सकी, तब वे इतना ही कह सके, 'अब हम भी गिरते हैं। पंत के साथ तो रास्ता कम अखरता था, पर अब सोच कर ही थकावट होती है।'❑

(साभार)

साहित्य, समाज व संगीत की त्रिवेणी का सम्मान

आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय की स्मृति में आयोजित सम्मान समारोह

23 नवम्बर, 2019। कान्यकुब्ज मंच पत्रिका के संस्थापक सम्पादक आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय की स्मृति में आयोजित सम्मान समारोह में साहित्य, संगीत तथा समाजसेवा के क्षेत्रों के विशिष्ट लोगों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि सांसद सत्यदेव पचौरी ने रचनात्मक साहित्य सृजन के लिए कन्नौज के कवि, साहित्यकार डॉ जीवन शुक्ल को **'शारदा सम्मान'** से, बाँदा के सर्वोदय कार्यकर्ता जलयोद्धा उमाशंकर पाण्डेय को **'सन्त बिनोवा सम्मान'** से तथा लोकसंगीत में अप्रतिम योगदान के लिए शास्त्रीय संगीताचार्य डॉ कुसुम पाण्डेय को **'माँ वासन्ती पाण्डेय महिला सम्मान'** से सम्मानित किया। पुष्प-हार, शॉल व अभिनन्दन पत्र भेंट कर तीनों विभूतियों को समादृत किया गया।

सिविल लाइंस, कानपुर स्थित यू पी स्टॉक एक्सचेंज के सभागार में आयोजित उक्त समारोह का शुभारंभ सभापति डॉ इन्दु नारायण वाजपेयी, श्रीमती कुसुम पाण्डेय, विष्णु पाण्डेय द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन एवं कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ। कलानिधि अदिति त्रिवेदी ने भरतनाट्यम के माध्यम से गणेश-वंदना की मोहक प्रस्तुति दी। प्रबन्ध सम्पादक विष्णु पाण्डेय, विधि सलाहकार अजीत शुक्ल, कार्यक्रम संयोजक प्रमोद नारायण मिश्र ने माल्यार्पण और प्रतीक चिन्ह भेंटकर अतिथियों का स्वागत किया। समारोह आयोजन की प्रस्तावना ऋचा पाण्डेय और अर्चित पाण्डेय ने प्रस्तुत की। वीएसएसडी कॉलेज के डॉ राकेश शुक्ल ने 'शारदा-सम्मान' से समादृत डॉ जीवन शुक्ल के अभिवंदन-पत्र का पाठन किया। जबकि संगीताचार्य श्रीमती कुसुम पाण्डेय के सम्मान में डॉ ऋचा मिश्रा तथा जलयोद्धा पं. उमाशंकर पाण्डेय के सम्मान में आशुतोष पाण्डेय ने अभिवंदन-पत्र पढ़कर सुनाया।

मुख्य अतिथि के रूप में **सांसद माननीय सत्यदेव पचौरी** ने कहा कि वासन्ती-बालकृष्ण पाण्डेय सेवा संस्थान द्वारा आयोजित सम्मान समारोह साहित्य, समाज और संगीत की त्रिवेणी का सम्मान है। ये तीनों ही विधाएं जिसमें पत्रकारिता भी शामिल है, समाज में वैचारिक परिवर्तन का मूल स्रोत हैं। आज साहित्य, समाज और संगीत के संगम का समारोह है। इस संगम से ही सृजन की ध्वनि निकलती है। तीनों मिल जायँ तो विचारधारा को नई दिशा

प्रो. विनय पाठक को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए विष्णु पाण्डेय वअरूण मिश्र

प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए
ऋचा पाण्डेय व अर्चित

कलानिधि अदिति त्रिवेदी को पुरस्कृत करते सांसद सत्यदेव पचौरी

डॉ. राकेश शुक्ल
अभिवन्दन पत्र पढ़ते हुए

संगीत साधिका कुसुम पाण्डेय व डॉ. गणेश गुप्त द्वारा लोकगीत प्रस्तुति

लोक संगीतकार लक्ष्मीशंकर शुक्ल
का सम्मान

मंचासीन बायें से पं. उमाशंकर पाण्डेय, डॉ. जीवन शुक्ल, माननीय सांसद सत्यदेव पचौरी, डॉ. आईएन वाजपेयी,
प्रो. विनय पाठक, श्रीमती कुसुम पाण्डेय, तुषमुल मिश्रा व माईक पर आशुतोष पाण्डेय

मिलती हैं। श्री पचौरी ने कहा कि उमाशंकर जी ने बुंदेलखंड के शुष्क क्षेत्र के गांव जखनी में सामुदायिक प्रयासों से जल संरक्षण का काम कर देश ही नहीं विदेशों में भी उदाहरण प्रस्तुत किया है। पाण्डेय जी के प्रयासों ने क्षेत्र में बासमती चावल की गुणात्मक फसल, दुग्ध-मत्स्य पालन कर गांव से मजदूरों के पलायन पर रोक लगाने का काम किया है। उन्होंने डॉ जीवन शुक्ल के हिंदी साहित्य में तथा डॉ कुसुम पाण्डेय के संगीत के क्षेत्र में योगदान की सराहना की।

विशिष्ट अतिथि **कुलपति डॉ विनय पाठक** ने ब्राह्मणों के आचरण का जिक्र करते हुए कहा कि जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र की उन्नति-प्रगति को देखकर आनंद का अनुभव करता है, एक शिक्षक अपने शिष्य के सम्मान को देखकर प्रसन्न होता है उसी प्रकार ब्राह्मण भी अपने यजमान, समाज के अन्य वर्ग को आगे बढ़ते हुए देखना चाहता है। ब्राह्मण के डीएनए में ही नम्रता, सहभागिता, संवेदना के भाव विद्यमान हैं।

अपने सम्मान से अभिभूत वरिष्ठ साहित्यकर्मी **डॉ जीवन शुक्ल** के अनुसार सम्मानित किए जाने वाले व्यक्तित्व से अधिक महान सम्मान करने वाला होता है जो उसके कृतित्व के मूल्य को परखना जानता है। ब्रिटिश महारानी के ताज की शोभा बढ़ाने वाला कोहिनूर आज भी गोलकुंडा की गुफा में पड़ा रहता यदि उसे पहचानने वाले न होते। कान्यकुब्ज मंच पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन करते हुए पं. बालकृष्ण पाण्डेय जी ने समाज की ऐसी अनेक प्रतिभाओं को खोजा और विभिन्न मंचों के माध्यम से उन्हें सम्मानित किया। पाण्डेय जी प्रतिभा और गुणों के परखी थे। या यूं कह लीजिए उनकी सकारात्मक दृष्टि लोगों के सद्‌गुणों व सत्कार्यों को ही ढूढ़ती थी। सच पूछिए तो कानपुर का सही रूप में साहित्यिक मूल्यांकन ही नहीं हुआ। उपन्यासकार भगवती प्रसाद वाजपेयी प्रभृत अनेकों विभूतियों के कृतित्व समय के गर्भ में समाए हुए हैं। पाण्डेय जी से मेरा परिचय पत्रिका की अवधारणा काल से ही है। मेरे निरुत्साहित किये जाने के बावजूद संकल्प के धनी पाण्डेय जी ने पत्रिका का प्रकाशन किया जो उनके जीवन के बाद भी अनवरत जारी है। ऐसी क्रियाशीलता और गुणग्राहकता ही व्यक्ति को जीवन के बाद कीर्तिशेष बनाती हैं।

'सन्त बिनोवा सम्मान' से समादृत **पं. उमाशंकर पाण्डेय** ने बताया कि उनके छठी पीढ़ी के पूर्वज को 19वीं शताब्दी के आखिरी वर्षों में अंग्रेजों ने फतेहपुर में इमली के पेड़ पर फांसी दे दी थी। हमारा परिवार विस्थापित होकर बाँदा जिले में आ बसा। परनाना विष्णु दुबे 1930 खजुराहों के पास उर्मिल नदी के तट पर अंग्रेजों की गोली के शिकार हुए। बाबा ने सन्त बिनोवा के सर्वोदय आंदोलन में अपना जीवनदान दिया। उन्हीं के आदर्शों पर चलते हुए पदमश्री निर्मला देशपांडे के संरक्षण में सामुदायिक कार्यों की प्रेरणा मिली। आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय, जिनकी स्मृति में आज का सम्मान समारोह आयोजित है, लगभग 30 वर्ष पूर्व हमारे जिला बाँदा आये थे। उनके निस्पृह व जीवट व्यक्तित्व ने भी मुझे प्रभावित किया। जलग्राम जखनी को देश का मॉडल ग्राम बनने पर सन्तोष व्यक्त करते हुए श्री पाण्डेय ने बताया कि किस प्रकार बगैर किसी सरकारी सहायता के किसानों, युवाओं, मजदूरों के सामुदायिक प्रयासों से परम्परागत साधनों से जखनी ग्राम में पानी की समस्या का निदान किया गया। आज राज और समाज जखनी के साथ खड़ा है। संकल्प, हौसला, लगन, एकता और समाज-राष्ट्रसेवा के भाव हों तो साधन आ ही जाते हैं। आपलोगों ने जिसप्रकार मेरे प्रयासों को सराहा, उससे मेरी संकल्पशक्ति को और अधिक बल मिला है।

माँ वासन्ती पाण्डेय महिला-सम्मान से सम्मानित **श्रीमती कुसुम पाण्डेय** ने अपने सहयोगी डॉ गणेश गुप्ता (संगीत प्रोफेसर- डीजीपीजी कॉलेज, कानपुर) व शिष्य मंडली के साथ गीत-संगीत की मोहक प्रस्तुति दी। शास्त्रीय संगीत के साथ भजन व लोकगीतों ने सभागार में उपस्थित लोगों को भावविभोर किया। संगीत अकादमी से सम्मानित पं. लक्ष्मीशंकर शुक्ल की मौजूदगी में उनके द्वारा लिखित लोकगीत-

'हालै डोलै रे झुमका तोहार बबुनी,
झुमका झूल कपोलन चूमै, लूम झूम अलकन मां लूमै,
करै आंख मिचौनी बयार बबुनी...'

सुनाकर श्रोताओं की वाहवाही लूटी।

भरतनाट्यम प्रस्तुति

लखनऊ से आई **कलानिधि अदिति त्रिवेदी** की भरतनाट्यम प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। गणेश वंदना के साथ शिव के अर्धनारीश्वर नृत्य तथा राधा-कृष्ण की भावमुद्राओं में गजब की कलात्मकता देखने को मिली। मुख्य अतिथि सांसद सत्यदेव पचौरी व डॉ अब्दुल कलाम प्राविधिक विवि के कुलपति प्रोफेसर विनय पाठक ने नटराज की प्रतिमा भेंटकर अदिति का सम्मान किया। भारतीय कपास निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री बृजेन्द्र कुमार मिश्र ने आचार्य पाण्डेय पर लिखी कविता- **'शिक्षक के सच्चे स्वरूप को जिया और साकार किया'** का पाठ किया।

डॉ इन्दु नारायण वाजपेयी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमद्भागवत गीता का उल्लेख करते हुए सम्मान समारोह को ज्ञानयोग, कर्मयोग तथा भक्तियोग से जोड़ा। उनका कहना था कि जहाँ एक ओर साहित्य ज्ञानयोग की साधना है, वहीं समाजसेवा कर्मयोग की व संगीत भक्तियोग की। निस्पृह समाजसेवा बड़ा ही

दुष्कर कार्य है। बगैर इच्छा के कर्म नहीं होता। लेकिन कर्म द्वारा फलप्राप्ति की इच्छा से अलग स्पोर्ट्समैन स्पिरिट से किया गया कर्म ही कर्मयोग है। इसी की परिणीति आज के कार्यक्रम में देखने को मिल रही है। डॉ वाजपेयी ने संयुक्त परिवारों जे अभाव में दम तोड़ती भारतीय संस्कृति और सभ्यता का जिक्र करते हुए कहा कि विकास और ह्रास समाज के अंग हैं। समाज को जीवंत रखने के प्रयास होते रहने चाहिए। एक रणनीति के तहत मैकाले के शिक्षा सिद्धांत ने गुरुकुलों के अस्तित्व को समाप्त कर दिया। इसके अभाव ने हमें आत्मतत्व के चिंतन से विमुख कर दिया। हम अपनी आध्यात्म विद्या को भूलते जा रहे हैं। युग परिवर्तन के साथ धर्म और आचरण की परिभाषाएं भी बदल जाती हैं। ऐसी कौन सी संस्था हो जो संयुक्त परिवारों से प्राप्त होने वाले नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित कर सके। इसके लिए ब्राह्मण समाज और विशेषकर **'कान्यकुब्ज मंच'** जैसी पत्रिका की भूमिका बढ़ जाती है। बदलते हुए समय की आपाधापी में ब्राह्मण अपने सामाजिक, मानवीय व नैतिक मूल्यों से च्युत न हो जाये, नई पीढ़ी को सकारात्मक दिशानिर्देश की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में विशेषरूप से उपस्थित **डॉ राकेश शुक्ल, डॉ प्रेमकुमारी मिश्रा, कस्तूरबा गर्ल्स इंटर कॉलेज की प्रबन्धक मिस डेमला, लोकसंगीतकार लक्ष्मीशंकर शुक्ल, प्रोफेसर गणेश गुप्त, डॉ के पी पाण्डेय, ममता त्रिवेदी** आदि को भी सम्मानित किया गया। समारोह के **संयोजक प्रमोद नारायण मिश्र** ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, सभापति, साहित्य, समाज व संगीत की त्रिवेणी से सम्मानित विभूतियों के प्रति आभार व्यक्त किया। समारोह में उपस्थित महानुभावों, मंच के सफल व अनुशासित संचालन के लिए **तुषमुल मिश्रा** व आयोजन को सफल बनाने में **श्री अरुण मिश्र, अजीत शुक्ल, अजय पाण्डेय, राजेश दीक्षित, अतुल पाण्डेय, ऋचा, अर्चित, शाश्वत** के प्रयासों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।❑

ग्वालियर में ब्राह्मण सम्मेलन

15 दिसम्बर 2019। कान्यकुब्ज ब्राह्मण महा सभा द्वारा शिवाजी भवन में आयोजित ब्राह्मण सम्मेलन में क्षेत्र विशेष की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। वैवाहिक परिचय सम्मेलन में 125 युवा प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर 'विप्र संदेश' स्मारिका का लोकार्पण भी हुआ। सम्मेलन में उपस्थित पं. महेश मिश्र (कानपुर), दिनेश अवस्थी (जयपुर), आरके शुक्ल, डॉ. अनीता मिश्रा (जयपुर), चन्द्रशेखर दीक्षित (कोटा), धर्मेन्द्र मिश्र (देवास), रामचन्द्र दुबे (इन्दौर), विधायक प्रवीण पाठक व संतोषानन्द महाराज आदि अतिथियों ने ब्राह्मणों की दिशा और दशा पर विचार व्यक्त किये।❑

सांसद सम्मान समारोह

5 दिसम्बर, 2019। नई दिल्ली के मावलंकर हॉल (कॉन्स्टिट्यूशन क्लब) में 17वीं लोकसभा के ब्राह्मण सांसदों का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह अखिल भारतीय ब्राह्मण महासंघ, ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया तथा सर्व ब्राह्मण महासभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था। उडुपी मठ के पीठाधीश्वर श्री श्री विश्वेश्वर तीर्थ महाराज जी के सभापतित्व में सम्पन्न हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे पद्मभूषण महामहोपाध्याय डॉ सत्यव्रत शास्त्री जी।❑

वैवाहिक विवरण

युवा वर्ग

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Aadhar	Kashyap		28.11.84	5'6"	B.Tech	Working	Dubai	Rajesh Tiwari	Lucknow	9415577890
2	Aayush			28.07.93	5'7"	MBBS	Indian Army Capt.	Jaipur	C Agnihotri	Jaipur	9829251065
3	Abhay	Katyayan		07.07.89	5'1"	B Tech	Working		Atul Mishra	Kanpur	9415734174
4	Abhijeet	Upmanyu		34 Yrs.	5'9"	M.B.A(IIM)	MNC	Mumbai	Y.K.Bajpai	Kanpur	9616423242
5	Abhijeet	Bhardwaj	Divorcee	14.08.79	5'10"	B.Com, MBA	Working	New Delhi	Vijay Trivedi	Lucknow	9026844909
6	Abhinav	Kashyap	Aadi	15.08.81	5'9"	B.Com,M.B.A.	Working	Lucknow	J N Mishra	Lucknow	9453005857
7	Abhinav	Katyayan	Madhya	13.03.88	6"	B.Tech	TCL	Pune	A.K.Dwivedi	Lucknow	9936452439
8	Abhishek	Kashyap	Aadi	07.04.89	5'5"	MA, Comp	State Govt	Tikamgarh	R R Pateriya	Tikamgarh	7987307518
9	Abhishek	Bhardwaj	Madhya	10.10.86	5'7	BCA MBA	Manager	Delhi	A. K Pandey	Lucknow	9450018055
10	Abhishek	Upmanyu	Madhya	18.11.90	5'8"	B Tech	MNC	Banglore	Girish Bajpai	Kanpur	9313340042
11	Abhishek	Upmanyu		16.02.93		B Tech MBA	Business		Mr Awasthi	Kolkata	9830082587
12	Abishek	Gautam		17.07.84	5'6"	B.Pharma MBA	Business	Sagar	R.K.Chaubay	Sagar	9302933999
13	Aditya			24.07.93	5'9"	LLB	Advocate	Delhi	A Tiwari	New Delhi	9711158848
14	Aishvarya	Kashyap	Antya	06.11.88	5'5"	MA,BED.	Working	Delhi	Rajesh Tripathi	Kanpur	9415569546
15	Ajay	Kashyap	Antya	12.06.88	5'9"	B Tech NIT	Tab Steel	Tata Nagar	M Mishra	Kanpur	9532377914
16	Ajay	Shandilya	Madhya	01.01.83	5'5"	Diploma	Self Employed	Aurangabad	V Mishra	Aurangabad	8482824522
17	Akanksh	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'5"	MBBS,MS(Ortho)	Doctor	Hyderabad	R. Dubey	Hyderabad	9676331222
18	Akash	Upmanyu	Aadi	11.07.90	5'11"	B.Tech	MNC		N Bajpai	Kanpur	7376299046
19	Akhil	Upmanyu	Madhya	28.06.93	5'8"	M.TECH(MNIT)	Cisco	Chennai	M.K Bajpai	Gwalior	9926518418
20	Akhilesh	Bharadwaj	Madhya	20.06.90	5'8"	B.COM	Service	Ludhiana	J SHUKLA	Kanpur	9779977894
21	Akhilesh	Bhardwaj	Manglik	17.12.87	6'	B.TECH	TCS	Kolkata	Pawan Shukla	Kolkata	9836067192
22	Akhilesh	Bhardwaj	Madhya	20.06.90	5'8"	B Com	Working	Ludhiana	J N Shukla		9779977894
23	Akshat	Kashyap	Madhya	21.06.84	5'10''	B Tech PGDM	SBI Bank		S Tiwari	Mirzapur	8948461866
24	Akshat	Upmanyu	Aadi	23.05.85	5'11''	M Com	Asst. Manager		G P Bajpai	Sadar	9422807561
25	Akshay	Katyayan	Aadi	18.11.88	5'8"	BBA, CCNA	MNC	Gurugram	U.N.Mishra	Lucknow	9897452185
26	Aman	Bharadwaj	Antya	08.10.91	6"	BE	Manager	Ambicapur	G Trivedi	Kanpur	8085783341
27	Amar	Upmanyu	Antya	25.12.85	5'5"	M.Tech.	MNC	Pune	R.C.Awasthi	Delhi	8527395603
28	Amit	Upmanyu	Antya	07.09.91	5'9"	BBA,LL.B	Manager	Noida	B.P Dwivedi	Kanpur	8604700313
29	Amit	Kashyap	Madhya	03.02.88	5'7"	B.E	Quality	Udaipur	G Tiwari	Udaipur	9414238854
30	Amit	Shandilya		15.08.84	5'8"	MCA,BED.	Teacher	Orai	A.K.Mishra	Orai	9889225623
31	Amit	Kashyap		29.03.84	5'	B.Tech	CCI	H P	Uma Dixit	Lucknow	9455508989
32	Amit	Kashyap	Aadi	17.10.90	5'9"	BBA MBA	Business		R Tiwari	Nagpur	7875911631
33	Amul	Shandilya		22.04.92	5'11"	B Tech M Tech	Civil Engg.		Mishra	Kanpur	9453041636
34	Anand	Garg		15.05.85	6'2"	B E	Service	Gujrat	Pratibha Shukla	Kanpur	9329955405
35	Anirudh	Kashyap	Antya	30.04.87	5'4"	M.SC	Working	Himanchal	B Tiwari	Himanchal	8800422667
36	Ankan	Shandilya	Antya	16.09.92	6'1"	B.Tech	Infosys	Mysore	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
37	Ankesh	Bhardwaj	Madhya	29.07.85	5'8"	B.Tech.,MBA	MNC	Banglore	A.K.Pandey	Bhopal	9425682050
38	Ankit	Shandilya	Antya	22.08.85	6'2"	B.Tech MBA	AVP	Kanpur	A Mishra	Kanpur	9936483912
39	Ankit	Bhardwaj		11.03.87	6'	B Tech	Service	Banglore	R Trivedi	Kanpur	9450125732
40	Ankit	Bhardwaj		14.05.85	5'7"	M Com, MBA	Working	Noida	K K Pandey	Kanpur	9336998383
41	Ankit	Kashyap		20.12.90	5'8"	M Pharma MBA	Working	Vadoda	C P Tiwari	Lucknow	9450840265
42	Ankit	Bhardwaj		24.04.91	5'9"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	S K Shukla	Kanpur	9839303507
43	Ankit	Shandilya		08.05.90	6"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	A K Mishra	Orai	9889225623
44	Ankur	Kashyap	Madhya	29.06.88	6'1"	B.Tech	Soft Engg	Pune	R S tiwari	Bilaspur	7000649784
45	Ankur	Bhardwaj		22.08.85	5'8"	MBBS	Doctor	Lucknow	Vinod Shukla	Lucknow	9005716002

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Ankush	Bhardwaj		16.11.92	5'11"	Graduate	Sofft. Engg.	USA	AK Pandey	Delhi	9899784632
47	Antariksh	Katyayan	Aadi	23.11.89	5.7'	B-Tech,	MNC	Gurugram	K.K. Mishra	Kanpur	9415431600
48	Anu	Kashyap		13.06.89	5'9"	MBBS	Metro Hospital	Delhi	S.G Dixit	Farukhabad	7974621202
49	Anugrah	Bhardwaj	Aadi	03.08.90	5'10"	B.Tec	Soft Engg	Lucknow	J K Dixit	Farukhabad	9415564604
50	Anuj	Upamanyu	Antya	8.15.74	5'5"	BA	Service	Mumbai	AK Dwivedi	Jalaun UP	9322141455
51	Anupam	Kashyap	Antya	15.07.88	5'5"	M.Com,MBA	Moody's	Gurgaon	N.S Tripathi	Lucknow	8299654731
52	Anuraag	Upmanyu		14.11.82	5'5"	B.Tech	Engg.	Maldives	S.N.Dwivedi	Unnao	9450056609
53	Anuraag	Bhardwaj		27.05.87	5'9"	B.Tech	SAIL	West Bangal	Anil Pandey	Sitapur	9839717959
54	Arihant	Bhardwaj		01.08.88	6'2"	MBA	MNC	Hyderabad	A Shukla	Hyderabad	9704916421
55	Arpit	Upmanyu	Madhya	15.11.87	6ft	B. Tech	Branch Manager	New Delhi	Rawasthi	Rewa	9399628312
56	Arpit	Upmanyu	Aadi	13.08.93	5'8"	B E	Working	Ratlam	M Awasthi	Indore	9806403394
57	Arvind	Upmanya	Antya	25.08.88	5'4"	BA	Self Employ	Lucknow	S.N Dwivedi	Haidergarh	9455871884
58	Ashish	Upmanyu	Aadi	01.06.86	5'8"	BE	TCS	USA	R.S Dubey	Muzaffarpur	9430933254
59	Ashish	Upmanyu		09.09.88	5'9"	B.A.	Business	Lucknow	R.N.Trivdi	Lucknow	9454242424
60	Ashish	Upmanyu	Aadi	07.11.81	5'7"	B Tech, MBA	MNC	Lucknow	A K Awasthi	Lucknow	9936400675
61	Ashish	Upmanyu	Antya	03.08.86	5'6"	B.Tech	MNC	Gurugram	R.P. Dwivedi	Jhansi	9452598145
62	Ashish	Katyayan		24.06.88	5'8"	BA. B Ed	Reliance	Kanpur	S K Mishra	Hardoi	9369265810
63	Ashish	Bhardwaj	Madhya	21.11.87	5'7"	B Tech	MNC	Pune	S K Shukla	Kanpur	9450336902
64	Ashish	Katyayan	Madhya	27.07.85	5'10"	MBA	IBM	Banglore	A Mishra	Kanpur	9450635424
65	Ashish	Bhardwaj	Antya	25.09.89	5'7"	BE,MTech	Service	Kuwait City	Y.S Shukla	Unnao	8369492792
66	Ashish	Bhardwaj		33 Yrs.	5'6"	High school	Business	Kanpur	S K Shukla	Kanpur	7752944773
67	Ashish	Kashyap		20.07.91	5'8"	Civil Engg.	Engineer		Tiwari	Ghaziabad	9910635619
68	Ashish	Bhardwaj	Antya	11.04.88	5'8"	BE Engg.	Service	Bhopal	A K Trivedi	Bhopal	9425600600
69	Ashish	Bharadwaj	Aadi	17.11.89	5'9"	B.Tech	Working	Singrauli	U Shukla	Gaya	8544310205
70	Ashish	Bharadwaj	Aadi	06.01.92	5'3"	BE	Service	Vapi	Rajesh Shukla	Mumbai	9265048500
71	Ashu	Sandilya		24.12.88	5'2"	MCA	Working	Patna	S K Dixit	Delhi	9811235591
72	Ashutosh	Upmanyu	Madhya	01.10.88	5'8"	BSC	Merchant Navy		G N Bajpai	Kanpur	9453815215
73	Ashutosh	Katyayan		04.03.92	5'10"	B.com M.com	Working	Dehradun	A K Mishra	Rishikesh	9837089868
74	Ashwani	Bhardwaj		31.07.83	5'6"	BA	Business	Kanpur	S Shukla	Kanpur	9657666327
75	ATUL	Katyayan	Madhya	11.02.90	5'8"	INTER	Railways	Indore	Mr. Mishra	Indore	9907313168
76	Bhasker	Katyayan	Aadi	11.01.87	5'10"	M.com LLB	Practice Court	Kanpur	G D Mishra	Kanpur	9452496423
77	Brahmendra	Kashyap	Madhya	19.02.80	5'7"	BCom	Photographer	Jabalpur	B. Tiwari	Jabalpur	9907286364
78	Chakrapadi	Katyayan		01.12.89	5'9"	B Tech(NITN)	PCS Officer	Utrakhand	R J Mishra	Lucknow	9415752075
79	Chandan	Upmanyu		25.12.86	5'9"	B.A	Business	Lucknow	J.P.Awasthi	Lucknow	9936530032
80	Chandra Prakash	Kashyap	Antya	31.01.84	5.6'	M.Com	Business	Kanpur	B.S. Tripathi	Kanpur	9044512978
81	Chandrasekhar	Bhardwaj	Madhya	09.01.87	5"6	MAC, BAD	Teacher	Jhabua	Azad Sharma	Jhabua	9714709819
82	Deepak	Bhardwaj		16.09.85	5'11"	IIT M.Tech	Bank Manager	Mumbai	Manju Trivedi	Kanpur	9415727581
83	Deepankar	Upmanyu	Antya	03.06.88	5'8"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	D Dwivedi	Kanpur	9415479269
84	Devas	Bhardwaj		08.02.87	5'9''	BE	Working	Delhi	D K Shukla	Kota	9414189670
85	Devesh	Bhardwaj		27.07.81	5'9"	B.Sc, MBA	Officer PSU	Gandhinagar	S.C. Shukla	Gandhinagar	9737877705
86	Divyanshu	Katyayan	Madhya	13.12.87	5'9"	MBA	Astt Mngr	Delhi	A.K. Mishra	Lucknow	9838792102
87	Dr Dharmes	Kashyap	Aadi	13.11.83	5'9	B.D.S	Practice	Dubai	Mrs P Tewari	Lucknow	9554477880
88	Gajendra	Kashyap		31.08.89	5'8"	B.com	Business	Jabalpur	K P Tiwari	Jabalpur	9907286364
89	Ganesh	Upmanyu		33 YRS.	5'8"	IIT,ISB	Service	Gurugram	O.P.Awasthi	Kanpur	9935317848
90	Gaurav	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'8"	BE	Soft.	Banglore	D Shukla	Raipur	9425205383
91	Gaurav	Upmanyu	Madhya	27.04.88	5'10"	B.TECH, MBA	Regional Mngr	Lucknow	S.C Bajpai	Lucknow	9452735770
92	Gaurav	Shandilya		24.02.87	5'6"	MA	PNB	Kanpur	R.S Mishra	Kanpur	9918475086
93	Gaurav	Katyayan		24.10.90	5'7"	BE	Project Engg	Pune	S.K Mishra	Lucknow	8840284768
94	Gaurav	Bhardwaj	Madhya	23.10.88	6"	B TECH	DELL	Noida	D.K Pandey	Kanpur	7599101722
95	Gaurav	Shandilya	Aadi	02.12.87	5'11"	B Tech(NIT), PGDM	ICICI Bank	NCR	O.S.Mishra	Kanpur	9935616625

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
97	Gaurav	Kashyap	Antya	12.06.85	5'5"	B.TECH, MBA	Business	Orai	S.R Dwivedi	Jalaun	8382947554
98	Gaurav	Sandilya	Aadi	02.11.91	5'6"	B.Tech	Soft.Engineer	Delhi	S.D Mishra	Hardoi	9811733294
99	Hariom	Bhardwaj	Madhya	07.03.88	188cm	B Tech NIT	MNC	Delhi	R Shukla	Bhopal	9849158318
100	Haritabh	Sankrit		30.09.86	5'7"	M B A	Self Employed	Kanpur	Ajay Shukla	Kanpur	9415050280
101	Harsh	Bhardwaj		29.01.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Jayant Shukla	Kanpur	9919333014
102	Harsh Vardhan	Upmanyu		16.01.88	5'8"	B.Tech.,MS	Working	USA	P.K.Dwivedi	Delhi	9871898222
103	Harshal	Kashyap	Aadi	19.12.88	5'9"	BA MSHW	Business	Maharastra	R.S Tiwari	Risod	9921260143
104	Hemant	Bhardwaj	Aadi	30 yrs	5'5"	LLB	Advocate	Lucknow	S N Pandey	Lucknow	9044421708
105	Himanshu	Katyayan	Antya	08.11.86	5'8"	B.Tech, MBA	Mercedez	Bengaluru	P.K. Mishra	Varanasi	9451938889
106	Himanshu	Shandilya		22.09.88	5'7"	B.Tech	TCS	Pune	A.N. Dixit	Gorakhpur	8588071087
107	Himanshu	Bhardwaj	Aadi	06.02.88	5'5"	BBA,MBA	Axis Bank	Mumbai	S.C.Shukla	Lucknow	9839014905
108	Himanshu	Katyayan		05.06.90	5'7"	B.Tech	Civil Engg.	Sultanpur	R.N Mishra	Kanpur	9415727238
109	Himanshu	Katyayan		05.06.90	5'7"	B Sc B Tech	Civil Engg.	Ranchi	R N Mishra	Kanpur	9415727238
110	Ishan	Upmanyu	Antya	16.6.89	5'7"	B.Sc	Indian Army Capt.	J&K	Mahesh Dixit	Bhopal	7587598015
111	Jayant	Upmanyu		10.09.87	5'7"	B.Tech.,MBA	MNC	Gurugram	P.K.Agnihotri	Kanpur	9936150917
112	Jaypraksh	Shandilya	Madhya	22.08.84	5'7"	com. hard .eng.	Engineer	aurangabad	Vijay Mishra	Aurangabad	8482824522
113	Kanhaiya	Upmanyu	Aadi	19.11.90	5'6"	B. Com,	Working	Andheri	K Dubey	Jhansi	8007256328
114	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6"	BE M tech	Working	Gurgaon	G Awasthi	Ghaziabad	9924292224
115	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6"	M Tech	Engineer	Gurgaon	K Awasthi	Gujrat	9824233659
116	Kartikeya	Katyayan	Madhya	25.11.88	6'	B.Com LL.B	Practicing	Noida	Suman Mishra	Delhi	9818678011
117	Kshitij	Upmanyu	Madhya	05.06.88	5'10"	B.Tech	MNC	Noida	V.K.Agnihotri	Gahziabad	8130743430
118	Kshitij	Kashyap		24.03.91	5'10"	BE (BITS)	Working	Mumbai	P Tripathi	Unnao	9804242502
119	Kunaal	Shandilya	Antya	03.06.85	5'8"	B.Tech.,	S.W Engg	Mumbai	R.K.Mishra	Lucknow	9918383464
120	Kunal	Bhardwaj	Aadi	22.01.84	6'1"	MBA	Working	Lucknow	Kunal Shukla	Lakhimpur	8808089152
121	Kush	Sankrit	Antya	02.09.88	5'9"	B.Tech	Bharti Airtel	Mumbai	S.P. Shukla	Kanpur	9889553612
122	Mahesh	Sankrit	Antya	14.12.89	5'9"	MBA	Bank	Jagdalpur	R K Pandey	Reewa	9109711683
123	Maj. Ram	Upmanyu		27.03.89	5'8"	B.Tech	Indian Army		R.K. Dubey	Jabalpur	9424357435
124	Malay	Kashyap	Aadi	19.09.90	5'8"	B.TECH	Bajaj	Lakhimpur	P.N Tiwari	Kanpur	9452364432
125	Manish	Kashyap	Madhya	27.09.78	5'6"	M.Com, MBA, LLB	Advocate	Bhopal	G.M.Tripathi	Kanpur	9753416001
126	Manish	Upmanyu		10.08.82	5'10"	M Tech	L&T	Vadodara	Y N Bajpai	Kanpur	9336123644
127	Manu	Katyayan	Aadi	06.07.84	5'8"	MCA MS	Working	Cikago	A.K.Mishra	Bareili	9410431399
128	Manu	Upmanyu	Antya	24.06.87	6'	B.Tech.,	P.O.Bank		R K Awasthi	Lucknow	9936213811
129	Mayank	Bhardwaj	Aadi	22.12.83	5'10"	B.Tech.,	R Jio	Kanpur	P.Shukla	Kanpur	9807147903
130	Mayank	Bhardwaj	Madhya	28.12.88	6"	B.Tech	Working	Bengaluru	P.R. Shukla	Jhansi	7869822090
131	Mayank	Katyayan	Aadi	17.10.85	5'8"	B.Des(NIFT)	Lifestyle	Bengaluru	S.K. Mishra	Kanpur	9415438164
132	Mayank	Upmanyu	Antya	30.06.87	5'6"	BBA MBA	Working	Gurgaon	A K Awasthi	Kanpur	9532098695
133	Mayank	Upmanyu		11.06.89	5'10"	BE M tech	Working	Hyderabad	M K Dubey	Indore	9993912186
134	Mayank	Bhardwaj		19.08.87	6'1"	Enginering	Merchant Navy		Y Shukla	Kanpur	9935968533
135	Mohit	Bhardwaj		09.10.89	5'6"	B.COM, BED	Business	Kanpur	O.P Shukla	Kanpur	9839104819
136	Mohit	Bhardwaj	Aadi	19.08.92	5'9"	B Tech	L & T	Varodra	A Shukla	Agra	9528324823
137	Mridul	Kashyap		15.08.88	5'6"	B.Tech	Ericsson	Delhi	A.K.Tripathi	Jhansi	9453622253
138	Mukul	Upmanyu	Madhya	08.06.88	5'8"	BSc, MCA	Govt. Job	Lucknow	U.C. Bajpai	Lucknow	9889719019
139	Mukul	Bhardwaj	Antya	02.10.92	5'7"	M.TECH	Assistant professor	Raipur	Ravikant Trivedi	Raipur	9425201545
140	Narendra	Katyayan		06.11.78	5'6"	B.A.	OWN Biz.	Kanpur	P.K.Mishra	Kanpur	7355717632
141	Narendra	Shandilya	Madhya	07.12.86	5'11"	B.A., PGDCA	Self Employed	Indore	S.D Dixit	Indore	9424012517
142	Nikhar	Kashyap		22.05.91	5'11"	B SC MBA	Senior Analyst	Gurugram	N Tripathi	Kanpur	8299726705
143	Nikit	Kashyap		10.10.86	5'7"	BDS MDS	Pursuing MDS	Jabalpur	R.K.Dixit	Jabalpur	9424471221
144	Nishit	Katyayan	Antya	03.09.88	5'8"	B.Tech.,	TCS	Lucknow	Vinodmishra	Lucknow	9415904841
145	Nitin	Shandilya		23.04.87	5'9"	B.Com, MBA	Service	Amrawati	P Mishra	Amrawati	8600998355

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Nitin	Shandilya	Madhya	23.01.87	6'2"	MCA	Lecturer	Bhopal	Indresh Dixit	Bhopal	7000201357
147	Nitish	Bhardwaj	Madhya	08.03.90	6'2"	B com MBA	Manager	Pune	VK Shukla	Pune	8806992260
148	Oaj	Upmanyu	Madhya	20.04.90	6'3"	B.Com, MBA	Reliance	Mumbai	Mr Dubey	Indore	9424010082
149	Pawan	Upmanyu		24.04.84	5'7"	B.A.	Service	Jaunpur	O.P. Dewedi	Kannoj	9651587429
150	Pourush	Upmanyu	Aadi	19.09.88	5'11"	BE, M.Tech	SBI	Durg	Arvind Awasthi	Bhilai	7409175092
151	Prakhar	Shandilya		26.03.91	5'9"	BBA	Self Employed	Kanpur	Meena Dixit	Kanpur	9044098331
152	Pranjal	Kashyap	Antya	25.04.88	5'7"	B.Tech	HP	Bengaluru	Prakash Tiwari	Unnao	9450020858
153	Prashant	Upmanyu	Antya	05.01.88	5'9"	M.Sc.(BITS Pilani	Oracle	Banglore	S.K.Awasthi	Kanpur	8720053266
154	Prashant	Upmanyu		27.09.89	5'9"	B Com, MBA	Service	Delhi	A Awasthi	Lucknow	9450652296
155	Prashant	Upmanyu	Madhyaa	01.07.90	5'11"	M Com M sc	Company	Haryana	H S Bajpai	Haryana	8882362115
156	Prateek	Katyayan	Aadi	26.10.89	5'11"	B.TECH, MBA	MNC		Beena Mishra	Kanpur	9347529454
157	Pritesh	Sankrit	Aadi	24.12.90	5'6"	B Tech	Company	Delhi	A Shukla	Kanpur	9454087264
158	Pushpendr	Kashyap		02.07.91	5'11"	B Tech	Govt.itnruction	Kanpur	Rajesh Tripathi	Kanpur	7510086965
159	Raghav	Shandilya	Aadi	08.08.90	5'7"	M Tech	Analytics	Mumbai	S.K.MISHRA	Kanpur	9415590749
160	Rahul	Kashyap	Madhya	16.11.83	5'11"	B. Tech, MBA	E Value Serve	Gurugram	Anand Tripathi	Etawah	9411993442
161	Rahul	Kaushik	Antya	06.01.86	5'11"	B.COM, MBA	Self Employed	Sagar	S.G Dubey	Sagar	8889022999
162	Rahul	Katyayan	Aadi	16.07.85	5'4"		KESCO	Kanpur	B P Mishra	Kanpur	9473693278
163	Rahul	Katyayani	Antya	04.09.89	5"11	MBA	Pvt Job	Barelliy	B.K. mishra	bareilly	8126565600
164	Raj Kishore	Katyayan	Aadi	04.05.70	5'9	M,Com LL.B	Advocate	Hyderabad	G Mishra	Hyderabad	9848560876
165	Rajan	Bhardwaj	Antya	12.01.90	5'9"	BE	Soft. Engg.	Pune	C Chaturvedi	BHOPAL	9406903868
166	Rajiv	Katyayan		19.06.90	5'10"	B Tech	MNC	Gurugram	N K Mishra	Kanpur	7275990253
167	Ram	Sankrit		08.03.77	5'10"	B.Com	INVEST. ADVO.	Kanpur	G.S.Shukla	Kanpur	9889526808
168	Ranaveer	Severn		28.08.85	5'10"	B.Tech.,	Oracle	Banglore	J.N.Tiwari	Kanpur	9415133084
169	Raval Sagar	Bharadwaj	Aadi	10.11.89	5'3"	10th, ITI	Business	Dist. Su.Nagar	Prabhasankar	Gujarat	8200989584
170	Ravi	Bhardwaj		27.11.86	5'6"	B.Tech.,	HCL	Noida	A.K.Pandey	Lucknow	9451002606
171	Ravi	Shandilya	-	13.09.87	6'2"	B.Sc	Manager Bank	Karnal	M.M. Mishra	Kanpur	9695666443
172	Ravi	Kashyap		17.09.91	5'4"	B.Sc	Bank P.O	Raigarh	Santosh Tiwari	Kanpur	9005300831
173	Rishee	Bhardwaj		07.11.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Y.K.Pandey	Jaipur	9929115628
174	Rishi	Kaundanya	Madhya	23.02.88	6'3"	B.E, M.Tech	Govt. Service	Jabalpur	Vinita Bajpai	Jabalpur	9755669043
175	Ritam	Bhardwaj	Madhya	07.06.92	5'8"	B Tech	Amazon.com	Seattle	Pranav Shukla	Kanpur	9839212801
176	Robin	Katyayan	Madhya	24.08.86	5'9"	B.Tech	Asst. Manager	Mumbai	S.C.Agnihotri	Lucknow	9451063051
177	Rohan			18.04.86	5'10"	LLM MBA	Manager	Mumbai	V Sharma	Amrawati	9370930777
178	Rohit	Upmanyu	Madhya	08.09.86	5'7"	B. Com	Service	Nasik	R.M Bajpai	Nasik	9623962111
179	Rohit	Bhardwaj		16.06.92	5'6"	B COM	Business	Kanpur	O P Shukla	Kanpur	7860419999
180	Rohit	Upmanyu	Antya	01.05.87	5'8"	BE, MS	Working	California	D.M Dubey	Solapur	9370422380
181	Rohitash			09.05.85	5'8"	B.Sc,MBA	Working	Ghaziabad	S N Mishra	Barabanki	9451529439
182	Salil	Bhardwaj	Aadi	15.11.88	5'5"	B.TECH	Oracle	Chennai	A.K Dixit	Agra	9758935949
183	Sandeep	Bhardwaj	Madhya	26.11.85	5'10"	B.E., M.Tech.(IT)	Assistant Professor	Nasik	P.G Shukla	Pansemal	9407492929
184	Sanjay	Kashyap		08.06.71	5'4"	BA	Working	Raiberely	H.S.Tiwari	Raibarelly	5352211555
185	Saurabh	Upmanyu	Aadi	16.09.89	6'	B Sc	Central Govt	New Delhi	A Dwivedi	Jhansi	9236923675
186	Saurabh	Katyayan	Antya	24.04.88	5'6"	MBA	Working	Lucknow	Arvind Mishra	Lucknow	9120110396
187	Saurabh	Bhardwaj	Madhya	07.12.82	6'	M.Com .	Govt Service	Kota	R.K.Shukla	Kota	9414938823
188	Saurabh	Bhardwaj	Aadi	01.06.84	5'6"	Diploma	VOLTAS	Kanpur	A.P.Shukla	Kanpur	9335121850
189	Saurabh	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'9"	B Com PGDCA	Civil		D Shukla	Raipur	9425205383
190	SAURABH	Gargeya	Antya	16.06.91	5'10"	B.Tech, MBA	Colgate Palmolive	Chennai	L.K Pandey	Allahbad	9424120637
191	Saurabh	Upmanyu	Aadi	27.08.88	5'7"	B.Tech, MBA	Asst. Manager	Lucknow	T.N Dwivedi	Lucknow	9936101701
192	Shailendra	Shandilya	Madhya	23.07.83	6'	MBBS	Pursuing MD		R.C.Dixit	Unnao	9793261855
193	Sharad	Upmanyu	Manglik	19.08.86	5'3"	MBA	MNC	Lucknow	S.K Awasthi	Lucknow	9696944128
194	Sharad			26.10.85		BCA	Sales Officer	Mumbai	S P Tiwari	Kanpur	9628835452
195	Shashank	Kashyap		28.12.86	5'6"	B.Sc ,MBA	Working	USA	Umesh Tiwary	Delhi	9818707398

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Shashwat	Bhardwaj		25.09.87		B.Tech,MBA		Dubai	R Pandey	Kanpur	9415733447
197	Shashwat	Shandilya	Antya	19.10.88	5'10"	B Sc	Central Excise	Karvi	A C Dixit	Lucknow	8052691999
198	Shashwat	Bhardwaj		Sep-87	5'6"	B Tech MBA	MNC Wkg	Dubai	A K Pandey		9415733447
199	Sheel	Kashyap	Antya	28.12.78	5'8"	M.Sc, MBA	Lecturer	Lucknow	G.H.Awasthi	Lucknow	9415794589
200	Shikhar	Kashyap	Madhya	11.08.89		MBA	Own Biz.	Raipur	S Tiwari	Pune	7250011947
201	Shishir	Bhardwaj	Antya	28 YRS.	5'8"	B Tech	MNC	Bengaluru	A K Trivedi	Shuklaganj	9451548120
202	Shivam	Kashyap		01.02.88	5'9"	MCA	Working	Kanpur	R.K Tripathi	Kanpur	8381824446
203	Shivam	Kashyap	Aadi	10.01.90	5'6"	MCA	TCS	Indore	VK Tripathi	Lucknow	9260969436
204	Shivam	Kashyap		28.08.90	5'6"	B Tech	Asst. Manager	Panipat	P K Tripathi	Faridabad	8447438966
205	Shobhit	Sankrit		04.03.93	5'8"	B Tech	Automobile Engg	Banglore	V.P Mishra	Lucknow	9454835232
206	Shobhit	Kashyap		09.07.93	5'8"	B Tech	Job	Gurgaon	H Tripathi	Kanpur	9653076145
207	Shreesh	Bhardwaj	Aadi	20.05.86	5'8"	B.Tech	Service	Jaipur	D.C.Pandey	Lucknow	9454455723
208	Shrey	Sankrit	Madhya	23.12.82	5'9"	B Tech	TCS	Lucknow	S N Shukla	Lucknow	7846786559
209	Shreyansh	Kashyap		02.12.92	6'2"	BE	Business		S Tiwari	Kalapatha	9425193234
210	Shreyas	Kasyap	Aadi	31.10.88	5'7"	B Tech NIT	Business		A Trivedi	Maharastra	9820211630
211	Shubham	Vats	Madhya	13.02.88	5'10"	B.Tech	MNC	Ahmedabad	Anil Tiwari	Etawah	9415409967
212	Shubhendru	Upmanyu		09.11.86	6'	MS, PHD(USA)	Research Astt	Chicago	M.L.Trivedi	Pune	9096257755
213	Shubrat	Kashyap	Aadi	17.06.83	5'8"	M.Com,MBA	Genpact	Gurugram	Ravi Tripathi	Kanpur	7275508227
214	Sidharth	Bhardwaj	Madhya	17.07.88	5'7"	B Tech	Working	Pune	R K Pandey	Kanpur	9415210728
215	Sidharth	Upmanyu	Aadi	29.07.91	6'2"	H Management	Working	USA	R Trivedi	Ahmedabad	9898474922
216	Sonu	Bhardwaj	Aditya	11.11.85	5'7"	M Tech	Working	Noida	S K Pandey	Gwalior	9407015945
217	Sonu	Bhardwaj	Aadi	24.11.85	5'9"	M Tech	MNC	noida	S K Pandey	Gwalior	9407465886
218	Suchitan	Upmanyu	Madhya	29.11.86	5'11"	MBA	Lecturer	Kanpur	S.N.Trivedi	Kanpur	9839300303
219	Sunil	Bhardwaj	Aadi	09.09.84	5'7"	MCA	Selt Occupied	Banglore	A Dubey	Kanpur	9739060321
220	Sunny	Shandilya	Antya	19.09.87	5'11"	B Tech NIT	Tata Motors	Mumbai	G Dixit	Gwalior	9425338155
221	Suraj	Kashyap	Antya	06.03.89	5,7	MBA	Service	Durg	B Tiwari	Durg {C.G.}	9827190303
222	Sushant			26.11.85	6'1"	B.Sc.MBA	Working	Delhi	H.D.Chaubey	Rajgarh	9939484830
223	Suyash	Upmanyu	Antya	20.01.88	5'11"	B.Com.	Mktg. Executive	Rajnandgaon	Sunil Bajpai	Kanpur	9301737555
224	Udayan	Shandilya		22.11.86	5'5"	M.Sc MBA	Govt. Ltd	Gwalior	Y D Mishra	Gwalior	9826297917
225	Utkarsh	Shandilya		22.02.88	5'11"	M.Tech.(BITS)	MNC	Banglore	P.K.Mishra	Kanpur	7275743955
226	Utkarsh	Katyayan	Antya	05.06.86	5'9"	MBA	Medical Biz	Lakhimpur	D.C.Misra	Lakhimpur	9451687980
227	Vaibhav	Garg	Madhya	16.06.91	6'1"	B.TECH	Bank(PO)	Merath	H.K Chaturvedi	Kanpur	9792877087
228	Vaibhav	Bhardwaj		22.08.87	5'6"	B.Tech.,	Ericsson	Gurugram	K.K.Shukla	Kanpur	9958281964
229	Vaibhav	Shandilya	Antya	04.06.90	5'6"	B.Com, MBA	AXIS Bank	New Delhi	V K Mishra	Pilibhit	9410626492
230	Vaibhav	Upmanyu	Antya	30.07.90	5'9"	B.Tech	Power Plant	M.P	S.K. Bajpai	Merath	9358350093
231	Vaibhav	Kashyap		27.01.88	6"	CS LLB	Working	Delhi	M Tiwari	Ghaziabad	8932072346
232	Vaibhav	Shandilya		29.05.94	6"	B Com	Business	Lucknow	S K Mishra	Lucknow	7007709259
233	Ved Vikas	Shandilya	Antya	05.03.91	5'8"	M.SC. B.ED	Teacher	Ahmedabad	A.K Dixit	Unnao	9913200388
234	Vibhor	Bhardwaj		27.11.92		B Tech	Asst. Engg.		Shukla	Lucknow	9794883336
235	Vijay	Kashyap	Madhyaa	01.01.91	5'4"	BSc (Maths), ITI	Self Employed	Bhopal	Ajju Tiwari		7000069991
236	Vikaas	Bhardwaj	Antya	26.10.82	5'4"	MCA	S.W Engg	Noida	K.K.Bhardwaj	Kanpur	9793821021
237	Vikash	Kashyap	Antya	11.08.80	5'8"	MBA	Working	Ahmedabad	ROHINI	BHOPAL	9911005470
238	Vikash	Upmanyu		10.10.82	5'10"	M COM	Private	Kanpur	V K Awasthi	Kanpur	6393239247
239	Vimal	Kashyap	Aadi	10.01.88	5'7"	B.Tech.	Service	Pune	K Tiwari	Kanpur	9561478019
240	Vinay	Upmanyu		02.12.76	5'8"	MA. LLB	Govt Service	Burhanpur	Mrs Awasthi	Burhanpur	9165311846
241	Vinay	Upmanyu		08.11.89	5'8"	B Tech	Infosys	Hyderabad	K L Awasthi	Lucknow	9450458064
242	Vinod	-	-	15.02.82	5'9"	-	Business	Kanpur	S N Diwedi	Kanpur	7398163285
243	Vishaal	Garg		27.12.87	5'10"	BCA MBA	MNC	Delhi	R.K.Shukla	Lucknow	9936977763
244	Vishal	Upmanyu		29.02.92	5'11'	B.SC	Indian Airforce	Hyderabad	G Bajpai	Kanpur	9889315397
245	Vishal	Sandley	Antya	10.11.92	5,9"	M A	R Jio	Lucknow	S Mishra	Lucknow	9935832287

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Vishesh	Kaushik		30.04.92	6'2"	M.Com	Sr. Consultant	Melbourne	Vipin Dubey	Bhopal	8109838010
247	Vivek	Bhardwaj	Aadi	07.11.84	5'10"	B.Tech.,	S.W Engg	Delhi	R.C.Pandey	Kanpur	9450327506
248	Vivek	Kashyap		22.03.76	5'8"	B.Com	Service	Lucknow	S.K.Sharma	Lucknow	9450112576
249	Vivek	Kashyap		10.07.73	5'6"	Double MA	Service	Kanpur	H.S.Tiwari	Kanpur	9455753557
250	Vivek	Upmanyu		04.12.90	5'11"	MCA	Sofft. Engg.	Gurgaon	R S Tiwari	Kanpur	9839475032
251	Yash	Bhardwaj		23.03.85	5'8"	B.Tech	Working	Delhi	P.Trivedi	Delhi	9868941052
252	Yash	Shandilya	Madhyaa	12.01.89	5'8	Graduate	Sales	Delhi	A Mishra	Delhi	9718166678
253	Yogendra	Bhardwaj	Antya	31.10.78	5'4"	B.A, L.L.B.	Lecturer	Kanpur	Y.K.Pandey	Kanpur	9455373843
254	Yogesh	Bhardwaj		30.03.91	5'7"	B.Tech.,	Astt Mngr	Chennai	S.C.Pandey	Kolkata	9903633761
255	Yogesh	Kashyap	Aadi	26.12.89	5'3"	M.Com, MA, LLB	Advocate	Philibhit	Mrs Pathak	Bithra	9759718916

विवाह परिवार का मूल है

बृजेश कुमार तिवारी, नई दिल्ली

- आज जब हमारा समाज उस दौर से गुजर रहा है, जब शादी से तलाक तक का सफर कुछ ही माह में तय कर लिया जा रहा हो, तो जरूरत इस बात की है कि हमें बाहरी आकर्षणों से अधिक भीतरी गुणों को, फाइनेंशियल स्टेटस से अधिक संस्कारों के स्टेटस को, चेहरे की सुंदरता से अधिक मन की सुंदरता को तरजीह देना होगी।
- जिस रिश्ते की नींव बाहरी और भौतिक आकर्षणों पर रखी जाती है, वो एक हल्के से हवा के झोंके से ताश के पत्तों की तरह ढह जाती है। लेकिन जिन रिश्तों की नींव आत्मा और हृदय जैसे गंभीर भावों पर टिकी होती है, वो आंधियों को भी अपने आगे झुकने के लिए मजबूर कर देती है।
- आज के इस भौतिकवादी दौर में जब हम लड़का या लड़की देखते हैं तो हमारी लिस्ट में लड़के या लड़की का आर्थिक पैकेज होता है, उनके संस्कार नहीं। उनकी शारीरिक सुंदरता जैसे बाहरी विषय होते हैं, उनके आचरण और विचारों की शुद्धता नहीं।
- कहने को तलाक की अनेक वजहें हो सकती हैं लेकिन समझने वाली बात यह है कि केस कोई भी हो, तलाक की केवल एक ही वजह होती है- 'एक-दूसरे के साथ तालमेल ना बैठा पाना' या 'एक-दूसरे के साथ सामंजस्य न होना'।
- भारत में लगभग 14 लाख लोग तलाकशुदा हैं, जो कि कुल आबादी का करीब 0.11% है और शादीशुदा आबादी का 0.24% हिस्सा है। चिंता की बात यह है कि भारत जैसे देश में भी यह आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है।
- ऐसे टूटे परिवारों के बच्चे कल कैसे वयस्क बनेंगें और कैसा समाज बनाएंगे?
- जीवन के चार पुरुषार्थों को हासिल करने की एक आध्यात्मिक साधना, जिसे पति-पत्नी एकसाथ मिलकर पूर्ण करते हैं। यह एक ऐसा पवित्र बंधन है जो तीन स्तंभों पर टिका है, रति, धर्म और प्रज्ञा (संतान)। जीवन के चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास, में से एक महत्वपूर्ण आश्रम गृहस्थ, जिसका लक्ष्य शेष आश्रमों के साधकों के प्रति अपने दायित्वों का एक-दूसरे के साथ मिलकर निर्वाह करना एवं संतानोत्पत्ति के द्वारा एक श्रेष्ठ नई पीढ़ी को तैयार करना एवं पितृ ऋण को चुकाना होता है।
- विवाह, यह भारतीय संस्कृति में वेस्टर्न कल्चर की तरह जीवन में घटित होने वाली एक घटना मात्र नहीं है और न ही यह केवल एक स्त्री और पुरुष के बीच अपनी-अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का साधन है। सनातन परंपरा में यह एक संस्कार है।सनातन संस्कृति में यह सभी संस्कार या कर्म जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने का मार्ग होते हैं, क्योंकि जब हम मोक्ष की राह, धर्म, अर्थ काम मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की बात करते हैं तो यह समझना बेहद आवश्यक होता है कि यहां धर्म का अर्थ रिलीजन न होकर 'धार्यते इति धर्मः' अर्थात धारण करने योग्य आचरण या व्यवहार है और इसलिए यहां धर्म केवल इन चार पुरुषार्थों में से एक पुरुषार्थ न होकर चारों पुरुषार्थों का मूल है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए धर्म का पालन जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है।
- अतः धर्म (आचरण) धर्मयुक्त हो, अर्थ यानी पैसा भी धर्मयुक्त हो, और काम अर्थात कामवासना की पूर्ति भी धर्मयुक्त हो, तभी मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इस प्रकार से विवाह (वि, वाह) अर्थात एक ऐसा बंधन होता, जिसमें स्त्री पुरुष दोनों मिलकर सृष्टि के प्रति अपनी विशेष जिम्मेदारियों का वहन करते हैं
- धारा 497 को लेकर सुप्रीम कोर्ट के हाल के निर्णय को ही लें। निर्णय का सार यह है कि व्यभिचार अब अपराध की श्रेणी में नहीं है। व्यभिचार अर्थात परस्त्रीगमन, जिसे आपदुराचार यानी बुरा आचरण, दुष्ट आचरण, अनैतिक आचरण कुछ भी कह सकते हैं, लेकिन एक गैरकानूनी आचरण कतई नहीं !❑

- 9910282579

वैवाहिक विवरण

युवती वर्ग

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Aadhar	Kashyap		28.11.84	5'6"	B.Tech	Working	Dubai	Rajesh Tiwari	Lucknow	9415577890
2	Aayush			28.07.93	5'7"	MBBS	Indian Army Capt.	Jaipur	C Agnihotri	Jaipur	9829251065
3	Abhay	Katyayan		07.07.89	5'1"	B Tech	Working		Atul Mishra	Kanpur	9415734174
4	Abhijeet	Upmanyu		34 Yrs.	5'9"	M.B.A(IIM)	MNC	Mumbai	Y.K.Bajpai	Kanpur	9616423242
5	Abhijeet	Bhardwaj	Divorcee	14.08.79	5'10"	B.Com, MBA	Working	New Delhi	Vijay Trivedi	Lucknow	9026844909
6	Abhinav	Kashyap	Aadi	15.08.81	5'9"	B.Com,M.B.A.	Working	Lucknow	J N Mishra	Lucknow	9453005857
7	Abhinav	Katyayan	Madhya	13.03.88	6"	B.Tech	TCL	Pune	A.K.Dwivedi	Lucknow	9936452439
8	Abhishek	Kashyap	Aadi	07.04.89	5'5"	MA, Comp	State Govt	Tikamgarh	R R Pateriya	Tikamgarh	7987307518
9	Abhishek	Bhardwaj	Madhya	10.10.86	5'7	BCA MBA	Manager	Delhi	A. K Pandey	Lucknow	9450018055
10	Abhishek	Upmanyu	Madhya	18.11.90	5'8"	B Tech	MNC	Banglore	Girish Bajpai	Kanpur	9313340042
11	Abhishek	Upmanyu		16.02.93		B Tech MBA	Business		Mr Awasthi	Kolkata	9830082587
12	Abishek	Gautam		17.07.84	5'6"	B.Pharma MBA	Business	Sagar	R.K.Chaubay	Sagar	9302933999
13	Aditya			24.07.93	5'9"	LLB	Advocate	Delhi	A Tiwari	New Delhi	9711158848
14	Aishvarya	Kashyap	Antya	06.11.88	5'5"	MA,BED.	Working	Delhi	Rajesh Tripathi	Kanpur	9415569546
15	Ajay	Kashyap	Antya	12.06.88	5'9"	B Tech NIT	Tab Steel	Tata Nagar	M Mishra	Kanpur	9532377914
16	Ajay	Shandilya	Madhya	01.01.83	5'5"	Diploma	Self Employed	Aurangabad	V Mishra	Aurangabad	8482824522
17	Akanksh	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'5"	MBBS,MS(Ortho)	Doctor	Hyderabad	R. Dubey	Hyderabad	9676331222
18	Akash	Upmanyu	Aadi	11.07.90	5'11"	B.Tech	MNC		N Bajpai	Kanpur	7376299046
19	Akhil	Upmanyu	Madhya	28.06.93	5'8"	M.TECH(MNIT)	Cisco	Chennai	M.K Bajpai	Gwalior	9926518418
20	Akhilesh	Bharadwaj	Madhya	20.06.90	5'8"	B.COM	Service	Ludhiana	J SHUKLA	Kanpur	9779977894
21	Akhilesh	Bhardwaj	Manglik	17.12.87	6'	B.TECH	TCS	Kolkata	Pawan Shukla	Kolkata	9836067192
22	Akhilesh	Bhardwaj	Madhya	20.06.90	5'8"	B Com	Working	Ludhiana	J N Shukla		9779977894
23	Akshat	Kashyap	Madhya	21.06.84	5'10''	B Tech PGDM	SBI Bank		S Tiwari	Mirzapur	8948461866
24	Akshat	Upmanyu	Aadi	23.05.85	5'11''	M Com	Asst. Manager		G P Bajpai	Sadar	9422807561
25	Akshay	Katyayan	Aadi	18.11.88	5'8"	BBA, CCNA	MNC	Gurugram	U.N.Mishra	Lucknow	9897452185
26	Aman	Bharadwaj	Antya	08.10.91	6"	BE	Manager	Ambicapur	G Trivedi	Kanpur	8085783341
27	Amar	Upmanyu	Antya	25.12.85	5'5"	M.Tech.	MNC	Pune	R.C.Awasthi	Delhi	8527395603
28	Amit	Upmanyu	Antya	07.09.91	5'9"	BBA,LL.B	Manager	Noida	B.P Dwivedi	Kanpur	8604700313
29	Amit	Kashyap	Madhya	03.02.88	5'7"	B.E	Quality	Udaipur	G Tiwari	Udaipur	9414238854
30	Amit	Shandilya		15.08.84	5'8"	MCA,BED.	Teacher	Orai	A.K.Mishra	Orai	9889225623
31	Amit	Kashyap		29.03.84	5'	B.Tech	CCI	H P	Uma Dixit	Lucknow	9455508989
32	Amit	Kashyap	Aadi	17.10.90	5'9"	BBA MBA	Business		R Tiwari	Nagpur	7875911631
33	Amul	Shandilya		22.04.92	5'11"	B Tech M Tech	Civil Engg.		Mishra	Kanpur	9453041636
34	Anand	Garg		15.05.85	6'2"	B E	Service	Gujrat	Pratibha Shukla	Kanpur	9329955405
35	Anirudh	Kashyap	Antya	30.04.87	5'4"	M.SC	Working	Himanchal	B Tiwari	Himanchal	8800422667
36	Ankan	Shandilya	Antya	16.09.92	6'1"	B.Tech	Infosys	Mysore	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
37	Ankesh	Bhardwaj	Madhya	29.07.85	5'8"	B.Tech.,MBA	MNC	Banglore	A.K.Pandey	Bhopal	9425682050
38	Ankit	Shandilya	Antya	22.08.85	6'2"	B.Tech MBA	AVP	Kanpur	A Mishra	Kanpur	9936483912
39	Ankit	Bhardwaj		11.03.87	6'	B Tech	Service	Banglore	R Trivedi	Kanpur	9450125732
40	Ankit	Bhardwaj		14.05.85	5'7"	M Com, MBA	Working	Noida	K K Pandey	Kanpur	9336998383
41	Ankit	Kashyap		20.12.90	5'8"	M Pharma MBA	Working	Vadoda	C P Tiwari	Lucknow	9450840265
42	Ankit	Bhardwaj		24.04.91	5'9"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	S K Shukla	Kanpur	9839303507
43	Ankit	Shandilya		08.05.90	6"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	A K Mishra	Orai	9889225623
44	Ankur	Kashyap	Madhya	29.06.88	6'1"	B.Tech	Soft Engg	Pune	R S tiwari	Bilaspur	7000649784
45	Ankur	Bhardwaj		22.08.85	5'8"	MBBS	Doctor	Lucknow	Vinod Shukla	Lucknow	9005716002

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Ankush	Bhardwaj		16.11.92	5'11"	Graduate	Sofft. Engg.	USA	AK Pandey	Delhi	9899784632
47	Antariksh	Katyayan	Aadi	23.11.89	5.7'	B-Tech,	MNC	Gurugram	K.K. Mishra	Kanpur	9415431600
48	Anu	Kashyap		13.06.89	5'9"	MBBS	Metro Hospital	Delhi	S.G Dixit	Farukhabad	7974621202
49	Anugrah	Bhardwaj	Aadi	03.08.90	5'10"	B.Tec	Soft Engg	Lucknow	J K Dixit	Farukhabad	9415564604
50	Anuj	Upamanyu	Antya	8.15.74	5'5"	BA	Service	Mumbai	AK Dwivedi	Jalaun UP	9322141455
51	Anupam	Kashyap	Antya	15.07.88	5'5"	M.Com,MBA	Moody's	Gurgaon	N.S Tripathi	Lucknow	8299654731
52	Anuraag	Upmanyu		14.11.82	5'5"	B.Tech	Engg.	Maldives	S.N.Dwivedi	Unnao	9450056609
53	Anuraag	Bhardwaj		27.05.87	5'9"	B.Tech	SAIL	West Bangal	Anil Pandey	Sitapur	9839717959
54	Arihant	Bhardwaj		01.08.88	6'2"	MBA	MNC	Hyderabad	A Shukla	Hyderabad	9704916421
55	Arpit	Upmanyu	Madhya	15.11.87	6ft	B. Tech	Branch Manager	New Delhi	Rawasthi	Rewa	9399628312
56	Arpit	Upmanyu	Aadi	13.08.93	5'8"	B E	Working	Ratlam	M Awasthi	Indore	9806403394
57	Arvind	Upmanya	Antya	25.08.88	5'4"	BA	Self Employ	Lucknow	S.N Dwivedi	Haidergarh	9455871884
58	Ashish	Upmanyu	Aadi	01.06.86	5'8"	BE	TCS	USA	R.S Dubey	Muzaffarpur	9430933254
59	Ashish	Upmanyu		09.09.88	5'9"	B.A.	Business	Lucknow	R.N.Trivdi	Lucknow	9454242424
60	Ashish	Upmanyu	Aadi	07.11.81	5'7"	B Tech, MBA	MNC	Lucknow	A K Awasthi	Lucknow	9936400675
61	Ashish	Upmanyu	Antya	03.08.86	5'6"	B.Tech	MNC	Gurugram	R.P. Dwivedi	Jhansi	9452598145
62	Ashish	Katyayan		24.06.88	5'8"	BA. B Ed	Reliance	Kanpur	S K Mishra	Hardoi	9369265810
63	Ashish	Bhardwaj	Madhya	21.11.87	5'7"	B Tech	MNC	Pune	S K Shukla	Kanpur	9450336902
64	Ashish	Katyayan	Madhya	27.07.85	5'10"	MBA	IBM	Banglore	A Mishra	Kanpur	9450635424
65	Ashish	Bhardwaj	Antya	25.09.89	5'7"	BE,MTech	Service	Kuwait City	Y.S Shukla	Unnao	8369492792
66	Ashish	Bhardwaj		33 Yrs.	5'6"	High school	Business	Kanpur	S K Shukla	Kanpur	7752944773
67	Ashish	Kashyap		20.07.91	5'8"	Civil Engg.	Engineer		Tiwari	Ghaziabad	9910635619
68	Ashish	Bhardwaj	Antya	11.04.88	5'8"	BE Engg.	Service	Bhopal	A K Trivedi	Bhopal	9425600600
69	Ashish	Bharadwaj	Aadi	17.11.89	5'9"	B.Tech	Working	Singrauli	U Shukla	Gaya	8544310205
70	Ashish	Bharadwaj	Aadi	06.01.92	5'3"	BE	Service	Vapi	Rajesh Shukla	Mumbai	9265048500
71	Ashu	Sandilya		24.12.88	5'2"	MCA	Working	Patna	S K Dixit	Delhi	9811235591
72	Ashutosh	Upmanyu	Madhya	01.10.88	5'8"	BSC	Merchant Navy		G N Bajpai	Kanpur	9453815215
73	Ashutosh	Katyayan		04.03.92	5'10"	B.com M.com	Working	Dehradun	A K Mishra	Rishikesh	9837089868
74	Ashwani	Bhardwaj		31.07.83	5'6"	BA	Business	Kanpur	S Shukla	Kanpur	9657666327
75	ATUL	Katyayan	Madhya	11.02.90	5'8"	INTER	Railways	Indore	Mr. Mishra	Indore	9907313168
76	Bhasker	Katyayan	Aadi	11.01.87	5'10"	M.com LLB	Practice Court	Kanpur	G D Mishra	Kanpur	9452496423
77	Brahmendra	Kashyap	Madhya	19.02.80	5'7"	BCom	Photographer	Jabalpur	B. Tiwari	Jabalpur	9907286364
78	Chakrapadi	Katyayan		01.12.89	5'9"	B Tech(NITN)	PCS Officer	Utrakhand	R J Mishra	Lucknow	9415752075
79	Chandan	Upmanyu		25.12.86	5'9"	B.A	Business	Lucknow	J.P.Awasthi	Lucknow	9936530032
80	Chandra Prakash	Kashyap	Antya	31.01.84	5.6'	M.Com	Business	Kanpur	B.S. Tripathi	Kanpur	9044512978
81	Chandrasekhar	Bhardwaj	Madhya	09.01.87	5"6	MAC, BAD	Teacher	Jhabua	Azad Sharma	Jhabua	9714709819
82	Deepak	Bhardwaj		16.09.85	5'11"	IIT M.Tech	Bank Manager	Mumbai	Manju Trivedi	Kanpur	9415727581
83	Deepankar	Upmanyu	Antya	03.06.88	5'8"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	D Dwivedi	Kanpur	9415479269
84	Devas	Bhardwaj		08.02.87	5'9''	BE	Working	Delhi	D K Shukla	Kota	9414189670
85	Devesh	Bhardwaj		27.07.81	5'9"	B.Sc, MBA	Officer PSU	Gandhinagar	S.C. Shukla	Gandhinagar	9737877705
86	Divyanshu	Katyayan	Madhya	13.12.87	5'9"	MBA	Astt Mngr	Delhi	A.K. Mishra	Lucknow	9838792102
87	Dr Dharmes	Kashyap	Aadi	13.11.83	5'9	B.D.S	Practice	Dubai	Mrs P Tewari	Lucknow	9554477880
88	Gajendra	Kashyap		31.08.89	5'8"	B.com	Business	Jabalpur	K P Tiwari	Jabalpur	9907286364
89	Ganesh	Upmanyu		33 YRS.	5'8"	IIT,ISB	Service	Gurugram	O.P.Awasthi	Kanpur	9935317848
90	Gaurav	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'8"	BE	Soft.	Banglore	D Shukla	Raipur	9425205383
91	Gaurav	Upmanyu	Madhya	27.04.88	5'10"	B.TECH, MBA	Regional Mngr	Lucknow	S.C Bajpai	Lucknow	9452735770
92	Gaurav	Shandilya		24.02.87	5'6"	MA	PNB	Kanpur	R.S Mishra	Kanpur	9918475086
93	Gaurav	Katyayan		24.10.90	5'7"	BE	Project Engg	Pune	S.K Mishra	Lucknow	8840284768
94	Gaurav	Bhardwaj	Madhya	23.10.88	6"	B TECH	DELL	Noida	D.K Pandey	Kanpur	7599101722
95	Gaurav	Shandilya	Aadi	02.12.87	5'11"	B Tech(NIT), PGDM	ICICI Bank	NCR	O.S.Mishra	Kanpur	9935616625

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Gaurav	Shandilya	Aadi	16.01.84	6"	B.Tech	TATA Power	Orissa	S.Mishra	Lucknow	9415794058
97	Gaurav	Kashyap	Antya	12.06.85	5'5"	B.TECH, MBA	Business	Orai	S.R Dwivedi	Jalaun	8382947554
98	Gaurav	Sandilya	Aadi	02.11.91	5'6"	B.Tech	Soft.Engineer	Delhi	S.D Mishra	Hardoi	9811733294
99	Hariom	Bhardwaj	Madhya	07.03.88	188cm	B Tech NIT	MNC	Delhi	R Shukla	Bhopal	9849158318
100	Haritabh	Sankrit		30.09.86	5'7"	M B A	Self Employed	Kanpur	Ajay Shukla	Kanpur	9415050280
101	Harsh	Bhardwaj		29.01.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Jayant Shukla	Kanpur	9919333014
102	Harsh Vardhan	Upmanyu		16.01.88	5'8"	B.Tech.,MS	Working	USA	P.K.Dwivedi	Delhi	9871898222
103	Harshal	Kashyap	Aadi	19.12.88	5'9"	BA MSHW	Business	Maharastra	R.S Tiwari	Risod	9921260143
104	Hemant	Bhardwaj	Aadi	30 yrs	5'5"	LLB	Advocate	Lucknow	S N Pandey	Lucknow	9044421708
105	Himanshu	Katyayan	Antya	08.11.86	5'8"	B.Tech, MBA	Mercedez	Bengaluru	P.K. Mishra	Varanasi	9451938889
106	Himanshu	Shandilya		22.09.88	5'7"	B.Tech	TCS	Pune	A.N. Dixit	Gorakhpur	8588071087
107	Himanshu	Bhardwaj	Aadi	06.02.88	5'5"	BBA,MBA	Axis Bank	Mumbai	S.C.Shukla	Lucknow	9839014905
108	Himanshu	Katyayan		05.06.90	5'7"	B.Tech	Civil Engg.	Sultanpur	R.N Mishra	Kanpur	9415727238
109	Himanshu	Katyayan		05.06.90	5'7"	B Sc B Tech	Civil Engg.	Ranchi	R N Mishra	Kanpur	9415727238
110	Ishan	Upmanyu	Antya	16.6.89	5'7"	B.Sc	Indian Army Capt.	J&K	Mahesh Dixit	Bhopal	7587598015
111	Jayant	Upmanyu		10.09.87	5'7"	B.Tech.,MBA	MNC	Gurugram	P.K.Agnihotri	Kanpur	9936150917
112	Jaypraksh	Shandilya	Madhya	22.08.84	5'7"	com. hard .eng.	Engineer	aurangabad	Vijay Mishra	Aurangabad	8482824522
113	Kanhaiya	Upmanyu	Aadi	19.11.90	5'6"	B. Com,	Working	Andheri	K Dubey	Jhansi	8007256328
114	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6"	BE M tech	Working	Gurgaon	G Awasthi	Ghaziabad	9924292224
115	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6"	M Tech	Engineer	Gurgaon	K Awasthi	Gujrat	9824233659
116	Kartikeya	Katyayan	Madhya	25.11.88	6'	B.Com LL.B	Practicing	Noida	Suman Mishra	Delhi	9818678011
117	Kshitij	Upmanyu	Madhya	05.06.88	5'10"	B.Tech	MNC	Noida	V.K.Agnihotri	Gahziabad	8130743430
118	Kshitij	Kashyap		24.03.91	5'10"	BE (BITS)	Working	Mumbai	P Tripathi	Unnao	9804242502
119	Kunaal	Shandilya	Antya	03.06.85	5'8"	B.Tech.,	S.W Engg	Mumbai	R.K.Mishra	Lucknow	9918383464
120	Kunal	Bhardwaj	Aadi	22.01.84	6'1"	MBA	Working	Lucknow	Kunal Shukla	Lakhimpur	8808089152
121	Kush	Sankrit	Antya	02.09.88	5'9"	B.Tech	Bharti Airtel	Mumbai	S.P. Shukla	Kanpur	9889553612
122	Mahesh	Sankrit	Antya	14.12.89	5'9"	MBA	Bank	Jagdalpur	R K Pandey	Reewa	9109711683
123	Maj. Ram	Upmanyu		27.03.89	5'8"	B.Tech	Indian Army		R.K. Dubey	Jabalpur	9424357435
124	Malay	Kashyap	Aadi	19.09.90	5'8"	B.TECH	Bajaj	Lakhimpur	P.N Tiwari	Kanpur	9452364432
125	Manish	Kashyap	Madhya	27.09.78	5'6"	M.Com, MBA, LLB	Advocate	Bhopal	G.M.Tripathi	Kanpur	9753416001
126	Manish	Upmanyu		10.08.82	5'10"	M Tech	L&T	Vadodara	Y N Bajpai	Kanpur	9336123644
127	Manu	Katyayan	Aadi	06.07.84	5'8"	MCA MS	Working	Cikago	A.K.Mishra	Bareili	9410431399
128	Manu	Upmanyu	Antya	24.06.87	6'	B.Tech.,	P.O.Bank		R K Awasthi	Lucknow	9936213811
129	Mayank	Bhardwaj	Aadi	22.12.83	5'10"	B.Tech.,	R Jio	Kanpur	P.Shukla	Kanpur	9807147903
130	Mayank	Bhardwaj	Madhya	28.12.88	6"	B.Tech	Working	Bengaluru	P.R. Shukla	Jhansi	7869822090
131	Mayank	Katyayan	Aadi	17.10.85	5'8"	B.Des(NIFT)	Lifestyle	Bengaluru	S.K. Mishra	Kanpur	9415438164
132	Mayank	Upmanyu	Antya	30.06.87	5'6"	BBA MBA	Working	Gurgaon	A K Awasthi	Kanpur	9532098695
133	Mayank	Upmanyu		11.06.89	5'10"	BE M tech	Working	Hyderabad	M K Dubey	Indore	9993912186
134	Mayank	Bhardwaj		19.08.87	6'1"	Enginering	Merchant Navy		Y Shukla	Kanpur	9935968533
135	Mohit	Bhardwaj		09.10.89	5'6"	B.COM, BED	Business	Kanpur	O.P Shukla	Kanpur	9839104819
136	Mohit	Bhardwaj	Aadi	19.08.92	5'9"	B Tech	L & T	Varodra	A Shukla	Agra	9528324823
137	Mridul	Kashyap		15.08.88	5'6"	B.Tech	Ericsson	Delhi	A.K.Tripathi	Jhansi	9453622253
138	Mukul	Upmanyu	Madhya	08.06.88	5'8"	BSc, MCA	Govt. Job	Lucknow	U.C. Bajpai	Lucknow	9889719019
139	Mukul	Bhardwaj	Antya	02.10.92	5'7"	M.TECH	Assistant professor	Raipur	Ravikant Trivedi	Raipur	9425201545
140	Narendra	Katyayan		06.11.78	5'6"	B.A.	OWN Biz.	Kanpur	P.K.Mishra	Kanpur	7355717632
141	Narendra	Shandilya	Madhya	07.12.86	5'11"	B.A., PGDCA	Self Employed	Indore	S.D Dixit	Indore	9424012517
142	Nikhar	Kashyap		22.05.91	5'11"	B SC MBA	Senior Analyst	Gurugram	N Tripathi	Kanpur	8299726705
143	Nikit	Kashyap		10.10.86	5'7"	BDS MDS	Pursuing MDS	Jabalpur	R.K.Dixit	Jabalpur	9424471221
144	Nishit	Katyayan	Antya	03.09.88	5'8"	B.Tech.,	TCS	Lucknow	Vinodmishra	Lucknow	9415904841
145	Nitin	Shandilya		23.04.87	5'9"	B.Com, MBA	Service	Amrawati	P Mishra	Amrawati	8600998355

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Nitin	Shandilya	Madhya	23.01.87	6'2"	MCA	Lecturer	Bhopal	Indresh Dixit	Bhopal	7000201357
147	Nitish	Bhardwaj	Madhya	08.03.90	6'2"	B com MBA	Manager	Pune	VK Shukla	Pune	8806992260
148	Oaj	Upmanyu	Madhya	20.04.90	6'3"	B.Com, MBA	Reliance	Mumbai	Mr Dubey	Indore	9424010082
149	Pawan	Upmanyu		24.04.84	5'7"	B.A.	Service	Jaunpur	O.P. Dewedi	Kannoj	9651587429
150	Pourush	Upmanyu	Aadi	19.09.88	5'11"	BE, M.Tech	SBI	Durg	Arvind Awasthi	Bhilai	7409175092
151	Prakhar	Shandilya		26.03.91	5'9"	BBA	Self Employed	Kanpur	Meena Dixit	Kanpur	9044098331
152	Pranjal	Kashyap	Antya	25.04.88	5'7"	B.Tech	HP	Bengaluru	Prakash Tiwari	Unnao	9450020858
153	Prashant	Upmanyu	Antya	05.01.88	5'9"	M.Sc.(BITS Pilani	Oracle	Banglore	S.K.Awasthi	Kanpur	8720053266
154	Prashant	Upmanyu		27.09.89	5'9"	B Com, MBA	Service	Delhi	A Awasthi	Lucknow	9450652296
155	Prashant	Upmanyu	Madhyaa	01.07.90	5'11"	M Com M sc	Company	Haryana	H S Bajpai	Haryana	8882362115
156	Prateek	Katyayan	Aadi	26.10.89	5'11"	B.TECH, MBA	MNC		Beena Mishra	Kanpur	9347529454
157	Pritesh	Sankrit	Aadi	24.12.90	5'6"	B Tech	Company	Delhi	A Shukla	Kanpur	9454087264
158	Pushpendr	Kashyap		02.07.91	5'11"	B Tech	Govt.itnruction	Kanpur	Rajesh Tripathi	Kanpur	7510086965
159	Raghav	Shandilya	Aadi	08.08.90	5'7"	M Tech	Analytics	Mumbai	S.K.MISHRA	Kanpur	9415590749
160	Rahul	Kashyap	Madhya	16.11.83	5'11"	B. Tech, MBA	E Value Serve	Gurugram	Anand Tripathi	Etawah	9411993442
161	Rahul	Kaushik	Antya	06.01.86	5'11"	B.COM, MBA	Self Employed	Sagar	S.G Dubey	Sagar	8889022999
162	Rahul	Katyayan	Aadi	16.07.85	5'4"		KESCO	Kanpur	B P Mishra	Kanpur	9473693278
163	Rahul	Katyayani	Antya	04.09.89	5"11	MBA	Pvt Job	Barelliy	B.K. mishra	bareilly	8126565600
164	Raj Kishore	Katyayan	Aadi	04.05.70	5'9	M,Com LL.B	Advocate	Hyderabad	G Mishra	Hyderabad	9848560876
165	Rajan	Bhardwaj	Antya	12.01.90	5'9"	BE	Soft. Engg.	Pune	C Chaturvedi	BHOPAL	9406903868
166	Rajiv	Katyayan		19.06.90	5'10"	B Tech	MNC	Gurugram	N K Mishra	Kanpur	7275990253
167	Ram	Sankrit		08.03.77	5'10"	B.Com	INVEST. ADVO.	Kanpur	G.S.Shukla	Kanpur	9889526808
168	Ranaveer	Severn		28.08.85	5'10"	B.Tech.,	Oracle	Banglore	J.N.Tiwari	Kanpur	9415133084
169	Raval Sagar	Bharadwaj	Aadi	10.11.89	5'3"	10th, ITI	Business	Dist. Su.Nagar	Prabhasankar	Gujarat	8200989584
170	Ravi	Bhardwaj		27.11.86	5'6"	B.Tech.,	HCL	Noida	A.K.Pandey	Lucknow	9451002606
171	Ravi	Shandilya	-	13.09.87	6'2"	B.Sc	Manager Bank	Karnal	M.M. Mishra	Kanpur	9695666443
172	Ravi	Kashyap		17.09.91	5'4"	B.Sc	Bank P.O	Raigarh	Santosh Tiwari	Kanpur	9005300831
173	Rishee	Bhardwaj		07.11.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Y.K.Pandey	Jaipur	9929115628
174	Rishi	Kaundanya	Madhya	23.02.88	6'3"	B.E, M.Tech	Govt. Service	Jabalpur	Vinita Bajpai	Jabalpur	9755669043
175	Ritam	Bhardwaj	Madhya	07.06.92	5'8"	B Tech	Amazon.com	Seattle	Pranav Shukla	Kanpur	9839212801
176	Robin	Katyayan	Madhya	24.08.86	5'9"	B.Tech	Asst. Manager	Mumbai	S.C.Agnihotri	Lucknow	9451063051
177	Rohan			18.04.86	5'10"	LLM MBA	Manager	Mumbai	V Sharma	Amrawati	9370930777
178	Rohit	Upmanyu	Madhya	08.09.86	5'7"	B. Com	Service	Nasik	R.M Bajpai	Nasik	9623962111
179	Rohit	Bhardwaj		16.06.92	5'6"	B COM	Business	Kanpur	O P Shukla	Kanpur	7860419999
180	Rohit	Upmanyu	Antya	01.05.87	5'8"	BE, MS	Working	California	D.M Dubey	Solapur	9370422380
181	Rohitash			09.05.85	5'8"	B.Sc,MBA	Working	Ghaziabad	S N Mishra	Barabanki	9451529439
182	Salil	Bhardwaj	Aadi	15.11.88	5'5"	B.TECH	Oracle	Chennai	A.K Dixit	Agra	9758935949
183	Sandeep	Bhardwaj	Madhya	26.11.85	5'10"	B.E., M.Tech.(IT)	Assistant Professor	Nasik	P.G Shukla	Pansemal	9407492929
184	Sanjay	Kashyap		08.06.71	5'4"	BA	Working	Raiberely	H.S.Tiwari	Raibarelly	5352211555
185	Saurabh	Upmanyu	Aadi	16.09.89	6'	B Sc	Central Govt	New Delhi	A Dwivedi	Jhansi	9236923675
186	Saurabh	Katyayan	Antya	24.04.88	5'6"	MBA	Working	Lucknow	Arvind Mishra	Lucknow	9120110396
187	Saurabh	Bhardwaj	Madhya	07.12.82	6'	M.Com .	Govt Service	Kota	R.K.Shukla	Kota	9414938823
188	Saurabh	Bhardwaj	Aadi	01.06.84	5'6"	Diploma	VOLTAS	Kanpur	A.P.Shukla	Kanpur	9335121850
189	Saurabh	Bhardwaj	Antya	19.12.91	5'9"	B Com PGDCA	Civil		D Shukla	Raipur	9425205383
190	SAURABH	Gargeya	Antya	16.06.91	5'10"	B.Tech, MBA	Colgate Palmolive	Chennai	L.K Pandey	Allahbad	9424120637
191	Saurabh	Upmanyu	Aadi	27.08.88	5'7"	B.Tech, MBA	Asst. Manager	Lucknow	T.N Dwivedi	Lucknow	9936101701
192	Shailendra	Shandilya	Madhya	23.07.83	6'	MBBS	Pursuing MD		R.C.Dixit	Unnao	9793261855
193	Sharad	Upmanyu	Manglik	19.08.86	5'3"	MBA	MNC	Lucknow	S.K Awasthi	Lucknow	9696944128
194	Sharad			26.10.85		BCA	Sales Officer	Mumbai	S P Tiwari	Kanpur	9628835452
195	Shashank	Kashyap		28.12.86	5'6"	B.Sc ,MBA	Working	USA	Umesh Tiwary	Delhi	9818707398

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Shashwat	Bhardwaj		25.09.87		B.Tech,MBA		Dubai	R Pandey	Kanpur	9415733447
197	Shashwat	Shandilya	Antya	19.10.88	5'10"	B Sc	Central Excise	Karvi	A C Dixit	Lucknow	8052691999
198	Shashwat	Bhardwaj		Sep-87	5'6"	B Tech MBA	MNC Wkg	Dubai	A K Pandey		9415733447
199	Sheel	Kashyap	Antya	28.12.78	5'8"	M.Sc, MBA	Lecturer	Lucknow	G.H.Awasthi	Lucknow	9415794589
200	Shikhar	Kashyap	Madhya	11.08.89		MBA	Own Biz.	Raipur	S Tiwari	Pune	7250011947
201	Shishir	Bhardwaj	Antya	28 YRS.	5'8"	B Tech	MNC	Bengaluru	A K Trivedi	Shuklaganj	9451548120
202	Shivam	Kashyap		01.02.88	5'9"	MCA	Working	Kanpur	R.K Tripathi	Kanpur	8381824446
203	Shivam	Kashyap	Aadi	10.01.90	5'6"	MCA	TCS	Indore	VK Tripathi	Lucknow	9260969436
204	Shivam	Kashyap		28.08.90	5'6"	B Tech	Asst. Manager	Panipat	P K Tripathi	Faridabad	8447438966
205	Shobhit	Sankrit		04.03.93	5'8"	B Tech	Automobile Engg	Banglore	V.P Mishra	Lucknow	9454835232
206	Shobhit	Kashyap		09.07.93	5'8"	B Tech	Job	Gurgaon	H Tripathi	Kanpur	9653076145
207	Shreesh	Bhardwaj	Aadi	20.05.86	5'8"	B.Tech	Service	Jaipur	D.C.Pandey	Lucknow	9454455723
208	Shrey	Sankrit	Madhya	23.12.82	5'9"	B Tech	TCS	Lucknow	S N Shukla	Lucknow	7846786559
209	Shreyansh	Kashyap		02.12.92	6'2"	BE	Business		S Tiwari	Kalapatha	9425193234
210	Shreyas	Kasyap	Aadi	31.10.88	5'7"	B Tech NIT	Business		A Trivedi	Maharastra	9820211630
211	Shubham	Vats	Madhya	13.02.88	5'10"	B.Tech	MNC	Ahmedabad	Anil Tiwari	Etawah	9415409967
212	Shubhendru	Upmanyu		09.11.86	6'	MS, PHD(USA)	Research Astt	Chicago	M.L.Trivedi	Pune	9096257755
213	Shubrat	Kashyap	Aadi	17.06.83	5'8"	M.Com,MBA	Genpact	Gurugram	Ravi Tripathi	Kanpur	7275508227
214	Sidharth	Bhardwaj	Madhya	17.07.88	5'7"	B Tech	Working	Pune	R K Pandey	Kanpur	9415210728
215	Sidharth	Upmanyu	Aadi	29.07.91	6'2"	H Management	Working	USA	R Trivedi	Ahmedabad	9898474922
216	Sonu	Bhardwaj	Aditya	11.11.85	5'7"	M Tech	Working	Noida	S K Pandey	Gwalior	9407015945
217	Sonu	Bhardwaj	Aadi	24.11.85	5'9"	M Tech	MNC	noida	S K Pandey	Gwalior	9407465886
218	Suchitan	Upmanyu	Madhya	29.11.86	5'11"	MBA	Lecturer	Kanpur	S.N.Trivedi	Kanpur	9839300303
219	Sunil	Bhardwaj	Aadi	09.09.84	5'7"	MCA	Selt Occupied	Banglore	A Dubey	Kanpur	9739060321
220	Sunny	Shandilya	Antya	19.09.87	5'11"	B Tech NIT	Tata Motors	Mumbai	G Dixit	Gwalior	9425338155
221	Suraj	Kashyap	Antya	06.03.89	5,7	MBA	Service	Durg	B Tiwari	Durg {C.G.}	9827190303
222	Sushant			26.11.85	6'1"	B.Sc.MBA	Working	Delhi	H.D.Chaubey	Rajgarh	9939484830
223	Suyash	Upmanyu	Antya	20.01.88	5'11"	B.Com.	Mktg. Executive	Rajnandgaon	Sunil Bajpai	Kanpur	9301737555
224	Udayan	Shandilya		22.11.86	5'5"	M.Sc MBA	Govt. Ltd	Gwalior	Y D Mishra	Gwalior	9826297917
225	Utkarsh	Shandilya		22.02.88	5'11"	M.Tech.(BITS)	MNC	Banglore	P.K.Mishra	Kanpur	7275743955
226	Utkarsh	Katyayan	Antya	05.06.86	5'9"	MBA	Medical Biz	Lakhimpur	D.C.Misra	Lakhimpur	9451687980
227	Vaibhav	Garg	Madhya	16.06.91	6'1"	B.TECH	Bank(PO)	Merath	H.K Chaturvedi	Kanpur	9792877087
228	Vaibhav	Bhardwaj		22.08.87	5'6"	B.Tech.,	Ericsson	Gurugram	K.K.Shukla	Kanpur	9958281964
229	Vaibhav	Shandilya	Antya	04.06.90	5'6"	B.Com, MBA	AXIS Bank	New Delhi	V K Mishra	Pilibhit	9410626492
230	Vaibhav	Upmanyu	Antya	30.07.90	5'9"	B.Tech	Power Plant	M.P	S.K. Bajpai	Merath	9358350093
231	Vaibhav	Kashyap		27.01.88	6"	CS LLB	Working	Delhi	M Tiwari	Ghaziabad	8932072346
232	Vaibhav	Shandilya		29.05.94	6"	B Com	Business	Lucknow	S K Mishra	Lucknow	7007709259
233	Ved Vikas	Shandilya	Antya	05.03.91	5'8"	M.SC. B.ED	Teacher	Ahmedabad	A.K Dixit	Unnao	9913200388
234	Vibhor	Bhardwaj		27.11.92		B Tech	Asst. Engg.		Shukla	Lucknow	9794883336
235	Vijay	Kashyap	Madhyaa	01.01.91	5'4"	BSc (Maths), ITI	Self Employed	Bhopal	Ajju Tiwari		7000069991
236	Vikaas	Bhardwaj	Antya	26.10.82	5'4"	MCA	S.W Engg	Noida	K.K.Bhardwaj	Kanpur	9793821021
237	Vikash	Kashyap	Antya	11.08.80	5'8"	MBA	Working	Ahmedabad	ROHINI	BHOPAL	9911005470
238	Vikash	Upmanyu		10.10.82	5'10"	M COM	Private	Kanpur	V K Awasthi	Kanpur	6393239247
239	Vimal	Kashyap	Aadi	10.01.88	5'7"	B.Tech.	Service	Pune	K Tiwari	Kanpur	9561478019
240	Vinay	Upmanyu		02.12.76	5'8"	MA. LLB	Govt Service	Burhanpur	Mrs Awasthi	Burhanpur	9165311846
241	Vinay	Upmanyu		08.11.89	5'8"	B Tech	Infosys	Hyderabad	K L Awasthi	Lucknow	9450458064
242	Vinod	-	-	15.02.82	5'9"	-	Business	Kanpur	S N Diwedi	Kanpur	7398163285
243	Vishaal	Garg		27.12.87	5'10"	BCA MBA	MNC	Delhi	R.K.Shukla	Lucknow	9936977763
244	Vishal	Upmanyu		29.02.92	5'11'	B.SC	Indian Airforce	Hyderabad	G Bajpai	Kanpur	9889315397
245	Vishal	Sandley	Antya	10.11.92	5,9"	M A	R Jio	Lucknow	S Mishra	Lucknow	9935832287

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Vishesh	Kaushik		30.04.92	6'2"	M.Com	Sr. Consultant	Melbourne	Vipin Dubey	Bhopal	8109838010
247	Vivek	Bhardwaj	Aadi	07.11.84	5'10"	B.Tech.,	S.W Engg	Delhi	R.C.Pandey	Kanpur	9450327506
248	Vivek	Kashyap		22.03.76	5'8"	B.Com	Service	Lucknow	S.K.Sharma	Lucknow	9450112576
249	Vivek	Kashyap		10.07.73	5'6"	Double MA	Service	Kanpur	H.S.Tiwari	Kanpur	9455753557
250	Vivek	Upmanyu		04.12.90	5'11"	MCA	Sofft. Engg.	Gurgaon	R S Tiwari	Kanpur	9839475032
251	Yash	Bhardwaj		23.03.85	5'8"	B.Tech	Working	Delhi	P.Trivedi	Delhi	9868941052
252	Yash	Shandilya	Madhyaa	12.01.89	5'8	Graduate	Sales	Delhi	A Mishra	Delhi	9718166678
253	Yogendra	Bhardwaj	Antya	31.10.78	5'4"	B.A, L.L.B.	Lecturer	Kanpur	Y.K.Pandey	Kanpur	9455373843
254	Yogesh	Bhardwaj		30.03.91	5'7"	B.Tech.,	Astt Mngr	Chennai	S.C.Pandey	Kolkata	9903633761
255	Yogesh	Kashyap	Aadi	26.12.89	5'3"	M.Com, MA, LLB	Advocate	Philibhit	Mrs Pathak	Bithra	9759718916

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

कान्यकुब्ज मंच के आगामी अंक में विवाह योग्य युवक-युवतियों का वैवाहिक विवरण प्रकाशित करने हेतु इंटरनेट ब्राउजर में http//goo.gl/farms/fcoZfkPcU9 टाइप कर रजिस्टर करें।

अलाव का समाजशास्त्र

तब आग रिश्ते जोड़ती थी। शीत ऋतु की आग में जीवन होता,भाईचारा होता, स्त्रीविमर्श होता। शीत की गहराई मशीन नहीं, प्रकृति बताती। सेंटीग्रेड नहीं था, पर ठिठुरते पशुपक्षी ताप बता देते। बूढे बरगद.को सब याद रहता। किसी का जन्म - किसी की मृत्यु तय करती किस वर्ष शीत लहरी कितने दिन चली।

शीत लहर आती, लेकिन जिंदगी चलती रहती उसी शान से।यह शान थी आग। कौआ बुलाने ही अलाव जल जाते।धुएँ की चादर गाँव पर तन जाती। हरे बबूल पहले सुलगते फिर धधक उठते। ये केवल अलाव नहीं थे गाँव के सभागार थे, प्रेम और भाईचारा थे। वहाँ जाति-धर्म नहीं था। कोई बड़ा छोटा नहीं। आग सबको समवा लेती। धूप निकलने तक जवार नहीं, देश की खबरें मिल जाती।

आग ही नहीं पूरी प्रकृति शीत से लड़ने के लिए मनुष्य के साथ खड़ी हो जाती। कुएँ का जल शीतलता का स्वभाव त्याग उष्ण हो जाता।नीम और बरगद छाया नहीं उष्णता देने लगते।

अलाव केवल अलाव नहीं दरवाजे की शोभा थे, ड्राइंग रूम थे। जिसके अलाव पर जितनी भीड़ होती वह उतना ही प्रतिष्ठित।गांव मे कुछ अलाव मशहूर थे। ये अलाव गाँव की जिंदगी थे। हर टोले में एक बड़ा अलाव होता। छोटे तो घर-घर होते। महिलाओं का विमर्श अलग था ।उपले पर आग लाने के बहाने बूढ़ी औरतें घरों का हाल ले जातीं। चूल्हे की आग भोजन बनाने मे रुचि पैदा करती। अकेले हीटर जलाये अखबार से शीत को नापते लोग अलाव का रस नहीं समझ सकते।आग गाँव का राग-द्वेष, प्रेम-घृणा, दुख-सुख, मित्रता-शत्रुता सबका निर्णय करती। कौन किस अलाव पर बैठता है यह आग तय करती।

तब शीत आज की तरह मृत्यु की सूचक नहीं, जीवन की सूचक थी। भोर होते ही कुट्टी की खुटखुट और जँतसार के गीत गाँव में गूँजते। पशु भीतर से बाहर आ जाते। मनुष्य अपने से अधिक पशुओं की चिंता करते। आदमी शीत मे प्रकृति के निकट हो जाता। कितनी दयालु है प्रकृति जीवन की रक्षा के लिए स्वभाव बदलना छोटी बात नहीं। और एक हम हैं जिसकी जेब में आग कैद है, हाथ में आग का बटन है। पर आपकी आग जला सकती है, दूसरे की शीत नहीं दूर कर सकती। मनुष्य आज आग लगा रहा है जीवन में, समाज में, भाईचारे में। हमारे पास मशीनें हैं या हमीं मशीन हैं। जेब मे आग है तो जलायेगी ही। अब तो सुनता हूँ गाँव मे भी अलाव नहीं जलते। मशीनों ने वहाँ भी आग को कैद कर लिया है। शीत तब प्रेम की ऋतु थी। यह प्रेम आग बाँटती थी। मेरे गाँव के बबूल अब शीत मे आत्माहुति न देकर काँटे बाँटते होंगे, बूढ़ा बरगद शीत में काँपता होगा और कुएँ ?

कभी देवत्व प्रकृति को प्राप्त था क्योंकि वह स्वतः द्युतिमान थी। मनुष्य का उनके सृजन मे कोई योगदान नहीं था। वायु, अग्नि, जल, प्रकाश, भूमि, मेघ, सूर्य स्वतः उपलब्ध थे। मनुष्य ने कृतज्ञ हो पहले उपासना की, देवता माना और फिर उनपर अधिकार की स्पर्धा हुई, असीम दोहन हुआ। ये शोषक और दोहक प्रकृति को पराजित और स्वयं को देवता कहने लगे। उन विजेताओं में पुनः संघर्ष हुआ। कुछ प्रकृति का उपभोग करते तो उसका संरक्षण भी। दूसरे समूह ने केवल दोहन किया। सोने के महल बने जल वायु प्रकाश सब उनके अधीन ।मानवता कराह उठी । वे असुर कहे गये । अपार शक्ति ने ही उन्हें असुर बनाया । मनुष्य से देवता और देवता से असुर की यात्रा मानव की पराधीन चेतना का परिणाम है क्योंकि उसकी उत्पादकता प्रकृति की भाँति निःस्वार्थ नहीं उपभोग पर आश्रित है । कोशिश करनी चाहिए मनुष्य मनुष्य ही बना रहे ।ईश्वर बनने की कोशिश असुर पैदा करती है ।

- डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, प्रधान संपादक-'नव-निकष'

श्रद्धांजलि

अरविन्द वाजपेयी, कोलकाता

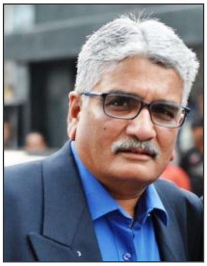

कोलकाता के स्टॉक ब्रोकर व्यवसायी श्री अरविन्द वाजपेयी का 2 नवंबर 2019 को 62 वर्ष की उम्र में ब्रेन हेमरेज होने से स्वर्गवास हो गया। पत्रकार शिरोमणि पंडित अंबिका प्रसाद वाजपेयी के परिवार से ताल्लुक रखने वाले स्मृतिशेष प्रेम नारायण वाजपेयी के सबसे छोटे पुत्र अरविन्द वाजपेयी (सुपौत्र स्मृतिशेष प्रताप नारायण वाजपेयी) कोलकाता में एबी एंड कंपनी के नाम से स्टॉक ब्रोकर की फर्म के अधिष्ठाता थे। 'भारत मित्र' समाचार पत्र के संपादक पंडित राजेंद्र नारायण वाजपेयी के सबसे छोटे भाई अरविन्द जी की शिक्षा दीक्षा कोलकाता शहर में ही हुई। शुरू से ही मेधावी छात्र रहे अरविन्द वाजपेयी स्वभाव से अत्यंत मिलनसार, नम्र व्यक्तित्व के साथ अनन्य आत्मीयता और परिवारबोध से भरे थे। देहरादून के स्व. राजकुमार शुक्ल की आत्मजा पारुल से विवाहित इस दम्पति के दो पुत्र 1. अनुराग पुणे से लॉ की डिग्री प्राप्त कर इलाहाबाद हाई कोर्ट में प्रैक्टिस कर रहे हैं, दूसरे पुत्र अनिरुद्ध मुंबई में बैंकिंग जॉब से संबंद्ध है। श्री अरविन्द का असामयिक निधन न सिर्फ उनके परिवार को बल्कि उनके मित्रगणों, सगे-सम्बन्धियों को भी शोकाकुल कर गया। ॐ शांतिः।

डॉ. रामनाथ मिश्र, शाहाबाद (हरदोई)

शाहाबाद हरदोई के वरिष्ठ समाजसेवी एवं लोकप्रतिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर राम नाथ मिश्र का 22 दिसंबर 2019 को 88 वर्ष की अवस्था में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वर्ष 1956 में केजीएमसी लखनऊ से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त कर डॉ. रामनाथ मिश्र ने अपने शहर शाहाबाद हरदोई में एक फिजीशियन के रूप में प्रैक्टिस शुरू की। अर्थ से ज्यादा मरीजों की स्वास्थ्य रक्षा को सर्वोपरि मानने वाले डॉ. रामनाथ समाज सेवा के कार्यों में भी बढ़-चढ़कर तन मन धन से सहयोग करते रहे। डॉ. साहब के पिता डॉ. प्यारेलाल मिश्र शाहाबाद से जनसंघ के विधायक रहे। डॉ राम नाथ मिश्र के निधन का समाचार पाकर पूरा शहर स्तब्ध रह गया। उन की शव यात्रा में चिकित्सा, प्रशासन, समाज आदि के प्रबुद्ध जनों के साथ विधायक रजनी तिवारी, नगर अध्यक्ष अमर रस्तोगी, भाजपा जिला अध्यक्ष सौरभ मिश्र, डॉ मुरारी लाल गुप्ता, सभासद अखिलेश त्रिपाठी, रामेश्वर दयाल गुप्ता, सभासद विनोद राठौर शिखर त्रिपाठी, पूर्व नगर प्रमुख राम नाथ त्रिपाठी, रामसनेही मिश्र नवनीत गुप्त आदि सैकड़ों की संख्या में लोगों ने नर्मदा तीर्थ स्थल पर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि दी। डॉक्टर रामनाथ मिश्रा अपने पीछे दो पुत्रों डॉ देश दीपक मिश्र व संजय मिश्र तथा पुत्री अर्चना द्विवेदी सहित भरे पूरे परिवार को छोड़कर इस असार संसार को अलविदा कह गए। उनकी स्मृति को विनम्र श्रद्धांजलि।

पूर्व आईएफएस योगेश मोहन तिवारी

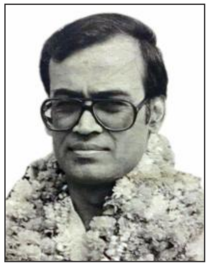

वर्ष 1966 बैच के भारतीय विदेश सेवा अधिकारी श्री योगेश मोहन तिवारी जी ने 75 वर्ष की अवस्था में हृदय गति रुक जाने की वजह से 15 दिसंबर 2019 को आईएफएस विलोज, ग्रेटर नोएडा में अपने जीवन की अंतिम सांस ली। ऑस्ट्रिया व संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदूत तथा सिंगापुर व साइप्रस के हाई कमिश्नर रहे श्री योगेश मोहन जी विदेश मामलों के अच्छे जानकारों में जाने जाते थे। रॉबर्टसन कॉलेज, जबलपुर से विज्ञान स्नातक योगेश मोहन जी ने दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से गणित विषय में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। भारतीय विदेश सेवा में उच्च स्थान प्राप्त कर उन्होंने मास्को के विदेश मंत्रालय से अपनी सेवाएं शुरू की। स्वीडन में काउंसलर, नैरोबी में डिप्टी हाई कमिश्नर,सऊदी अरबिया में विदेश प्रमुख एवं दिल्ली के मुख्य पासपोर्ट अधिकारी रह चुके प्रखर प्रतिभा, आकर्षक व्यक्तित्व एवं राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति निष्ठावान योगेश जी अहंकार रहित और स्वाभिमानी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित थे। वर्ष 2003 में केन्या के हाई कमिश्नर पदसे सेवानिवृत्त होने के बाद भी विदेशी मामलों एवं कूटनीतिक विषयों पर तिवारी जी के अनुभव का लाभ भारत सरकार को मिलता रहा था। जबलपुर हितकारी कॉलेज जबलपुर के प्रधानाचार्य रहे स्मृतिशेष पं. हर नारायण तिवारी के आत्मज योगेश जी के बड़े भाई पूर्व एयर मार्शल विश्व मोहन तिवारी का इतिहास लेखकों में खासा नाम है। मध्य प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे स्मृति शेष पंडित श्यामाचरण शुक्ल के जमाता योगेश जी की पत्नी श्रीमती उमा तिवारी का नाम मध्य प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में शुमार है। तिवारी दंपति के तीन संतानों में पुत्री अदिति एवं प्रज्ञा तथा पुत्र अनुराग हैं। श्री योगेश जी का यूं चले जाना उनके परिवार में तो शून्यता कर ही गया, देश व समाज ने भी एक कुशल प्रशासक खो दिया है। मंच पत्रिका उनके परिवार के साथ सहानुभूति रखते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह तिवारी जी की आत्मा को शांति व विश्राम प्रदान करें। ॐ शांतिः

संगीत बिना जीवन सूना

आध्यात्मिक ज्ञान और संगीत जुड़वां बच्चे हैं। जिनका जन्म साथ-साथ हुआ है। श्रीमद्भागवत गीता को श्रीकृष्ण ने गाया, बोला नहीं। इसलिए उसका नाम गीता पड़ा। अक्सर लोग सोचते हैं कि गीत और संगीत का आध्यात्म से क्या लेना-देना है। मैं कहूंगा जब आप स्वस्थ होते हो, गुनगुनाते हो। गुनगुनाते नहीं हो तो गुस्सा करते हो। तनावमुक्त मन में ही गुनगुनाहट उठती है। और अगर हमारे वह गीत, जिसे गाने के लिए हम पैदा हुए हैं, पहचान लेते हैं, तो वह ज्ञान है, ध्यान है। शास्त्रीय संगीत हमें ब्रह्माण्ड के साथ, प्रकृति के साथ जोड़ देता है। सातो सुर एक-एक पक्षी-पशु-प्राणी के साथ जुड़े हैं। जैसे 'स' मयूर से, मयूर की आवाज 'स' है। बैल और गाय 'री' ऋषभ। ऐसे ही अज यानी भेड़-बकरी 'ग'। ये हुआ सा रे गा फिर 'म' क्रोंच पक्षी का स्वर है। 'प' यह कोयल का स्वर है। पंचम स्वर में कोयल बोले। और 'ध' धैवत है अश्व यानी घोड़ा। 'नी' के स्वर में है हाथी। सबसे पतला स्वर हाथी का है। तो- सा, रे, ग, म, प, ध, नी, स। ये सुर कैसे निकला है। हर प्राणी केवल एक सुर में गा सकता है। केवल मनुष्य ही सारे स्वरों में गा सकता है। तो ईश्वर की एक देन है संगीत। जिसके जीवन में संगीत नहीं है, बहुत कुछ अधूरा, सूना रह जाता है। संगीत का लक्ष्य ही यही है कि तुम्हें अपने आप में पहुँचा देना, अपनी आत्मा में प्रसन्न कर देना। सुर कैसे निकलता है, उसकी मैकेनिक्स क्या है, उसका विज्ञान क्या है, इसे हमारे ग्रंथों में बहुत सुन्दर तरीके से बताया गया है।

'आत्मा बुद्धा समेव युक्ता' आत्मा बुद्धि के साथ मिलकर 'मनोयुक्ते विभुक्तया' मन के साथ जुड़ जाए 'मन कायाग्नि मादते' मन जो शरीर की अग्नि है, ऊर्जा है उसके साथ 'सजग प्रेरति मारुतं - मारुति सूर्यति चरण मन्द्रम जनयते सुरमी।' एक सुर कैसे पैदा होता है, इसका विज्ञान, इस देश की गरिमा है। इतनी सूक्ष्म दृष्टि से संगीत को कहीं भी नहीं देखा गया।

शास्त्रीय संगीत से आत्मा को एक प्रकार से तृप्ति, ठंडक मिलता है और हमें इस विश्वात्मा से जिद देता है। हमारे देश की यह सम्पत्ति है, गौरव है। आध्यात्म एक हाथ में और संगीत दूसरे हाथ में। ये दोनों लेकर हम साथ चलें।

– श्री श्री रविशंकर (आध्यात्मिक गुरु)

पत्रिका हेतु सहयोग राशि 'संपादक-कान्यकुब्ज मंच' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ोदा की सीबीएस शाखा में IFSC:BARB0KIDKAN में जाकर हमारे खाता संख्या 19640100008067 में जमा कर इसकी सूचना पूरा नाम पता व पिन कोड सहित मोबाइल 09450332385 पर एसएमएस द्वारा या पत्रिका के ईमेल पर दें।

संरक्षक: ₹11000 ● विशिष्ट: ₹5100 ● आजीवन: ₹2100
$200 $100 $40

पत्रिका प्राप्ति स्थान

कानपुर – गुप्ता मैगजीन सेंटर, एलआईसी बिल्डिंग के सामने, फूल बाग चौराहा, कानपुर। मो.-8896229786

- पाण्डेय बुक सेलर, के-ब्लॉक, निकट आरबीआई कॉलोनी, किदवई नगर, कानपुर। मो-9336121757

- कृष्णा फार्म सेंटर, निकट साकेत गेस्ट हाउस, विकास नगर, कानपुर। मो.-9336029994

लखनऊ – शुक्ल मैगजीन सेंटर, हनुमान के निकट, हजरतगंज, लखनऊ। मो.-9473897006

- 1/206, विकास नगर, लखनऊ। मो.-9554096508

- 3/19 सेक्टर-जे, जानकी पुरम, लखनऊ। मो.-9450362385

नोएडा - शुक्ला मैगजीन सैंटर, ब्रह्मपुत्र कॉम्प्लेक्स, सेक्टर 29, नोएडा। मो.-9210135448

दिल्ली – तिवारी ब्रादर्स, 73, एमएम मार्केट, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन-011 23413313-23411764

भोपाल - श्री के.एन. मिश्र, 58, सागर स्टेट कॉलोनी, अयोध्या नगर, भोपाल-462041, मो.-7224882166

इंदौर – श्री दुर्गानारायण तिवारी, 33, बिजासन रोड़, इंदौर-452005, मो.-9827791616

फरीदाबाद - 264, सेक्टर-3, फरीदाबाद 121004, मो. 8800377066

NA

प्रकाश-दिवस की लख-लख बधाईयां

NIRMANIE ASSOCIATES

We are engaged in Business of machinery manufacturing, designing & work simplification Projects.

we believe in Teamwork, through which we have completed various projects within the stipulated time frame.

Ours is a Faridabad, INDIA based Registered Company having well qualified Staff & dedicated work force.

We have multi skilled work force dealing in all sorts of Tool room jobs, Import Substitution, fabrication Work, modification of Machines etc.

Our Most Valuable Customer-

1. M/s Goodyear India Ltd., Ballabgarh, India
2. M/s Whirlpool of India, Faridabad, India
3. M/s Escorts Rly Equipment Division, Faridabad, India
4. M/s South Asia tyres India Pvt. Ltd. Aurangabad, Maharashtra, India
5. M/s Tulip India Pvt. Ltd., U.P., India
6. M/s Balkrishana Industries Ltd., Mumbai (all three plants), India
7. M/s JK Tyre Ltd., Kankroli, Rajasthan, India
8. M/s Ceat Tyre, Bhandup & Nashik, India
9. M/s Birla Tyre Ltd., Orrissa, India
10. M/s JK Tyre Ltd., Banmore, M.P., India
11. M/s Goodyear Thailand Plant, Bangkok,Thailand (OVERSEAS CUSTOMER)
12. M/s Continental Tires, Meerut Plant, UP, India
13. M/s JK Tyre Ltd., Laksar, Haridaar, Uttarakhand, India

J.S. Kabli (Proprietor)

Works : Plot No. 30, Division No. 6,
Wear Well Cycle Industrial Area,
N.I.T. Faridabad -121001
Phone: (O) 0129-4023980, Mob: 9810073980
Email: jasbirskabli@gmail.com, jasbirskabli@airtelmail.com

RNI: 46226/87

मेघदूत
बालों से हो जाये प्यार
Shine & Silky
मेघदूत
सतरीठा
AYURVEDIC
with natural extracts of
AMLA, REETHA & BHRINGRAJ
FOR HAIR FALL, DANDRUFF & SCALP ACNE
Net Vol 300ml
khadi
मेघदूत
Maha Bhrangraj Oil
Headache, mental equilibrium Tension and Hair Protection
Ayurvedic Medicine
(Bhashajya Ratnavali Shastriya Yog)
महा भृंगराज तैल
रूसी–खुश्की, बालों का झड़ना, टूटना, गिरना और दोमुहे बालों की समस्याओं में विशेष गुणकारी औषधि।
+91 9235623142
info@meghdootherbal.com
www.meghdootherbal.com
/meghdootherbal